ISSN 2349-6614

अगस्त 2019

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

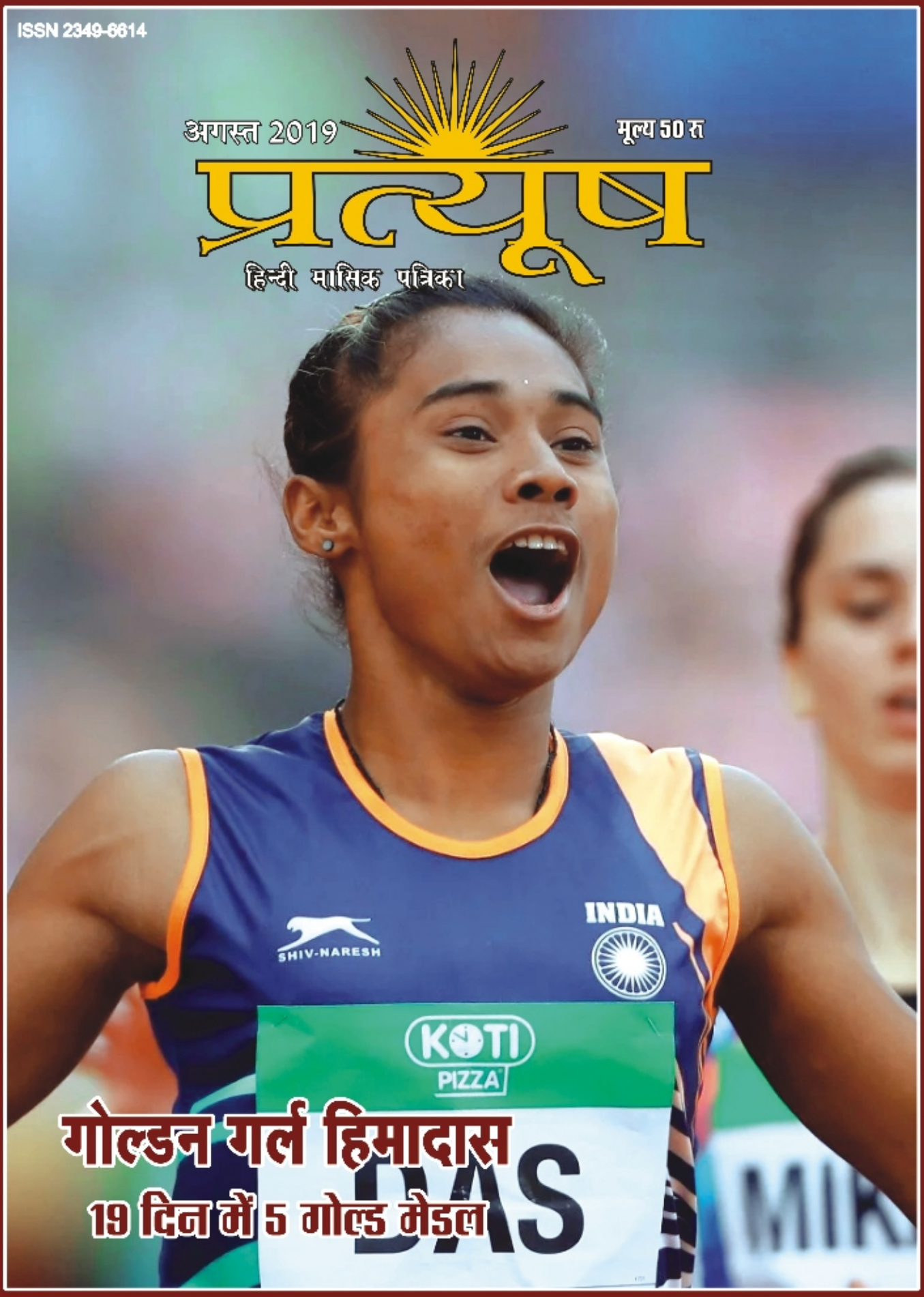

गोल्डन गर्ल हिमादास

19 दिन में 5 गोल्ड मेडल

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 17 अंक 6 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अर्थ-डायग्नोस्टिक्स को सर्वश्रेष्ठ डायग्नोस्टिक्स का अवार्ड

अर्थ डायग्नोस्टिक्स
Meaningful Authentic & Dedicated

स्वास्थ्य मंत्री ने राज्य स्तर पर उच्च क्वालिटी व उत्कृष्ट पेशेंट सर्विस के लिए किया पुरस्कृत

स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री रघु शर्मा, अर्थ डायग्नोस्टिक्स के CEO डॉ. अरविन्दर सिंह को टॉप डायग्नोस्टिक सेंटर का अवार्ड प्रदान करते हुए

क्यों मिला सर्वश्रेष्ठ डायग्नोस्टिक्स का अवार्ड

- उच्च गुणवत्ता रिपोर्ट
- सही इलाज के लिये सटीक डायग्नोसिस
- क्वालीफाइड डॉक्टर्स व पैरामेडिकल टीम
- लेटेस्ट आधुनिकतम मशीनों द्वारा जाँचें
- मरीजों की श्रेष्ठ सेवा व सुविधायें
- AIIMS दिल्ली व Randox, UK से क्वालिटी प्रतिभागी
- उदयपुर का एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय रजिस्टर्ड सेंटर
- मोलिक्यूलर, नेनो व फोटॉन टेक्नोलॉजी द्वारा सूक्ष्मतम जाँचें।
- डिजिटल रिपोर्ट्स

उपलब्ध सुविधाएं

पैथोलोजी जाँचे | डिजिटल एक्स-रे | कलर सोनोग्राफी 3D/4D | ऑटोमेटेड ECG

दक्षिणी राजस्थान की सर्वप्रथम व एकमात्र 3 Tesla MRI व सी.टी. स्कैन

4-सी, एपेक्स चेम्बर, भारतीय लोक कला मण्डल के पीछे, मधुबन, उदयपुर

70733-08880, 70738-18880, 74109-70970, 74109-80980

www.arthdiagnostics.com

पाठकों, सहयोगियों, एवं विज्ञापनदाताओं को
स्वतंत्रता दिवस व रक्षाबंधन की
हार्दिक शुभकामनाएं

अगस्त
2019
वर्ष 17, अंक 6

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू.
वार्षिक 600 रू.

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन, चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : ओम शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग देवावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राव
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है,
इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
प्रकाशक-संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharma
''रक्षाबंधन'', धानमंडी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

07 सत्यमेव जयते

कुलभूषण की फांसी पर रोक

18 परम्परा

विश्वास और प्रेम का रक्षाबंधन

33 लोकानुरंजन

राजस्थान के मशहूर पशु मेले

35 राज्य/राजनीति

टीएमसी का केन्द्र से टकराव राज्य हित में नहीं

38 जीवन-सूत्र

कान्हा का प्रेमराग

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संपादक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

Happy Independence Day

MOUNT VIEW SCHOOL

A Co- Educational English Medium School

1-Shreenath Nagar,
Near Transport Nagar,
Airport Road, Bedwas,
Udaipur-313001,
Rajasthan, INDIA

Web: www.mountviewschool.com, e-mail: mountviewschool2539@gmail.com
Contact Us: 0294 2493599, 098285 89099

Happy Independence Day

KHOKHAWAT
TENT & DECORATROS

High Class Tent, Light Flower & Catering Services

(O) 0294-2523168 (R) 0294-2421129 (M) 09352502843

166, Bhamashah Marg, Khokhawat Building, Udaipur - 313 001 (Raj.)

राहुल के विकल्प की तलाश

कांग्रेस में अध्यक्ष पद के लिए राहुल गांधी के विकल्प पर इन पंक्तियों के लिखे जाने(22 जुलाई) तक सहमति नहीं बन पाना एक बड़े राष्ट्रीय दल के तौर पर आश्चर्यजनक है। लोकसभा चुनाव में पार्टी की करारी हार के बाद जून में अध्यक्ष पद से इस्तीफे की पेशकश कर चुके गांधी ने एकाधिक बार पार्टी के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया है कि वे अपने फैसले पर दोबारा विचार करने को बिल्कुल तैयार नहीं है। इसके बावजूद पार्टी आज दिन तक उनका सर्वमान्य विकल्प नहीं ढूंढ पाई है। पार्टी के ज्यादातर नेता राहुल के पद पर बने रहने की इनकारी के बाद भी उनकी हिमायत कर रहे हैं इनमें वे फुंके कारतूस ज़्यादा मुखर हैं, जो पार्टी को इस हालत में पहुंचाने के लिए राहुल गांधी से कहीं ज़्यादा जिम्मेदार हैं और जिन्होंने पार्टी से हमेशा लिया ही लिया है, दिया बहुत कम है। ऐसे हालातों में सोनिया गांधी भी मौन हैं। कुछ नेता यह मान रहे हैं कि कांग्रेस की कमान गांधी परिवार के हाथों से छूटने पर पार्टी में बिखराव की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन उनके पास इस बात का जवाब नहीं है कि 134 साल पुरानी पार्टी में नेतृत्व के इस संकट की वजह क्या है और जिम्मेदार कौन हैं ? राहुल गांधी ने इसके जिम्मेदारों को आगे आकर अपनी गलतियों को स्वीकार करने को कहा भी था, लेकिन वे अपनी जगह से टस से मस होते दिखाई नहीं देते। जिन नेताओं के नाम नेतृत्व के लिए चर्चा में हैं, उन पर सर्वसम्मति कायम नहीं हो रही है अथवा कायम नहीं होने दी जा रही है ? इसका जवाब कांग्रेस के उन पुराने खिलाड़ियों के पास ही हो सकता है, जिनके पास जन संघर्षों से हासिल कोई पूंजी नहीं है, सिवाय 10 जनपथ की छतरी के। कांग्रेस के सामने ऐसे संकट पहले भी आए हैं, जो खुद उसके नेताओं ने पैदा किए, देश ने उन नेताओं का हाशिए पर हश्र भी देखा और पार्टी को आसमान तक फिर से छलांग लगाते भी देखा।

राहुल गांधी ने अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए इस्तीफा दिया है। उन्होंने लोकसभा चुनाव के दौरान पार्टी की नीतियों और जिम्मेदार नेताओं की भूमिका को गहराई से जाना और समझा है। उनके मन में कहीं न कहीं यह भाव भी ज़रूर है कि पार्टी की आगे की यात्रा के लिए फिलहाल उन्हें नेतृत्व किसी और को सौंप कर सहयात्री बन जाना चाहिए। लेकिन संकट यह है कि नेतृत्व संभाले कौन ? इसमें कोई शक नहीं कि प्रियंका गांधी विकल्प हो सकती हैं और इससे पार्टी में बिखराव की संभावनाओं पर भी विराम लग सकता है। लेकिन क्या वे जनता में कांग्रेस के प्रति ऐसी उत्साहवर्धक स्थितियां पैदा कर पाएंगी, जो भाजपा के रथ को रोक सके ? क्या वे मोदी के 'नामदार-कामदार' नैरेटिव का तोड़ बन पाएंगी ? राहुल गांधी के इस्तीफे के बाद प्रियंका गांधी की ताजपोशी क्या कुछ राज्यों के आसन्न विधानसभा चुनावों के लिए ऑक्सीजन बन पाएगी ? भाई के इस्तीफे के बाद बहन का यह दायित्व लेने का संदेश क्या अन्यथा नहीं होगा ? निश्चय ही इन तमाम बातों को लेकर कांग्रेस के सामने संकट तो है, लेकिन इसे ज्यादा लम्बा खींचना भी उसके लिए घातक है। कांग्रेस के नेतृत्वविहीन होने से गोवा और कर्नाटक में जो हालात पैदा हुए हैं, वे सबके सामने हैं, जो यह बताने के लिए काफी है कि नेतृत्व की कमजोरी पार्टी को भी कमजोर कर देती है। कांग्रेस के सूत्रों की मानें तो अन्ततोगत्वा राहुल गांधी को मना लिया जाएगा और उनके तमाम शिकवे-शिकायतों पर पार्टी गंभीरता से मंथन कर नया संगठनात्मक ढांचा तैयार करेगी। कांग्रेस में नेहरू-गांधी परिवार की प्रतिष्ठा हमेशा रही है और रहेगी। इस परिवार के योगदान को कमतर कर पार्टी अपना वजूद कायम नहीं रख सकती। यूपी-बिहार व पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में अगले दो-तीन साल में होने वाले चुनाव के मुकाबले में यदि कांग्रेस को बने रहना है, तो मौजूदा हालात को देखते हुए उसके पास राहुल गांधी के अलावा कोई विकल्प दूर तक दिखाई नहीं देता।

जहां तक राहुल गांधी के मान-मनौव्वल का सवाल है, उन्होंने त्याग पत्र के साथ चार पृष्ठ का जो लम्बा खुला पत्र जारी किया, उसमें उल्लेखित बातों को पार्टी नेताओं द्वारा अक्षरश: स्वीकार कर उनके अनुरूप अपनी हैसियत को स्वीकार करना होगा। उनके पत्र में कई ऐसी बातें हैं, जिनसे यह समझ पाना कठिन नहीं है कि उन्हें पार्टी से किस तरह की अपेक्षाएं थीं और हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यही कि 'पार्टी के बड़े नेताओं को हार की जिम्मेदारी लेकर 'त्याग' करना चाहिए। त्याग किए बिना भाजपा की विचारधारा का मुकाबला नहीं किया जा सकता। अन्य बड़े नेताओं को जिम्मेदार ठहराने और इस्तीफा मांगने से पहले वे बतौर अध्यक्ष ऐसा महसूस करते हैं कि, स्वयं उन्हें ऐसा करना चाहिए। इसलिए वे त्याग पत्र के जरिए पूर्व घोषित अपने फैसले पर अडिग हैं।'

इस चिट्ठी के भाव और उसकी भाषा ही यह स्पष्ट कर देती है कि वे कतिपय बड़े नेताओं की भूमिका से असहज और असहमत हैं। यदि इन नेताओं की ओर से उन्हें पार्टी में आमूल-चूल परिवर्तन के साथ पूर्ण सहयोग के लिए आश्वस्त किया जाता है, तो शायद वे पुन: नेतृत्व की बागडोर थामना स्वीकार कर लें।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

नरेश साहू
9785366114
9251126826

चेतन साहू
9782031717

धारा शंकर मसाला एण्ड फ्लोर मिल्स

धारा शंकर ट्रेडर्स

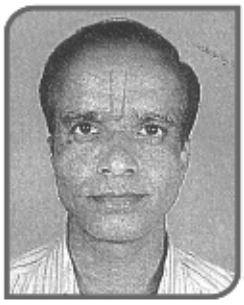

धारा शंकर साहू

हमारे यहाँ पर मिर्ची, हल्दी, धनिया, जीरा, मैथी, गरम मसाला, जौ, कपास, बाजरा आदि की पिसाई की जाती है। पीसे हुए मसाले हर समय तैयार मिलते हैं।

344, तेल बाजार, महादेव मन्दिर के पास, धानमण्डी, उदयपुर

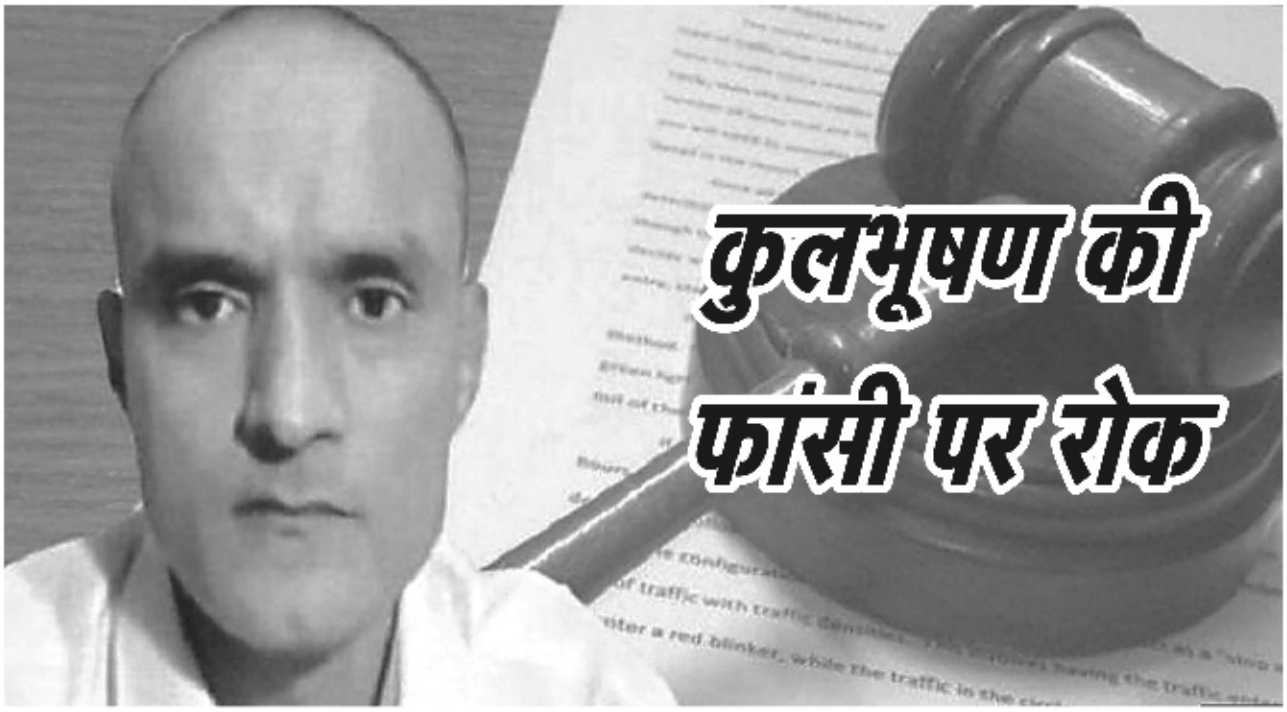

कुलभूषण की फांसी पर रोक

◆ अन्तर्राष्ट्रीय अदालत ने भारत की दलीलें मानी, पाकिस्तन को बड़ा झटका
◆ जाधव की सजा पर पुनर्विचार का आदेश, राजनयिक मदद भी मिलेगी

– गौरव शर्मा

कुलभूषण जाधव पर अंतरराष्ट्रीय अदालत के फैसले से पाकिस्तान के दुष्प्रचार का पर्दाफाश हो गया है। पाकिस्तान ने जाधव के मामले में सही प्रक्रिया का पालन नहीं किया और प्रोपेगेंडा का सहारा लिया।

अंतरराष्ट्रीय अदालत के आदेश के बाद पाकिस्तान को सामान्य कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। उसे काउंसलर एक्सेस सही तरीके से देनी होगी। अगर वह सैन्य ट्रिब्यूनल में मामला चलाता है तो वहां भी पूरी सामान्य अदालतों की प्रक्रिया का पालन करना होगा। अन्यथा पूरा मामला सामान्य न्यायालय में शिफ्ट करना पड़ सकता है। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय न्यायालय का फैसला मानने के लिए बाध्य है। अभी तक सब कुछ उन्होंने बहुत गुपचुप तरीके से किया था। लेकिन अब सारे तथ्य सामान्य तरीके से सामने रखने होंगे।

पड़ा अलग थलग : पाकिस्तान के लिए यह बड़ा संदेश है कि वह एक सामान्य देश की तरह बर्ताव करे। फैसले से साबित हो गया कि वह वियना समझौते का पालन नहीं कर रहा था। पाकिस्तान के सैन्य ट्रिब्यूनल की प्रक्रिया में काफी खामियां पाई गई हैं। भारत का अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में जाने का फैसला सही साबित हुआ। यह फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तानी जज को छोड़कर सबने एकमत से फैसला दिया। पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ी किरकिरी वाली बात यह रही कि भारत के साथ हर विवादित मसले पर उसका साथ देने वाले चीन ने भी इस मामले में उसका साथ नहीं देकर भारत का साथ दिया। यानी पाकिस्तान का पक्ष पूरी तरह से इस मामले में अलग-थलग पड़ गया।

प्रक्रिया का पालन नहीं : हमारे यहां कसाब जैसे आतंकी के मामले में भी पूरी तरह से प्रक्रिया का पालन किया गया जबकि वह कई लोगों की हत्या का दोषी था। लेकिन जाधव के मामले में मानवाधिकारों की अवहेलना की गई। पाकिस्तान ने जानबूझकर भारत के खिलाफ दुष्प्रचार का प्रयास किया। अब सामान्य प्रक्रिया के तहत कोर्ट में सभी तरह की दलीलें पेश की जाएगी। पाकिस्तान आईसीजे का फैसला मानने के लिए बाध्य होगा।

इस मामले में भारत के पक्ष की पैरवी करने वाले वकील हरीश साल्वे के मुताबिक यदि पाकिस्तान फैसले की अनदेखी करता है तो हमारे पास इस मामले को संयुक्त राष्ट्र में उठाने का विकल्प है। हालांकि पाकिस्तान फैसले की अनदेखी का जोखिम उठाएगा नहीं। साल्वे भारत के सबसे महंगे वकीलों में शुमार हैं, लेकिन इस केस को लड़ने की फीस मात्र एक रुपया लेकर उन्होंने दुनिया के सामने भारतीयता और देशभक्ति की एक मिसाल पेश की। वे 1999 से 2002 के बीच देश के सॉलिसिटर जनरल भी रह चुके हैं। जबकि पाकिस्तानी वकील ने देश की खस्ता आर्थिक हालत में भी अपनी सरकार से पैरवी के लिए 20 करोड़ रुपये वसूले।

अपने 42 पेज के फैसले में कोर्ट ने तीन अहम बातें कही हैं – जाधव की फांसी पर रोक लगाते हुए पाकिस्तान अपने फैसले पर पुनर्विचार करें, भारत को जाधव तक राजनयिक पहुंच दे व पाकिस्तान वियना सम्मेलन के उल्लंघन का दोषी है। अदालत ने कहा, जाधव की फांसी की सजा पर तब तक रोक रहेगी, जब तक पाकिस्तान प्रभावी तौर पर इस पर पुनर्विचार नहीं करता।

आईसीजे के 16 जजों में से 15 ने भारत के पक्ष में फैसला दिया। 'प्रेसीडेंट ऑफ द कोर्ट' न्यायाधीश अब्दुलकावी अहमद यूसुफ ने नीदरलैंड के द हेग स्थित पीस पैलेस में 17 जुलाई को भारतीय समयानुसार शाम 6.30 बजे फैसला पढ़कर सुनाया। पांच महीने पहले न्यायाधीश यूसुफ के नेतृत्व में आईसीजे के जजों ने भारत और पाकिस्तान की मौखिक दलीलें सुनने के बाद 21 फरवरी को आदेश सुरक्षित रख लिया था। मुकदमे की सुनवाई पूरी होने में दो साल और दो महीने का वक्त लगा। भारतीय नौसेना के रिटायर कमांडर कुलभूषण जाधव पाकिस्तान की जेल में बंद हैं। जाधव को पाकिस्तान की सैन्य अदालत ने जासूसी और आतंकवादी कार्रवाई के आरोपों में फांसी की सजा सुनाई थी, जिसके खिलाफ भारत ने मई 2017 में अंतरराष्ट्रीय अदालत का दरवाजा खटखटाया था।

हरीश साल्वे

आईसीजे में न्यायाधीश अब्दुलकावी अहमद यूसुफ ने सभी 16 जजों की मौजूदगी में फैसला पढ़ा। पाकिस्तान के नामित तदर्थ जज तसद्दुद जिलानी ने विरोध जताया। अपने फैसले में आईसीजे के जजों ने भारत के अधिकांश तर्कों को मान लिया।

क्या है वियना संधि

वियना संधि के तहत राजनयिकों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है। इसके आधार पर ही राजनयिकों की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय कानूनों का प्रावधान किया गया। इस संधि के तहत कुल 54 आर्टिकल हैं। फरवरी 2017 में इस संधि पर दस्तखत कर 191 देशों ने इसके पालन के लिए अपनी सहमति जताई थी। वर्ष 1961 में वियना में हुए सम्मेलन में यह संधि हुई थी।

कौन है कुलभूषण जाधव

कुलभूषण जाधव का 16 अप्रैल 1970 में महाराष्ट्र के सांगली में जन्म हुआ था। वह भारतीय नौसेना के पूर्व अधिकारी रहे हैं। कुलभूषण के पिता सुधीर जाधव मुंबई पुलिस में बतौर एसपी रैंक पर रिटायर हुए। सेवानिवृत्ति के बाद कुलभूषण के पिता सुधीर जाधव ने डिलाईल रोड का आधिकारिक घर छोड़ दिया और पवई में फ्लैट लेकर रहने लगे।

क्या है आईसीजे

अंतराष्ट्रीय न्यायालय(आईसीजे) को संयुक्त राष्ट्र के घोषणा पत्र के तहत जून 1945 में स्थापित किया गया। अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए 18 अप्रैल, 1946 से काम करना शुरू किया था। यह संयुक्त राष्ट्र का प्रधान न्यायिक अंग है। आइसीजे का मुख्यालय नीदरलैंड्स स्थित हेग के शांति पैलेस में है। इसका अधिवेशन छुट्टियों को छोड़कर हमेशा चालू रहता है।

पाक की दूसरी हार

10 अगस्त 1999 को वायुसेना ने गुजरात के कच्छ में पाकिस्तानी नौसेना के विमान अटलांटिक को मार गिराया था। इसमें सवार सभी 16 सैनिकों की मौत हो गई थी। पाकिस्तान का दावा था कि विमान को उसके एयरस्पेस में गिराया गया। उसने इस मामले में भारत से 6 करोड़ डॉलर मुआवजा मांगा था। आईसीजे को 16 जजों की पीठ ने 21 जून 2000 को 14-2 से पाकिस्तान के दावे को खारिज कर दिया था। इस तरह आइसीजे में यह पाकिस्तान की दूसरी बड़ी हार है।

दस अहम पड़ाव

➤ गिरफ्तारी की

3 मार्च 2016 : कुलभूषण जाधव की गिरफ्तारी हुई।

➤ जासूस बताया

24 मार्च, 2016 : पाक सेना ने जाधव को जासूस बताया और बलूचिस्तान से गिरफ्तारी बताई।

➤ भारत ने दावे को ठुकराया

25 मार्च, 2016 : पाक ने भारत को जाधव के बारे में बताया। भारत ने उसके दावे को ठुकरा दिया।

➤ नौसेना के पूर्व अफसर

26 मार्च, 2016 : भारत ने जाधव को निर्दोष बताते हुए कहा कि उनके खिलाफ कोई सबूत नहीं है। भारत ने दावा किया कि वे नौसेना के एक पूर्व अफसर हैं, उनका ईरान में कार्गो का व्यापार है। पाकिस्तान ने उन्हें वहीं से गिरफ्तार किया और गिरफ्तारी बलूचिस्तान से बताई।

➤ मौत की सजा सुनाई

10 अप्रैल 2017 : पाक सैन्य अदालत ने जाधव को मौत की सजा सुनाई। भारत ने चेतावनी देते हुए इसे पूर्व निर्धारित हत्या बताया।

➤ जाधव को निर्दोष बताया

11 अप्रैल, 2017 : विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने संसद के दोनों सदनों में बयान देते हुए कहा कि जाधव को न्याय दिलाने के लिए भारत हर मुमकिन कोशिश करेगा।

➤ अपील की गई

8 मई, 2017 : मौत की सजा के खिलाफ भारत ने नीदरलैंड्स के हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्याय अदालत में अपील की। फिर 9 मई को आईसीजे ने जाधव की सजा पर रोक लगा दी।

➤ अंतिम फैसले को टाल दिया

18 मई, 2017 : आईसीजे ने पाकिस्तान को जाधव की सजा पर रोक लगाते हुए अपने अंतिम फैसले को टाल दिया। पाकिस्तान ने कहा कि आईसीजे के आदेश से जाधव केस में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

➤ पत्नी और मां ने मुलाकात की

25 दिसम्बर, 2017 : जाधव की पत्नी और मां ने जाकर उनसे मुलाकात की।

➤ सजा निलम्बित रहेगी

17 जुलाई, 2019 : कुलभूषण की फांसी की सजा निलंबित रहेगी।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शंकरलाल मेनारिया
संस्थापक/संचालक

नितिन मेनारिया

बाल विनय मन्दिर
उच्च माध्यमिक विद्यालय
विनय हॉस्टल

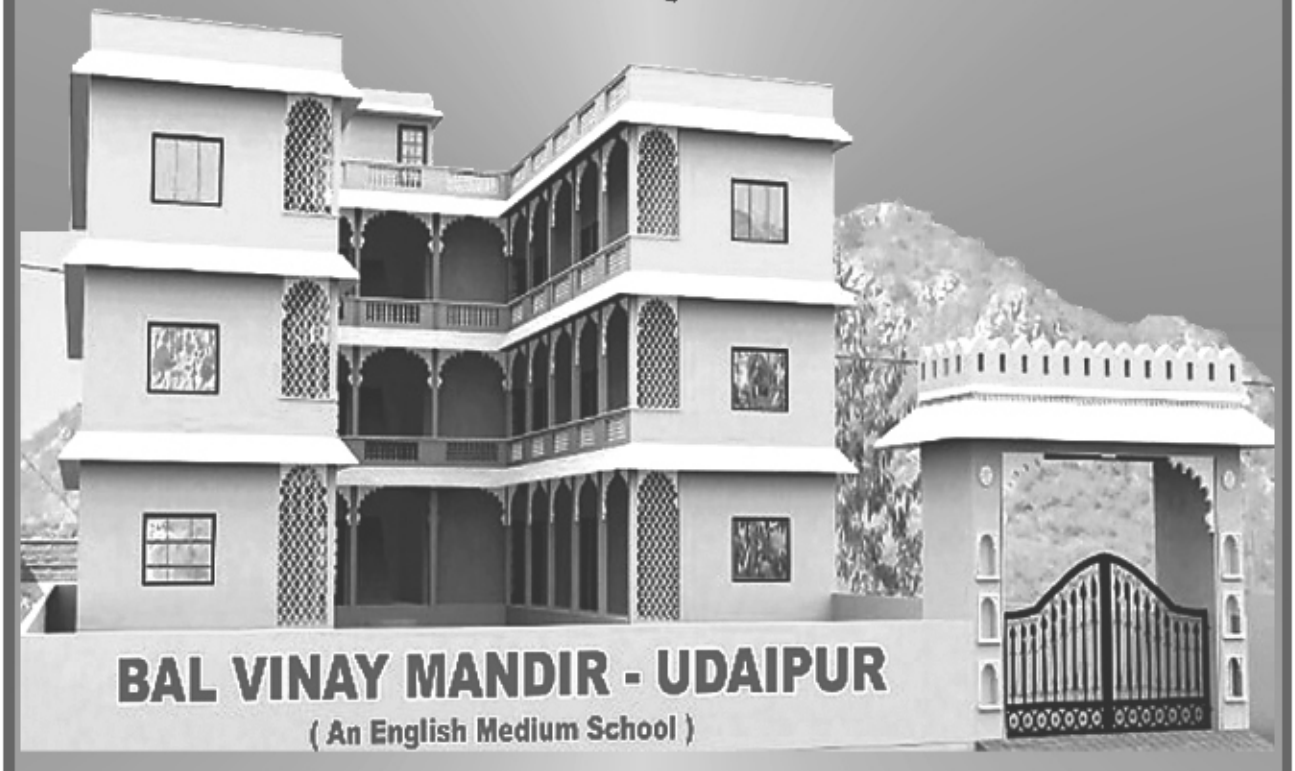

J-11, हरिदास जी की मगरी, उदयपुर-313004

0294-2430388, 5130196, 9414164388

Happy Independence Day

Jayant Lal Jain

Jayant

Builders & Developers

Near Railway Crossing Savina, Udaipur (Raj.)

Mobile : 94136-11111, Tel. : 0294-2483194 (O)

दुनिया की धरोहर बना जयपुर का रक्षा कवच

जयपुर की चारदीवारी (परकोटा) का यूनेस्को की वर्ल्ड हैरिटेज सूची में शामिल होना गर्व की बात है। इससे जयपुर के घरेलू व अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी और रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

– अमित शर्मा

पूर्व का पेरिस कहलाए जाने वाले राजस्थान प्रदेश की गुलाबी राजधानी जयपुर का ऐतिहासिक पराकोटा अब विश्व विरासत में शामिल हो गया है। देश में अहमदाबाद के बाद यह दूसरा शहर है, जिसे यूनेस्कों की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है। अजरबैजान की राजधानी बाकू में 6 जुलाई को यूनेस्को की वर्ल्ड हैरिटेज कमेटी के 43वें अधिवेशन में राजस्थान को यह सम्मान मिला। जिसकी घोषणा कमेटी के चेयरपर्सन अब्दुल फास गारे ने की। पिछले साल सितम्बर में यूनेस्को के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के सदस्यों ने जयपुर का दौरा किया था। इस दौरान वॉल सिटी को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने का उनके सामने दावा पेश किया गया। 6 जुलाई की बैठक के पहले ही अधिकारियों का एक दल जयपुर के इस दावे की पुख्तागी के लिए अजरबैजान पहुंच गया। जिसने लगातार पांच दिनों तक संगठन के सदस्य राष्ट्रों से भेंट कर अपने पक्ष में माहौल बनाया। वे अपने साथ सम्बन्धित दस्तावेजों के साथ परकोटे के महत्व, खूबसूरती, वैज्ञानिकता आदि की शॉर्ट मूवी व फोटोग्राफ्स भी लेकर गए।

9 मील क्षेत्र में विस्तार : जयपुर की यह शहरपनाह करीब 9 मील क्षेत्र में फैली हुई है। विश्व धरोहर में शामिल होने से अब इसे विशेष पहचान मिलेगी और इसकी सार-संभाल पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। इसे पहले ही प्रयास में मान्यता नहीं मिली है। इस सम्बन्ध में लम्बे समय से प्रयत्न हो रहे थे। कई बार परकोटे के दावे को दरकिनार किया गया, लेकिन राज्य सरकार की प्रभावी पैरवी के चलते जयपुर को यह सौगात मिल ही गई।

चेयरपर्सन गारे ने ज्यों ही जयपुर का नाम विश्व विरासत सूची में शामिल होने की घोषणा की, अजरबैजान में मौजूद भारतीय राजदूत, जयपुर नगर निगम आयुक्त विजयपाल सिंह और भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने तिरंगा लहराकर खुशी का इजहार किया। परकोटे को विश्व विरासत सूची में शामिल करने का मुद्दा ब्राजील ने उठाया, जिस पर करीब घण्टे भर तक चर्चा हुई। इसके बाद वोटिंग में इंडोनेशिया, तंजानिया, युगांडा, तस्मानिया, किर्गिस्तान, क्यूबा, कुवैत, जिम्बाब्वे सहित अन्य देशों ने भारत के पक्ष में मतदान किया, जबकि नॉर्वे, हंगरी, स्पेन और ऑस्ट्रेलिया ने वोट नहीं दिया। बहरीन तटस्थ रहा।

कंगूरेदार परकोटा

18 नवम्बर 1727 को जयपुर की नींव रखने के बाद वास्तुविद् विद्याधर की योजना के अनुरूप समतल जमीन पर बने सिटी पैलेस और प्रजा की सुरक्षा के लिए परकोटे का निर्माण कराया गया। जिस पर सेना के घुड़सवार जवान संगीनों के साथ रात-दिन पहरा देते थे। परकोटे में बुर्जें बनाई गईं, जिनमें सैनिक छावनी कायम की गई। बड़ी बुर्ज पर बड़ी व छोटी बुर्जियों पर छोटी तोपें तैनात थी।

बुर्ज के बीच में तोप को चारों तरफ घुमाने के लिए गोलाकार चबूतरे बनाए गए। शत्रु पर गोलीबारी के लिए मोर्चों के मोखे बनाए गए, जिनमें बंदूक की नाल रख कर दुश्मन पर वार किया जा सके। सवाई राम सिंह द्वितीय ने रेजीडेंट सर्जन डॉ. टी. एच. हेंडले के सुझाव पर सफेद रंग के परकोटे पर गुलाबी रंग करवाया। बाहर से आने वालों को चूना पत्थर से बना यह परकोटा गुलाबी पत्थर से बनी दीवार जैसा दिखाई देता है।

वर्ष 1872 से 1874 व 1942 से 1943 के बीच रियासत के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के माध्यम से परकोटे का सुधार कराया, जिस पर 32 हजार 749 रुपये खर्च हुए थे। चारों तरफ बने परकोटे के अलावा आयताकार सीमा में निर्मित राजमहलों की सुरक्षा की दृष्टि से दूसरा परकोटा बनाकर दोहरी सुरक्षा सुनिश्चित की गई। परकोटे में सप्त ऋषि नक्षत्र मंडल और सूर्य भगवान के रथ के सात घोड़ों की तर्ज पर सात दरवाजे बनाए गए। अन्दर के परकोटे में हींदा मीणा की मोरी व श्रीजी की मोरी के नाम से छोटे दरवाजे मोरी के नाम से मशहूर हैं। सूर्य ग्रह के सामने सूरजपोल और चन्द्र के सामने चांदपोल दरवाजा बना। ध्रुव तारे के सामने ध्रुवपोल बना, जो जोरावर सिंह दरवाजा के नाम से भी जाना जाता है।

गंगा की स्मृति में गंगापोल, अजमेरी गेट पर कृष्ण के नाम पर किशनपोल और इसके आगे सांगानेरी गेट का नाम रामपोल और घाटगेट का नाम शिवपोल है। न्यू कॉलोनी के पास तोपखाना का रास्ता से जुड़ी तोपखाना की बुर्ज और घाटगेट और पश्चिम में हजारी बुर्ज सैनिक छावनी थी। सर मिर्जा इस्माइल ने चौड़ा रास्ता के परकोटे को तोड़कर न्यूगेट के नाम से आठवां दरवाजा बनवाया।

न्यू गेट के साथ ही न्यू कॉलोनी में गंदी मोरी के पास परकोटे को तोड़कर सिंहद्वार बनाया गया। आजादी के पहले तक परकोटे पर सैनिकों का कड़ा पहरा रहता और दरवाजे रात को बंद हो जाते थे। दरवाजों पर घंटे बाजकर शहरवासियों को समय की सूचना दी जाती। सवाई मानसिंह द्वितीय के समय रात को रेल से आने वाले यात्रियों के लिए 1923 में पहली बार चांदपोल दरवाजे को रात में खोला गया।

जयपुर संस्कृति और वीरता से जुड़ा शहर है। सुंदर और ऊर्जावान, जयपुर का अतिथि सत्कार सबको लुभाता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि इस शहर को यूनेस्को की विरासत स्थल सूची में शामिल किया गया है।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

जयपुर शहर का विश्व विरासत सूची में शामिल होना न केवल प्रदेश के लिए गौरव की बात है, बल्कि इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। यहां आधारभूत संरचना के विकास से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी प्रगति मिलेगी।

- अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

जयपुर के खोए आकर्षण को लौटाने के लिए हमारी सरकार ने प्रयास किए थे। कई प्रोजेक्ट ओल्ड सिटी इल्यूमिनेशन प्रोजेक्ट, म्यूजियम ऑफ लेगासीज लॉन्च किया था। भूमिगत संग्रहालय भारत में अपनी तरह का एक खास संग्रहालय है।

- वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री

ये मिलेगा फायदा

- विश्व पर्यटन मानचित्र पर जयपुर की पहचान और बढ़ेगी। हमारी सरकार भी सुविधाओं पर जोर देगी।
- ऐसे पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा जो केवल यूनेस्को हेरिटेज साइट ही घूमना पसंद करते हैं।
- व्यापार बढ़ेगा और परम्परागत कला को बढ़ावा मिलेगा।
- पर्यटक सीजन में प्रतिदिन 50 हजार सैलानी गुलाबी नगरी आते हैं, अब यह संख्या डेढ़ गुणा होने का अनुमान है।
- विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी इजाफा होगा। पर्यटन विभाग लम्बे समय से विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने का प्रयास कर रहा था।

विश्व धरोहर में देश, दुनिया और राजस्थान

128 स्मारक शामिल है दुनिया में

38 स्मारक हैं इसमें भारत के (इसमें 30 सांस्कृतिक स्मारक, 7 राष्ट्रीय उद्यान व 1 मिश्रित)

05 स्मारक व वॉलसिटी हैं अब राजस्थान के (4 सांस्कृतिक स्मारक, 1 राष्ट्रीय उद्यान)

राजस्थान के ये हैं शामिल...

1983	2007	2010	2013	2019
में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	में रेडफोर्ट कॉम्पलेक्स	में जंतर-मंतर हुआ शामिल	में हिल्स फोर्ट ऑफ राजस्थान	जयपुर शहर (परकोटा)

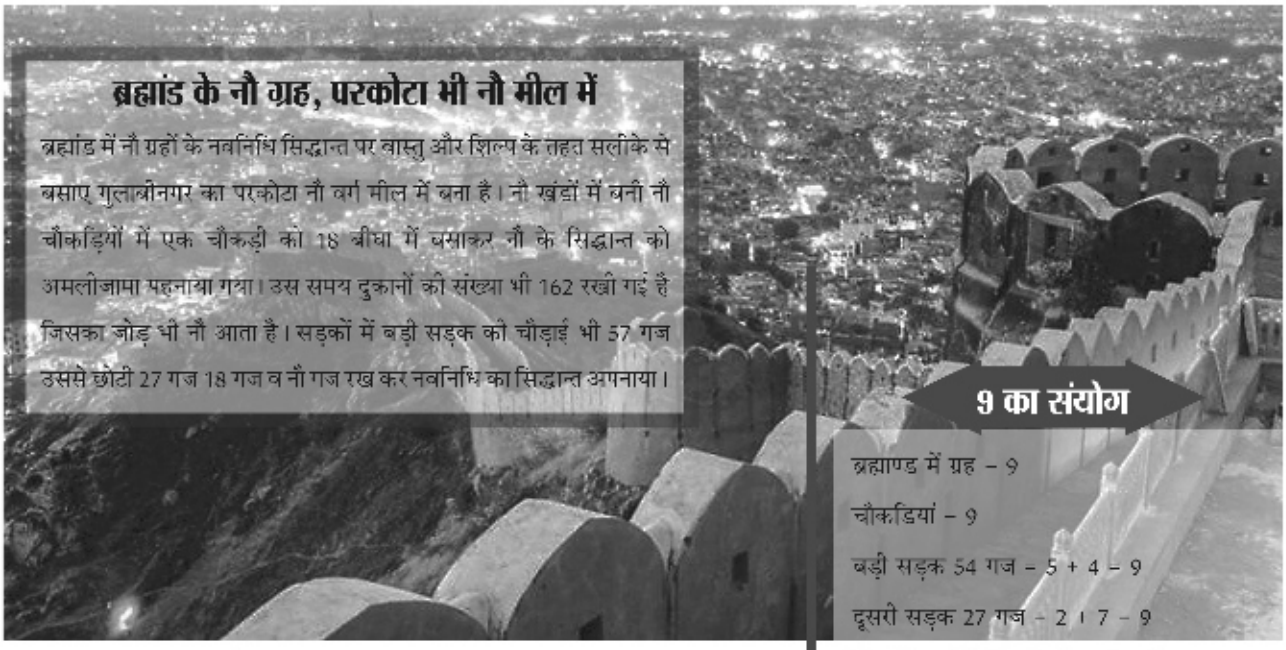

ब्रह्मांड के नौ ग्रह, परकोटा भी नौ मील में

ब्रह्मांड में नौ ग्रहों के नवनिधि सिद्धान्त पर वास्तु और शिल्प के तहत सलीके से बसाए गुलाबीनगर का परकोटा नौ वर्ग मील में बना है। नौ खंडों में बनी नौ चौकड़ियों में एक चौकड़ी को 18 बीघा में बसाकर नौ के सिद्धान्त को अमलीजामा पहनाया गया। उस समय दुकानों की संख्या भी 162 रखी गई है जिसका जोड़ भी नौ आता है। सड़कों में बड़ी सड़क की चौड़ाई भी 57 गज उससे छोटी 27 गज 18 गज व नौ गज रख कर नवनिधि का सिद्धान्त अपनाया।

9 का संयोग

ब्रह्माण्ड में ग्रह – 9

चौकडियां – 9

बड़ी सड़क 54 गज – 5 + 4 – 9

दूसरी सड़क 27 गज – 2 + 7 – 9

तीसरी सड़क 18 गज – 1 + 8 – 9

जोड़ 9 गुणा 7 = 63 यानी = 6 + 3 = 9

स्थापना दिवस 18 नवम्बर यानी = 1 – 8 = 9

दुकानों की संख्या 162 यानी 1 + 6 +2 = 9

चौकड़ी 18 बीघा में यानी 1 + 8 – 9

देश का पहला मास्टर प्लान

परकोटा को बसाते समय सड़कों से लेकर मकानों की एकरूपता का विशेष ध्यान रखा गया है। निर्माण में गलियों पर भी ध्यान दिया गया है। यही कारण था कि परकोटा की गली किसी बड़ी सड़क से जाकर मिलती है। यह भारत का पहला मास्टर प्लान साबित हुआ है। सम्पूर्ण नगर की रूपरेखा पहले से तैयार करने का तरीका किसी भी नगर निर्माण में काम में नहीं लिया गया।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेश जैन

ललित जैन

मेसर्स धुलचन्द कुरीचन्द

(परसाद वाले)

शक्कर, गुड़, सींगदाना, मखाना के थोक विक्रेता

8 जी 8, कृषि उपज मण्डी यार्ड, उदयपुर - 313 002 (राज.)

(सन्तानोत्पत्ति में बाधक योग-2)

मातृ-पितृ शाप से संतान हानि

सनातन हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म का सिद्धांत है। प्रत्येक जीवात्मा अपने पूर्व कर्मानुसार योनि में जन्म लेती है। उसके जन्म के समय आकाश में ग्रह-नक्षत्रों की जो स्थिति होती है, उसी मानचित्र के अनुसार जीव का नया जीवन निर्धारित होता है। मानव योनि में जन्म लेने पर ज्योतिष शास्त्र उस आकाशीय मानचित्र को जन्मांक या कुण्डली का नाम देता है। इसी के आधार पर ***ज्योतिर्विद् पं. दयानंद शास्त्री*** *के एक महत्वपूर्ण आलेख का प्रकाशन पिछले अंक से आरंभ किया गया है। जिसमें सन्तानोत्पत्ति में बाधक योग पर प्रकाश डाला जा रहा है। प्रस्तुत अंक में वे गतांक से आगे मातृ-पितृ दोष से होने वाली सन्तान हानि के बारे में जानकारी दे रहे हैं।*

मातृशाप से संतान हानि

मातृशाप या मातृदोष से भी संतान हानि होती है। पंचम भाव में कर्क राशि हो और चंद्रमा भी नीचगत या पाप मध्य हो और चौथे और पांचवें भाव में पाप ग्रह हों। एकादश स्थान में शनि हो, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो, और पंचम में नीचगत चंद्रमा हो। पंचमेश छठे, आठवें या 12वे में हो, लग्नेश नीचगत हो और चंद्रमा पापयुक्त हो। पंचमेश छठे, आठवें या 12वें में हो, चंद्रमा पाप नवांश में हो और पहले और पांचवें भावों में पाप ग्रह हों। पंचम में कर्क राशि हो, चंद्रमा शनि, मंगल या राहु से युक्त हो और पांचवें या नौवें भाव में उक्त चंद्रमा हो। पंचम में मंगल की राशि हो तथा मंगल, शनि और राहु एक साथ हों, पहले या पांचवें भाव में चंद्र और सूर्य हों। पहला व पांचवां भावेश षष्ठ में हों, चतुर्थेश अष्टम में हो और आठवां व 10वां भावेश लग्न में हों। छठा व आठवां भावेश लग्न में हों, चतुर्थेश 12वें में हो, पंचम में चंद्र और गुरु पापयुक्त हों। लग्न पाप ग्रहों के मध्य हो, क्षीण चंद्रमा सप्तम में हो तथा राहु व शनि चौथे या पांचवें भाव में हों। अष्टमेश पंचम में हों, पंचमेश अष्टम में हो और चंद्रमा व चतुर्थेश छठे, आठवें या 12वें में हों। कर्क लग्न में मंगल और राहु साथ हों और चंद्रमा और शनि पंचम में हों। जब लग्न या पंचम या अष्टम या द्वादश में मंगल, राहु, सूर्य, शनि किसी भी प्रकार से हों। पहला और चौथा भावेश छठे, आठवें या 12वें में हों। बृहस्पति अष्टम में हो तथा मंगल और राहु साथ हों, पंचम में शनि और चंद्रमा हो।

मातृशाप का निवारण

उपर्युक्त मातृशाप योगों में संतान की रक्षा हेतु शांति का उपाय करना चाहिए। रामेश्वरम् में स्नान अथवा एक लाख गायत्री जप करके चांदी के पात्र में प्रतिदिन दूध पीएं। तत्पश्चात ग्रहों का दान करें एवं ब्राह्मण भोजन कराएं अथवा 1008 बार पीपल की विष्णुरूप में पूजा करके परिक्रमा करें। भगवान ने शिव ने पार्वती से कहा – ऐसा करने से 'शाप से मुक्ति और सुपुत्र की प्राप्ति होती है तथा कुल-वृद्धि होती है।'

पितृशाप से संतान हानि

पंचम में सूर्य तुला राशि में मकर या कुंभ नवांश में हों तथा पंचम भाव के दोनों ओर पाप ग्रह हों। पंचम में सिंह राशि हो, पांचवें या नौवें भाव में सूर्य व पाप ग्रह हों तथा सूर्य पाप ग्रह के दृष्ट या पाप ग्रह के मध्य में हो। सिंह राशि में गुरु हो तथा पंचमेश और सूर्य साथ हों। पहले तथा पांचवें भाव में पाप ग्रह हों। लग्नेश दुर्बल होकर पंचम में हो, पंचमेश सूर्ययुत हो तथा पहले और पांचवें भाव पापयुक्त हों। दशमेश होकर मंगल पंचमेश से युक्त हो तथा पहले, पांचवें और 10 वें भाव में पाप ग्रह हों। दशमेश छठे, आठवें या 12 वें में हो तथा संतानकारक गुरु पाप ग्रह की राशि में हों और पहला और पांचवां भावेश पापयुक्त हों। दशमेश पंचम में या पंचमेश दशम में हो तथा पहला और पांचवां भाव पापयुक्त हों। पहले या पांचवें भाव में किसी भी प्रकार से सूर्य, मंगल और शनि स्थित हों तथा आठवें या 12 वें में राहु या गुरु हो। अष्टम भाव में सूर्य, पंचम में शनि और पंचमेश राहु के साथ पहले या पांचवें और लग्न में पाप ग्रह हों। द्वादशेश लग्न में, अष्टमेश पंचम में और दशमेश अष्टम में हो। षष्ठेश पंचम में

हो, दशमेश षष्ठ में हो तथा गुरु और राहु साथ हों। उपर्युक्त योगों में पितृशाप से संतानहीनता होती है।

पितृशाप शांति का उपाय

पितृदोष निवारण हेतु गया (बिहार) में श्राद्ध करें तथा एक हजार या दस हजार ब्राह्मणों को वहां भोजन कराएं। इस विधान में असमर्थ हों तो कन्यादान करें व गोदान करें। इस तरह विधानपूर्वक शांति करने से पितृशाप से मुक्ति होती है तथा पुत्र-पौत्रादि से वंश की वृद्धि होती है।

भ्रातृशाप का ज्ञान

शिव बोले, 'हे पार्वती ! अब मैं भ्रातृशाप से संतानहीनता के बारे में बताता हूं। इन योगों में प्रयत्नपूर्वक शांति करनी चाहिए। तृतीयेश पंचम में मंगल और राहु के साथ हो और पहला व पांचवां भावेश अष्टम में हो। पहले या पांचवें भाव में मंगल और शनि हों तथा नवम में तृतीयेश और अष्टम में गुरु हो। तृतीय में गुरु नीचगत हो, पंचम में शनि तथा अष्टम में चंद्र व मंगल हों। लग्न के दोनों ओर पाप ग्रह हों और पंचम भाव भी पाप मध्य हो। पहला व पांचवां भावेश अष्टम में हों। लग्नेश अष्टम में हो, पंचम में मंगल और अष्टम में पापयुक्त पंचमेश हो। दशमेश तृतीय में हो, नवम भाव में पाप ग्रह हो और पंचम में मंगल हो। पंचम में मिथुन या कन्या राशि तथा शनि और राहु हों। द्वादश में बुध और मंगल हों। लग्नेश तृतीय में, तृतीयेश पंचम में और पहले, तीसरे और पांचवें भाव में पापग्रह हों। तृतीयेश अष्टम में और गुरु पंचम में हो तथा गुरु और राहु शनि से युत या दृष्ट हों। अष्टमेश पंचम में तृतीयेश के साथ हो तथा अष्टम में शनि और मंगल हों तो भ्रातृशाप से पुत्र नहीं होता है।

शापमुक्ति का उपाय

भ्रातृशाप से मुक्त होने के लिए हरिवंश पुराण का विष्णु भगवान के सामने श्रवण तथा चंद्रायण व्रत करें अथवा पीपल के वृक्ष की स्थापना और पूजा करें तथा दस गायों या दशमहाधेनु का दान करें। साथ ही पुत्रेच्छुक व्यक्ति पत्नी के हाथ से भूमि दान कराए। इस प्रकार धर्मपत्नी सहित जो उक्त उपायों को करता है, उसे अवश्य ही पुत्र होता है और उसकी वंश वृद्धि होती है।

मातुलशाप से संतान हानि

निम्नलिखित योगों में मामा के शाप से संतान प्राप्ति नहीं होती है। पंचम में बुध, गुरु, मंगल और राहु की स्थिति हो और लग्न में शनि हो। पंचम में पहले और पांचवें भावेश के साथ बुध, मंगल और शनि हों। पंचमेश अस्त हो और पहले या सातवें भाव में शनि, लग्नेश और बुध साथ हों। चतुर्थेश लग्न में द्वादशेश के साथ हो और पंचम में चंद्र, बुध और मंगल हों।

शाप विमोचन का उपाय

इस दोष की शांति के लिए विष्णु भगवान की प्रतिमा की स्थापना करें। परोपकारार्थ बावड़ी, कुआं, तड़ागादि (जल के प्याऊ आदि या सार्वजनिक जलस्थान) तथा पुल बनवाने चाहिए।

ब्रह्म शाप से संतान हानि

निम्नलिखित योगों में ब्रह्म (ब्राह्मण) शाप से संतान नहीं होती। राहु नौवें या 12वें राशि में हो पंचम में गुरु, मंगल और शनि हो और नवमेश अष्टम में हो। नवमेश पंचम में या पंचमेश अष्टम में गुरु, मंगल और राहु के साथ हो। नवमेश नीचस्थ हो, द्वादशेश पंचम में हो और राहु से युक्त या दृष्ट हो। गुरु नीच में हो, राहु लग्न में या पंचम में हो, पंचमेश छठे, आठवें या 12वें में हो। पंचमेश होकर गुरु अष्टम में पापयुक्त हो अथवा पंचमेश सूर्य चंद्र के साथ हो। शनि के नवांश में शनि के साथ गुरु और मंगल हों तथा पंचमेश द्वादश में हो। लग्न में शनि और गुरु हों, नवम में राहु हो अथवा द्वादश में गुरु हो।

वेदोक्त शाप निवारण विधि

ब्रह्मशाप के निवारणार्थ चंद्रायण व्रत करना चाहिए और तीन प्रायश्चित ब्रह्मकूर्च करके दक्षिणा सहित गोदान करें। साथ ही स्वर्ण व पंचरत्नों का दान करें और यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराएं। ऐसा करने से सुपुत्र की प्राप्ति होती है तथा मनुष्य शापमुक्त होकर शुद्धात्मा व सुखी होता है। पूर्णमासी को लगातार 24 घंटे का व्रत करके अगले दिन प्रातः पंचगव्य पीकर व्रत खोलना 'ब्रह्मकूर्च व्रत' है।

पत्नीशाप से संतान हानि

निम्नलिखित योगों में पत्नी के शाप से (पूर्व पत्नी या पूर्वजन्मकृत पत्नी दोष) संतानहीनता होती है। नवम में शुक्र तथा अष्टम में सप्तमेश और पहले तथा पांचवें में पाप ग्रह हों। नवमेश शुक्र हो, पंचमेश षष्ठ स्थान में हो और गुरु, लग्नेश व सप्तमेश छठे, आठवें और 12वें में हों। पंचम में शुक्र की राशि हो, राहु और चंद्र पंचम में हों तथा पहले, दूसरे और 12वें में पाप ग्रह हों। सप्तम में शुक्र और शनि हों, अष्टमेश पंचम में तथा सूर्य और राहु लग्न में हों। सप्तमेश पंचम में हो व सप्तमेश के नवांश में शनि हो और पंचमेश अष्टम में हो। सप्तमेश और पंचमेश अष्टम में हों व गुरु पापयुक्त हो। शुक्र पंचम में हो, सप्तमेश अष्टम में हो और गुरु पापयुक्त हो। द्वितीय में कोई पाप ग्रह हो, सप्तमेश अष्टम में हो व पंचम में कोई पाप ग्रह हो। द्वितीय में मंगल, द्वादश में गुरु और पंचम में शुक्र हो तथा पंचम पर शनि व राहु का योग या दृष्टि हो। दूसरा और सातवां भावेश अष्टम में हों, पहले और पांचवें में मंगल व शनि हों और गुरु पापयुक्त हो। पहले, पांचवें व नौवें में क्रमशः राहु, शनि, मंगल हो और पांचवां तथा सातवां भावेश अष्टम में हों।

दोष निवारण के उपाय

उक्त दोष के निवारण करने के लिए कन्यादान करें अथवा लक्ष्मी व भगवान विष्णु की सोने की मूर्ति, दस गाएं, शय्या, आभूषण व वस्त्र किसी गरीब गृहस्थ ब्राह्मण को दान करें। ऐसा करने से संतान होती है और भाग्यवृद्धि होती है।

प्रेतादिशाप से संतान हानि

पितृकार्य श्राद्ध, तर्पणादि न करने से पितर प्रेत रूप को प्राप्त हो जाते हैं। तब उनके शाप से वंश नहीं चलता। जन्मलग्न में इन योगों को देखकर यह योग कहना चाहिए। पंचम में सूर्य और शनि, सप्तम में क्षीण चंद्रमा और लग्न और द्वादश में राहु व गुरु हों। पंचमेश शनि अष्टम में हों, लग्न में मंगल और अष्टम में गुरु हों। लग्न में पाप ग्रह, व्यय में सूर्य, पंचम में मंगल, बुध और शनि और अष्टम में पंचमेश हों। लग्न में राहु, पंचम में शनि और अष्टम में बृहस्पति हों। लग्न में राहु, शुक्र और गुरु हों, चंद्रमा व शनि साथ हों और लग्नेश अष्टम में हो। पंचमेश नीचस्थ हो, गुरु भी नीचस्थ हो और किसी नीचस्थ ग्रह से गुरु दृष्ट हों। लग्न में शनि, पंचम में राहु, अष्टम में सूर्य तथा द्वादश में मंगल हों। सप्तमेश छठे, आठवें या 12वें में हो, पंचम में चंद्रमा तथा लग्न में शनि और गुलिक हों। अष्टमेश पंचम में शनि और शुक्र के साथ हों और गुरु अष्टम में हों।

प्रेत शाप के उपाय

प्रेत (पितर) इस दोष की शांति के लिए गया में श्राद्ध तथा रुद्राभिषेक करें अथवा ब्रह्माजी की स्वर्णमयी मूर्ति, चांदी के बर्तन और नीलम का दान तथा गोदान करें और ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें। ऐसा करने से शाप से मुक्ति होती है तथा पुत्रोत्पत्ति एवं वंश वृद्धि होती है।

क्रमशः

नई कलम

आतंकवाद एक खतरनाक बीमारी

- मानसी गौतम

भारत को आज़ाद हुए 72 वर्ष हो गए हैं। आजादी से पूर्व भारत में सुई तक नहीं बनती थी किन्तु आज वह विश्व की महाशक्ति बनने की राह में है। करीब तीन दशक पहले देश का विदेशी मुद्रा कोष खाली हो गया था। सोना गिरवी रखकर अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करना पड़ा था। उसी देश ने आज अनेकों देशों को अरबों डॉलर का कर्ज़ दिया हुआ है। मगर आज भी कई चुनौतियाँ देश के सामने हैं। भारत आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। पड़ोसी पाकिस्तान में वह पल्लवित हो रहा है। दुनिया में आतंकवाद की सबसे बड़ी यही पनाहगाह है। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी के अपहरण और उसे छुड़ाने के लिए की गई सौदेबाजी के बाद जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का जो चक्र शुरू हुआ उसने भारत को हिलाकर रख दिया। इस पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद ने हमारी संसद तक को निशाना बनाने की कोशिश की। ये लोग प्रतिबंधित मुस्लिम छात्र संगठन सिमी से सम्बन्धित थे।

आतंकवाद ने हमारे सैकड़ों सुरक्षाकर्मियों और हजारों निर्दोष नागरिकों के साथ-साथ हमारे दो-दो प्रधानमंत्रियों इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की भी बलि ले ली। इंदिरा गांधी पंजाब के खालिस्तानी आतंकवादियों का शिकार हुई तो राजीव गांधी श्रीलंका के तमिल मुक्ति चीतों का। इसके अलावा हमारे उत्तर-पूर्व राज्य भी आतंकवाद की चपेट में रहे हैं। आतंकवादियों के जम्मू और कश्मीर, असम, मेघालय, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा आदि में छोटे-बड़े 180 के करीब संगठन है। देश इन अलगाववादी-आतंकवादी संगठनों से तो सेना, सुरक्षा बलों, राजनीतिक सूझबूझ और राजनीतिक संवाद के जरिए सफलतापूर्वक निपट रहा है। आतंकवाद एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्या बना हुआ है। जिसने देश-दुनिया को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित किया है। सभी देश आतंकवाद के खिलाफ़ हैं और इसका एकजुट सामना करने को प्रतिबद्ध हैं। आतंकवादी हमेशा आम लोगों को निशाना बनाते हैं। वे कभी किसी पर दया नहीं करते, फिर चाहे वे उनके मित्र, परिवार के सदस्य, मासूम बच्चे, महिलाएं और वृद्धजन ही क्यों न हों। वे भीड़ भाड़ भरे स्थानों को हिंसा के लिए चुनते हैं। जिसका शिकार केवल आम नागरिक बनते हैं।

भारत में वर्ष 1980 से पाकिस्तान कश्मीर में आए दिन सीजफ़ायर का उल्लंघन कर रहा है। जिससे वहां डेरा जमाएं आतंकी प्रोत्साहित होकर भारत में घुसपैठ कर हिंसा को अंजाम देते हैं। इसी वर्ष 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा और 7 मार्च, 2019 को जम्मू बस स्टैंड पर ग्रेनेड ब्लास्ट में निर्दोष व्यक्ति और जवान शहीद हो गए थे। आतंकवाद मानवता विरोधी खतरनाक बीमारी है। जो देश दुनिया में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसका एक ही उपाय है कि सभी देश एक जुट मुकाबला करते हुए इसे जड़ से खत्म करें।

नई उड़नपरी ने रचा इतिहास

19 दिन - 5 गोल्ड मेडल

- मदन पटेल

ऐथलेटिक्स में लगातार गोल्ड हासिल करके इतिहास रच रहीं हिमा दास का नाम आज सभी की जबान पर है। एक महीने के भीतर उन्होंने 5 गोल्ड मेडल हासिल किए हैं। हिमा की कहनी भी काफी दिलचस्प है। 18 साल की हिमा असम के छोटे से गांव ढिंग की रहने वाली हैं और इसीलिए उन्हें 'ढिंग एक्सप्रेस' के नाम से भी जाना जाता है। 18 साल की हिमा ने दो साल पहले ही भारतीय रेसिंग ट्रैक पर कदम रखा है। वह एक गरीब किसान परिवार से ताल्लुक रखती हैं।

पांच भाई-बहनों में सबसे छोटी

हिमा के पिता असम के नौगांव जिले के ढिंग गांव में रहते हैं। पिता रंजीत दास के पास मात्र दो बीघा जमीन है। इसी जमीन पर खेती करके वह परिवार के सदस्यों की आजीविका चलाते हैं। हिमा किसी भी जीत के समय अपने परिवार के संघर्षों को याद करती हैं और उनकी आंखों से आंसू छलक पड़ते हैं।

खेत में खेलती थीं फुटबॉल

हिमा लड़कों के साथ अपने पिता के खेत में फुटबॉल खेला करती थीं। जवाहर नवोदय विद्यालय के पीटी टीचर ने उन्हें रेसर बनने की सलाह दी। पैसों की कमी की वजह से उनके पास अच्छे जूते भी नहीं थे। स्थानीय कोच निपुन दास की सलाह मानकर जब उन्होंने जिला स्तर की 100 और 200 मीटर की स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता तो कोच भी हैरान रह गए। निपुन दास हिमा को लेकर गुवाहाटी आ गए।

हैरान रह गए थे कोच

हिमा दास ने जिला स्तर की स्पर्धा में सस्ते जूते पहनकर दौड़ लगाई और गोल्ड मेडल हासिल किया। यह देखकर निपुन दास हैरान रह गए। उनकी गति अद्भुत थी। निपुन दास ने उसे धावक बनाने की ठान ली और गुवाहाटी लेकर गए। कोच ने उनका खर्च भी वहन किया। शुरू में उन्हें 200 मीटर की रेस के लिए तैयार किया। बाद में वह 400 मीटर की रेस भी लगाने लगीं।

हिमा का अंतरराष्ट्रीय करियर

हिमा ने गत दो जुलाई को यूरोप में, सात जुलाई को कुंटो ऐथलेटिक्स मीट में, 13 जुलाई को चेक गणराज्य में और 17 जुलाई को टाबोर ग्रां प्री में अलग अलग स्पर्धाओं में स्वर्ण जीता। कॉमनवेल्थ गेम्स में हिमा ने वर्ल्ड ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप ट्रैक कॉम्पिटिशन में हिस्सा लिया और जीत दर्ज की। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया के कॉमनवेल्थ गेम्स में भी वह शामिल हुई लेकिन छठे स्थान पर रहीं। हिमा बैंकॉक में एशियाई यूथ चैंपियनशिप में शामिल हुई थीं और 200 मीटर रेस में सातवें स्थान पर रही थीं। हिमा पहली ऐसी भारतीय महिला बन गई हैं जिसने वर्ल्ड ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप ट्रैक में गोल्ड मेडल जीता है। हिमा की सफलता पर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने भी ट्वीट करके बधाई दी।

इस तरह जीता सोना

पहला गोल्ड - 2 जुलाई – पोलैंड में पोजनान एथलेटिक्स ग्रांड प्रिक्स में 200 मीटर रेस 23.65 सेकंड में पूरी कर जीता।

दूसरा गोल्ड - 7 जुलाई - पोलैंड में कुनटो एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस को 23.97 सेकंड में पूरा किया

तीसरा गोल्ड - 13 जुलाई - चेक रिपब्लिक में क्लाद्नो एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस 23.43 सेकंड में पूरी की।

चौथा गोल्ड - 17 जुलाई - चेक रिपब्लिक में ताबोर एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस 23.25 सेकंड के साथ जीती।

पांचवा गोल्ड - 20 जुलाई - चेक रिपब्लिक में महिलाओं की 400 मीटर रेस 52.09 सेकंड के साथ जीती। दूसरे स्थान पर भी भारत की वी के विस्मया रहीं। विस्मया ने 52.48 सेकंड का समय निकाला।

चौथा गोल्ड - 17 जुलाई - चेक रिपब्लिक में ताबोर एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस 23.25 सेकंड के साथ जीती।

विश्वास और प्रेम का रक्षाबंधन

रक्षाबंधन का पर्व आज पूरी दुनिया में मशहूर है। बाजार भी कई तरह के उपहारों से भरा पड़ा है। राखियां भी कई तरह के रंग-बिरंगे रंगों से दुकानों में बंदनवार जैसी सजी हुई हैं। बहनें राखी तलाश रही हैं और भाई उपहार खोज रहे हैं। पर एक महत्वपूर्ण चीज जिसे खोजा जाना चाहिए था। वह कोई नहीं खोज रहा जबकि असल में वही जरूरी है और वह जरूरी चीज है विश्वास और प्रेम। रक्षाबंधन का दिन इसी विश्वास और प्रेम को कायम रखने के लिए मनाया जाता है। एक तरह से यह भाई बहन के रिश्ते की अलार्म क्लॉक है। ताकि रिश्ते हमेशा सजग रहें।

– शूरवीर सिंह कच्छावा

धर्म और जाति से परे है पर्व

रक्षाबंधन का पर्व भाई और बहन के रिश्ते की डोर में बंधा सुरक्षा कवच है। यह रिश्ता धर्म की सीमाओं से भी परे है। इतिहास गवाह है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, पारसी जैसे अलग-अलग धर्मों के बीच भी भाई और बहन के रिश्तों ने जन्म लिया और पूरे जीवन भर निभाया।

फिल्मों से लेकर सीरियल तक में

इस थीम पर बनी फिल्में भी सुपरहिट रहीं। इन फिल्मों के गाने आज भी रक्षाबंधन के दिन एफएम से लेकर टीवी तक में देखे सुने जा सकते हैं। समय के साथ यह गाने अन्य गानों की तरह बासी नहीं हुए, बल्कि आज भी इन्हें सुनकर रिश्तों की मिठास का अनुभव होता है। इसकी वजह साफ है, क्योंकि भाई-बहन के रिश्ते में किसी तीसरे की घुसपैठ की संभावना है ही नहीं। टीवी सीरियलों में भी भाई-बहन की जोड़ी यह त्योहार मनाती है।

भाई-बहन की जोड़ी आदर्श

परिवार की पूर्णता के लिए अभी भी भाई-बहन की जोड़ी आदर्श मानी जाती है। पहली बेटी है तो अभी भी लोग आशीर्वाद देते समय कहते हैं अब तो भाई आना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि भाई और बहन की जोड़ी समाज में परिवार की संपूर्णता के रूप में देखी जाती है। राखी के दिन बहन भी अपने भाई को उपहार देती है।

मौन भी हो जाते हैं रिश्ते

आज से कुछ समय पहले रिश्तों में एक अजीब सा ठहराव आ गया था। मन की दूरियां भी बढ़ने लगी थी इसकी वजह यह थी कि आपस में संवाद नहीं हो पाता था। संवाद के साधनों में सिर्फ डाक सेवा थी। टेलीफोन भी सबके घरों में नहीं थे। चिट्ठी में कितना लिख सकते हैं और उसके पहुंचने में भी समय लगता था। फिर भी उसका आसरा था। घर से दूर गया भाई एक ही चिट्ठी में सबको याद करता था। पर्सनल स्पेस कम था। पढ़ाई-लिखाई के लिए या फिर नौकरी के लिए निकला भाई काम में इतना व्यस्त हो जाता था कि उसे फुर्सत ही नहीं मिल पाती थी। यही वजह थी कि रिश्तों में दूरियां थीं।

तकनीक ने दिए रिश्तों को बोल

उदारीकरण के बाद बदलाव आया। नई तकनीक का विकास जोर-शोर से शुरू हुआ लोगों के पास पैसा भी आया। हर किसी के घर में फोन में घंटियां बजने लगीं। इतना ही नहीं मोबाइल भी लोगों के हाथ में दिखाई देने लगे। शुरू में यह बहुत महंगे थे पर धीरे धीरे वह सस्ते हो गए और हर किसी की पहुंच में आ गए। इसी के साथ कम्प्यूटर की दुनिया में भी सभी का दखल होने लगा। छोटे से लेकर बड़े शहरों में कम्प्यूटर सिखाने वाले इंस्टीट्यूट दिखाई देने लगे और इस तरह संवाद के अनेक रास्ते भी खुल गए। रिश्ते मन के और करीब आ गए। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, ई मेल ने रिश्तों का विकास किया।

बहनें करती हैं भाइयों के सपने पूरे

बहुत बार जिंदगी में ऐसे भी मोड़ आते हैं, जो असहनीय होते हैं। रिश्तों की डोर टूट जाती है। काम अधूरे रह जाते हैं। ऐसे में बहनें अपने भाई के द्वारा शुरू किए गए कार्यों को मंजिल तक पहुंचाती हैं। वह डॉक्टर बनती है, आईएएस बनती है। पर हर हाल में भाई का सपना पूरा करती है।

मुनाफा नहीं है रिश्ता

भाई-बहन का रिश्ता मुनाफा नहीं है। रक्षाबंधन का पर्व प्रेम और सद्भावना का है पर हमने इसे मुनाफे से जोड़ दिया है। राखी के गिफ्ट ज्यादा पापुलर हो रहे हैं। और यह गिफ्ट भी काफी महंगे हैं। रिश्तों में बाजार इस कदर हावी है कि रिश्ते का अर्थ उपहार की कीमत से देखा जा रहा है। बहनों को भी सोसायटी फोबिया है और वह भाई के उपहार को अपना स्टेटस सिंबल बना रही हैं।

Happy Independence Day

Bhagwan Geholt
Proprietor
9829242274

Mewar Art Gallery

Pichwais Painting & Handicrafts

Govt. Approved Exporter

Enjoy live Demonstration by Famous Artists

10-A, Sahelion Ki Bari, New Fatehpura,
Udaipur (Raj.) Ph. : 0294-2422309
E-mail : mewararts@hotmail.com
www.mewarartgallery.com / www.indiamart.com/mewarartgallery

उन्होंने कई ऐसे काम किए, जो उनके बेहतरीन हुक्मरां होने की मुनादी करते रहेंगे। पंजाब और उत्तर-पूर्व में शांति, देश की दूरसंचार तथा कम्प्यूटर क्रांति उन्हीं की देन है। सियासत उनकी मूल प्रकृति का हिस्सा नहीं थी, इसीलिए उन्हें समझने में देर लगी कि राजनीति वंचनाओं का दुर्ग होती है - प्रस्तुत है राजीव गांधी की 75वीं जयंती(20.8.44-2019) पर वरिष्ठ पत्रकार शशि शेखर का आलेख।

... राजीव बन चुके थे सोना

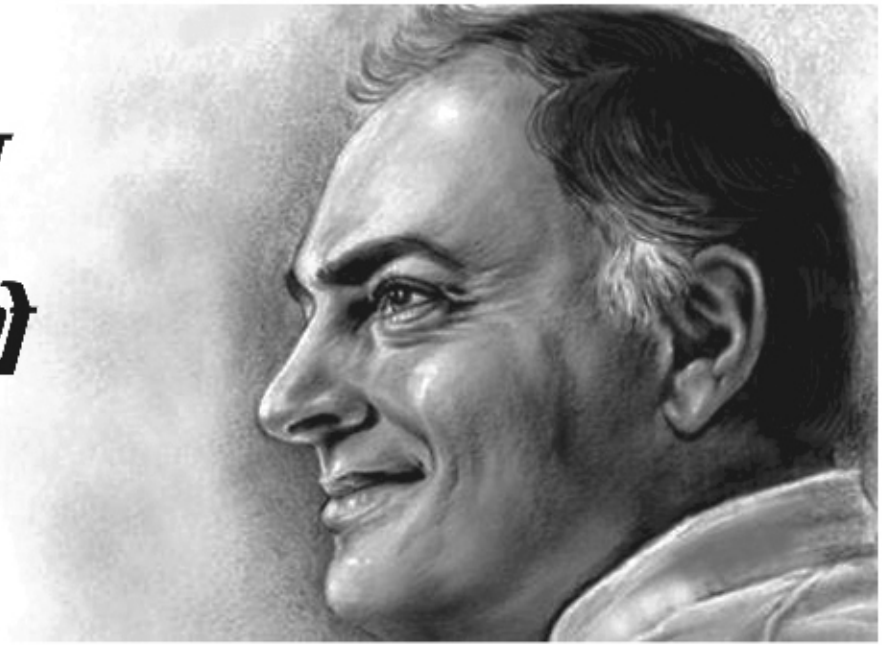

1983 की उस खुशनुमा सुबह हम राजीव गांधी के सामने बैठे थे। स्थान था उनके संसदीय क्षेत्र अमेठी में स्थित गौरीगंज का डाक बगला। सुबह सात बजे के आस पास का वक्त और डाइनिंग टेबल पर बैठे राजीव ने टोस्ट पर मक्खन लगाते हुए नफासत से पूछा कि आप क्या पसंद करेंगे? अनौपचारिकता के रस में सराबोर वह एक औपचारिक 'इंटरव्यू' था। मेरे प्रश्न जितने सीधे थे, उनके जवाब उतने ही सरल और स्पष्ट।

बाद में गौरीगंज से इलाहाबाद का रास्ता तय करते वक्त मैं और मेरे छायाकार साथी देर तक उनके बारे में बात करते रहे। हम एकमत थे कि देश में एक भला और नौजवान नेता उभर रहा है। यदि उन्हें परिपक्व होने का समय मिला, तो एक अच्छे प्रधानमंत्री साबित होंगे। उन दिनों नेहरू-गांधी परिवार का सितारा हिन्दुस्तानी राजनीति के फलक पर बीचोंबीच चमक रहा था। पौने दो साल के अंतराल को छोड़ दें, तो इंदिरा गांधी डेढ़ दशक से प्रधानमंत्री थीं। देश की राजनीति उनके इर्द गिर्द घूमती और ऐसे में उनके राजनीतिक वारिस के लिए इसके अलावा कुछ और सोचना नामुमकिन था।

हम लोगों के मन में राजीव गांधी को जानने-समझने की उत्कंठा इसलिए भी ज्यादा थी, क्योंकि वह राजनीति के लिए अपनी मां की पहली पसंद नहीं थे। संजय गांधी ने सियासत की शुरुआत 1970 के दशक से ही कर दी थी। कांग्रेस की रीति-नीति में उनका खासा दखल था, पर एक हवाई दुर्घटना उनको असमय लील गई। राजीव उन दिनों इंडियन एयरलाइन्स में पायलट थे। आम मध्यवर्गीय भारतीयों जैसी सहज-सरल जिंदगी उन्हें और उनके छोटे से परिवार को रास आती थी। हालात ऐसे बने कि उन्हें राजनीति के गंदे तालाब में कूदना पड़ा। इसके साथ ही संजय और राजीव की मूल प्रकृति में बड़ा फर्क था। हमारे कौतूहल की असली वजह भी यही थी।

क्या पता था कि कुछ महीने बाद इंदिरा गांधी भी हादसे की शिकार हो जाएंगी और राजीव अचानक प्रधानमंत्री बन जाएंगे? क्या आपको नहीं लगता कि राजीव गांधी के जीवन में संयोगों से ज्यादा दुर्योगों की भूमिका थी? एक दुर्घटना ने उन्हें राजनीति में ला दिया, दूसरी ने प्रधानमंत्री की कुरसी तक पहुंचाया और तब किसी को अंदाज न था कि काल का क्रूर चक्र उन्हें इसी दृष्टि से देख रहा है। मुझे अच्छी तरह याद है कि 21 मई, 1991 की उस रात जब श्रीपेरंबदूर से उनकी क्रूर हत्या की खबर आई, तो आगरा स्थित हमारे अखबार के किसी भी कर्मचारी को उसकी सत्यता पर भरोसा नहीं हो रहा था।

कुछ ही दिन पहले तो वह ताजनगरी आए थे और वहां खबरनवीसों को उनका नया रूप दिखाई पड़ा था। हुआ यह था कि रामलीला मैदान की चुनावी जनसभा के बाद वह जनता से मिलने के लिए मंच से नीचे उतर आए थे। खुफिया 'अलर्ट' था कि उनकी जान को खतरा है। उत्तर प्रदेश पुलिस के लोग उनकी सुरक्षा के लिए दिल्ली से प्रदीप गुप्ता की अगुवाई में आए अंगरक्षकों के साथ जद्दोजहद कर रहे थे। उसी दौरान राजीव ने देखा कि एक बुजुर्ग महिला उन तक पहुंचने की कोशिश कर रही है, पर पुलिस का दरोगा उसे रोक रहा है। उन्हें गुस्सा आ गया था और वह उत्तर प्रदेश पुलिस के उस उप-निरीक्षक से अपेक्षा के विपरीत कड़ा बर्ताव कर गए थे। आज के नेताओं की छोड़िए, उन दिनों भी राजनीतिज्ञों द्वारा ऐसी हरकतें आम थीं, पर वह राजीव गांधी थे। उस रात उन्होंने अपना पश्चाताप साथियों से बार-बार साझा किया। सहयोगियों ने कहा 'जो हो गया, सो हो गया।' जाने दीजिए। पर नहीं, उन्होंने उस दरोगा को अगली सुबह सर्किट हाउस बुलाया और निजी तौर पर क्षमा याचना की। इस बड़प्पन से वह दारोगा अभिभूत हो गया। बाद में, आंखों से छलकते आंसुओं और रुंधे गले के साथ उसने पत्रकारों से कहा था कि काश! हर नेता इन जैसा हो जाए।

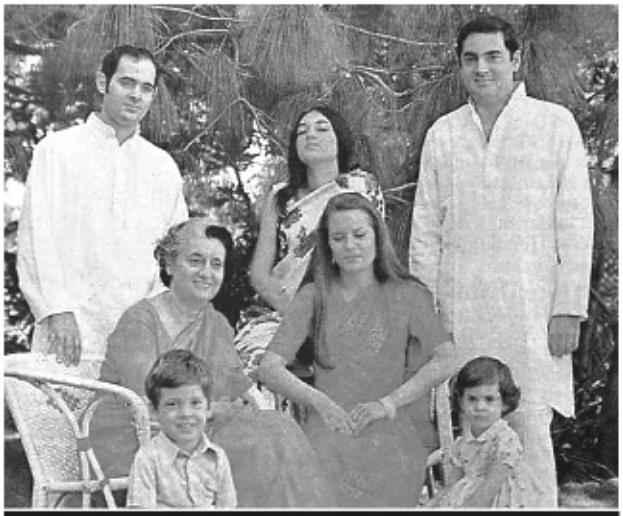

राजीव गांधी अपनी मां इंदिरा जी व परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

वह यकीनन औरों से अलग थे, इसीलिए सतर्कता बरतने की खुफिया सूचनाओं के बावजूद 'अपने लोगों' से मिलने के लिए उतावले रहते और इसी वजह से उन्होंने जान गंवाई। जो भूल गए, उन्हें याद दिला दूं। उस समय देश में आम चुनाव हो रहे थे। केन्द्र और विभिन्न राज्यों की एजेंसियों के पास 'इनपुट' था कि उन पर लिट्टे अथवा खालिस्तान समर्थक आतंकवादी हमला कर सकते हैं। हर जनसभा से पहले उन्हें चेताया जाता कि आप खुद को अधिक 'एक्सपोज' न करें। तमिलनाडु में खतरा कुछ अधिक था। वह इस तथ्य को जानते थे, फिर भी उन्होंने वहां का दौरा टालने की कोशिश नहीं की। उस समय 'स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप'(एसपीजी) सिर्फ प्रधानमंत्री की सुरक्षा मुहैया कराती थी। उनकी हत्या के बाद सरकार ने इसका दायरा बढ़ाया। अब यह प्रधानमंत्री, पूर्व प्रधानमंत्रियों, उनके परिजनों और गांधी परिवार की हिफाजत करती है। यह एक बेहतरीन सुरक्षा इकाई है और इसके अस्तित्व में आने के बाद किसी प्रधानमंत्री पर कोई बड़ा हमला नहीं हुआ।

राजीव गांधी पर मंडरा रहे खतरे के मद्देनजर उनकी सुरक्षा के समुचित इंतजाम क्यों नहीं किए गए? इस सवाल का आज तक सटीक उत्तर नहीं मिल सका है।

यह तो राजीव गांधी के व्यक्तित्व का निजी पहलू था, पर बतौर प्रधानमंत्री उन्होंने कई ऐसे काम किए, जो उनके बेहतरीन हुक्मरां होने की मुनादी करते रहेंगे। पंजाब में अमन, उत्तर-पूर्व में शांति और देश को दूरसंचार तथा कम्प्यूटर क्रांति उन्हीं की देन है। सियासत उनकी मूल प्रकृति का हिस्सा नहीं थी, इसीलिए उन्हें समझने में देर लगी कि राजनीति वंचनाओं का दुर्ग होती है। यही वजह है कि उनके सलाहकारों ने उन्हें प्रेस पर पाबंदी अथवा श्रीलंका में जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्हें दूसरों से ज्यादा अपनों से दुख मिला। अगर उनमें सियासी शातिरपना होता, तो शायद बोफोर्स की दलदल में भी न फंसते, मगर ऐसा कौन सा राजनेता है, जिस पर दाग नहीं लगे?

हुकूमत उस काजल की कोठरी का दूसरा रूप है, जिसमें कदम रखने पर दामन बेदाग रह ही नहीं सकता। संसार के समस्त सत्तानायकों को इसका दंश भोगना पड़ा है। राजीव गांधी भी इसका अपवाद न थे। इस वक्त अगर वह जिंदा होते, तो अपने जीवन के 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे होते। उन्हें उस दौर में असमय जाना पड़ा, जब वह संघर्षों की आग में तपकर खरा सोना बन चुके थे और देश को उनकी जरूरत थी।

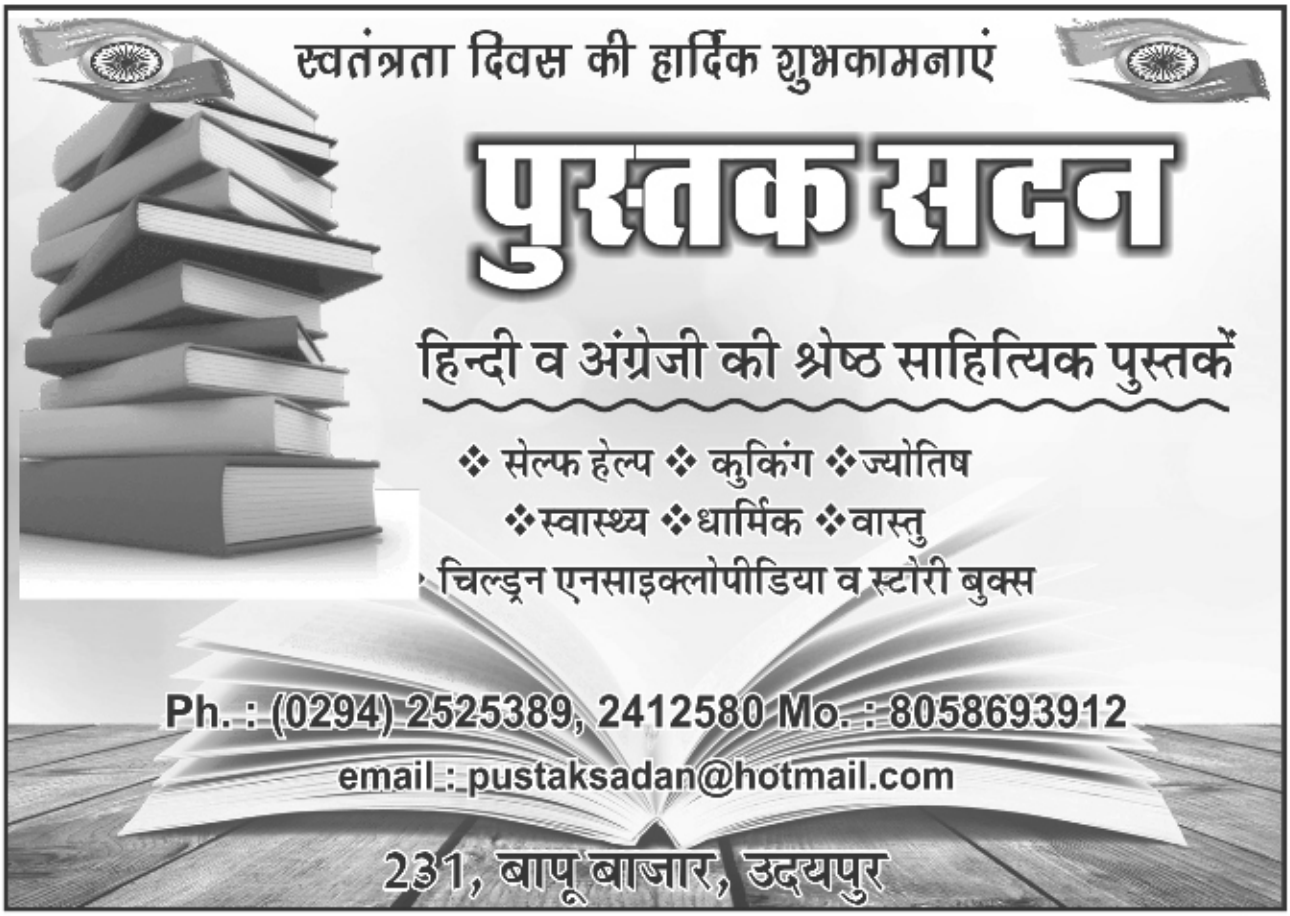

शिक्षा क्षेत्र में अलग पहचान

नोबल इंटरनेशनल स्कूल

– अवतार मीणा

विश्वविख्यात झीलों की नगरी उदयपुर की सुरम्य वादियों के बीच स्थित नोबल इन्टरनेशनल (इंगलिश मीडियम) स्कूल ने विगत वर्षों में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह स्कूल अन्य स्कूलों से कई मायनों में काफी भिन्न है।

स्कूल के निदेशक के. एम. जिन्दल इसकी स्थापना से ही इसके क्रमिक विकास को लेकर पूर्णत: समर्पित रहे हैं इस विद्यालय ने शिक्षा और सहशैक्षिक गतिविधियों से शिक्षा क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है।

यह स्कूल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है। गत वर्षों में दसवीं बोर्ड का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। वर्ष 2017 से स्कूल में कक्षा 12वीं कॉमर्स एवं कला संकाय प्रारम्भ किया जा चुका है। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से सम्बद्ध इस स्कूल के 12वीं के छात्रों के प्रथम बैच ने इस वर्ष(2019) बोर्ड परीक्षा दी है। परिणाम शत-प्रतिशत रहा स्कूल के छात्र-छात्राएँ निरन्तर अकादमिक उन्नति कर रहे हैं।

शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद में भी स्कूल अग्रणी है। छात्र जीशान ने राष्ट्रीय स्तर पर कूडो में सिल्वर पदक एवं छात्रा मुस्कान ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। छात्र अजित ने राज्य स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। अन्य गतिविधियों में कल्चरल फंक्शन, हैल्दी किड्स प्रतियोगिता, सलाद कॉम्पीटिशन, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट कॉम्पीटिशन, रंगोली, मेहन्दी, कॉम्पीटिशन प्रतिवर्ष कराये जाते हैं एवं विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया जाता है।

छात्र-छात्राओं के चहुँमुखी विकास हेतु सम्पूर्ण विद्यालय के विद्यार्थियों को चार हाउसों में बांटकर एनुअल फंक्शन, स्पोर्ट्स डे आदि मनाये जाते हैं। जिसमें हाउस-वाइज प्रतियोगिता होती है।

स्पोकन इंग्लिश, स्कूल स्पेल बी की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। पेरेग्राफ राइटिंग, रेसीटेशन व ऐसे कॉम्पीटिशन नियमित रूप से कराये जाते हैं, जिससे बच्चों का इंग्लिश पक्ष मजबूत बन सके।

विशेष योग्यता

नाम विद्यार्थी	प्रतिशत	कक्षा
काव्या पूर्बिया	91.50%	X
नौशीन खान	91.50%	X
एरिका सिंघई	87.83%	X
दिपेश टांक	81.80%	XII (Comm.)
मधुर सोलंकी	74.00%	XII (Comm.)
रिपित भट्ट	73.20%	XII (Comm.)
आस्था सांखला	88.20%	XII (Arts)
गौरांशी पाटीदार	81.40%	XII (Arts)

आचरण में पवित्रता का अभियान चातुर्मास

चातुर्मास महापुण्य अर्जन का साधन है। आषाढ़, सावन, भाद्रपद और अश्विन महीने का यह समय अधिक से अधिक 165 दिन और कम से कम 100 दिन का होता है। आत्मभूमि भी एक खेत है। चातुर्मास धर्म के बीजारोपण का उचित समय है। जैसे किसान चार माह जागरूक होकर काम करता है। उसी प्रकार आत्मसाधक भी हर पल जागरूक रहकर इस महापर्व में आत्मसाधना करते हैं।

– आचार्य पुष्पदंत सागर

भारतीय संस्कार और संस्कृति में जितने भी पर्व आते हैं उन सभी में चातुर्मास का पर्व महापर्व है। अध्यात्म का पर्व, आत्म-उत्थान का पर्व, अपने आप को समझने का पर्व। दया, अहिंसा व करुणा-प्रेम का महापर्व है। धर्म का अर्थ भी यही होता है। इसमें त्याग, संयम, तप और ध्यान किया जाता है। चातुर्मास का उद्देश्य भी दया भाव से है। वर्षाकाल में जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है। हिंसा होने की आशंका रहती है। संत चातुर्मास इसलिए करते हैं कि हिंसा न हो। संत, आचार्य व मुनिजन गृहस्थों को जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग बताते हैं ताकि उनमें मानवता की भावना जाग्रत हो।

धर्म का बीजारोपण

जैन धर्म में चातुर्मास का अत्यधिक महत्व है। तीर्थंकर भगवंतों की दिव्य ध्वनि अनुसार मूलाचार में इसका वर्णन किया गया है। मुनियों के लिए विहार को विराम दे कर एक स्थान पर स्थिर साधना का प्रावधान है वर्षायोग। इसमें चार माह तक एक ही स्थान पर रहकर साधना करनी होती है। पानी से भरे मेघ एक ही स्थान पर नहीं अलग-अलग स्थानों पर बरसते हैं। इस प्रकार मुनि गण साधना के अनुकूल स्थानों शहरों, गांवों में वर्षायोग का आनंद लेते हैं और साधना से प्राप्त अनुभव बांटते हैं।

चार माह की आस चातुर्मास

यह मास कहता है आलस्य-प्रमोद छोड़ो, वरना आलस्य तुम्हारी साधना को समाप्त कर देगा। सावन मास कहता है संतों को श्रवण करो, श्रम करो, श्रावक बनो। जबकि भाद्र मास के अनुसार अभद्र और सरल बने परिणामों को निर्मल रखो। कुंवार(अश्विनी) मास कहता है यदि आलस्य नहीं छोड़ा, संतो को सुनकर श्रावक नहीं बनें, भद्र परिणामी नहीं बनें तो सुख-पुण्य इन सबसे वंचित रह जाओगे। जीवन व्यर्थ चला जाएगा। स्वर्ण अवसर तुम्हारे हाथ में है उसका सदुपयोग करो। यदि आठ माह कुशल रूप से गुजारना है तो पुरुषार्थ करो। इनमें गुरु पूर्णिमा, रक्षा-बंधन, पर्युषण पर्व, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली आदि पर्व आते हैं। धर्म से भाग्य बनेगा। भाग्य से अर्थ मिलेगा। अर्थ से काम जागेगा। तीनों से तृप्त हो मुनि बन साधना करोगे तो मोक्ष मिलेगा। तृप्ति से अर्थ है संसार, शरीर व भोग से उदास हो जाओगे तो मोक्ष का मार्ग खुल जाएगा।

महापुण्य अर्जन का साधन

चातुर्मास ही एक ऐसा समय है जब संत एक जगह इतने समय तक रह सकता है नहीं तो संत एक बहती नदी के समान होते हैं। पाप के बिना पुण्य, रात के बिना दिन, सुख के बिना दुख का अस्तित्व नहीं हो सकता। उसी प्रकार संत के बिना श्रावक का अस्तित्व नहीं हो सकता। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों के होने पर ही धर्म है। शास्त्रों में गृहस्थ धर्म और संत धर्म बताए गए है। देव वंदना, गुरु वंदना, स्वाध्याय-संयम, तप-दान यह श्रावक की आवश्यक क्रिया है। जो साधु के बिना हो नहीं सकती है और श्रावक की आवश्यक क्रिया नहीं होगी तो वह पुण्य का अर्जन कैसे करेगा। इसलिए चातुर्मास महापुण्य का अर्जन करने का साधन है। चातुर्मास काल अधिक से अधिक 165 दिन और कम से कम 100 दिन का होता है। चातुर्मास काल में संत अपने प्रवचनों से आमजन में धार्मिक भावना का प्रसार करते हैं।

साधना के श्रेष्ठ मास

मनुष्य को तीन प्रकार के रोग लगते हैं – जन्म, जरा व मृत्यु। भौतिक विज्ञान भी उपचार तीन प्रकार से करता है- एलोपैथिक एक रोग को दबाती है व नया रोग पैदा करती है। होम्योपैथिक रोग से लड़ने का साहस देता है। आयुर्वेद रोग को जड़ से समाप्त करता है। जन्म-मरण से मुक्ति का उपचार धर्म-योग ध्यान से होता है। इन सबकी ध्यान साधना के लिए चातुर्मास की स्थापना की जाती है। वर्षा योग कोई नहीं परम्परा नहीं है अनादिकालीन अहिंसात्मक साधना का योग है।

इन्हें बनाएं भोजन का हिस्सा

प्राकृतिक भोजन हमें कई परेशानियों से तो बचाता ही है, रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति में इज़ाफा भी करता है।

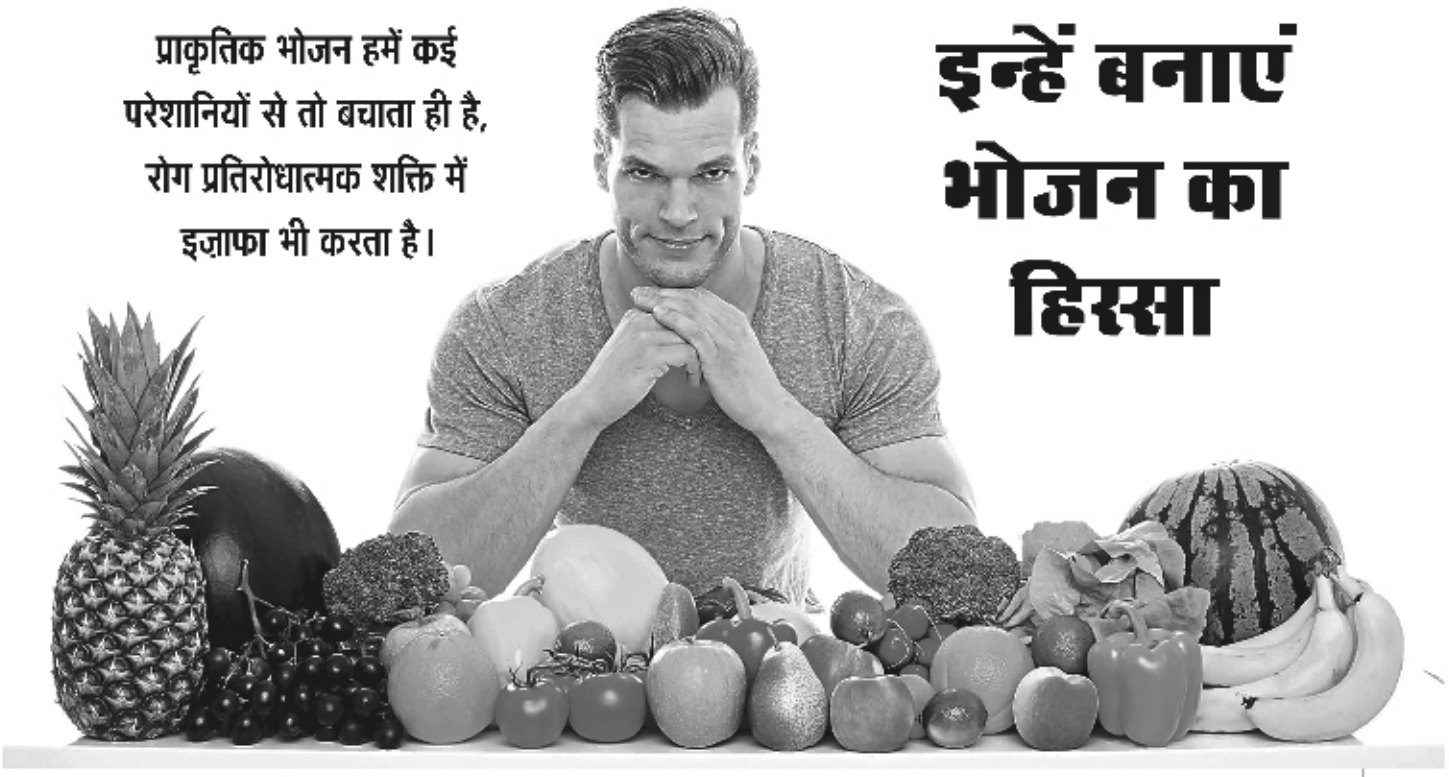

हर कोई चुस्त-दुरुस्त रहना चाहता है। लेकिन आम तौर पर ऐसा नहीं हो पाता। मानसून के इस मौसम में कोई न कोई स्वास्थ्य समस्या तो गले आ ही पड़ती है। ऐसे में शरीर की सुरक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य का ध्यान रखना ज़रूरी है।

- वैद्य शोभालाल औदिच्य

नींबू : नींबू के रस की बूंदें हर भोजन में अमृत से कम नहीं है। नींबू सेहत संवारने के लिए ज़रूरी है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। दरअसल नींबू में पाये जाने वाले एस्कॉर्बिक अम्ल जिसे विटामिन-सी कहा जाता है, स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। प्रतिदिन भोजन में इसके सेवन से एसिडिटी नहीं होती। आंखों की रोशनी बढ़ाने के साथ ही यह मसूढ़ों और दांतों को भी मज़बूत रखता है। गले में सूजन या खराश होने पर गुनगुने पानी में नींबू रस की बूंदें डालकर पीएं। इसमें थोड़ा काला नमक डालें। हैज़ा होने पर नींबू, प्याज और पुदीने के रस का मिश्रण लें। काले नमक के साथ नींबू पानी पीने से लू नहीं लगती।

स्ट्रॉबेरी : इसमें 92 प्रतिशत पानी मौजूद होता है। साथ ही इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स के गुण भी मौजूद होते हैं। इसलिए स्ट्रॉबेरी, ब्लूबेरी आदि को दुनिया के कई देशों में बड़े चाव से खाया जाता है। वर्कआउट के बाद आप इसे स्नैक्स की जगह खा सकते हैं। इससे शरीर को पानी और दूसरे मिनरल्स की पूर्ति होती है।

ग्रीन टी : एक कप ग्रीन टी से आपके शरीर को कैटेचिन नाम का एक तत्व मिलता है। कैटेचिन में कई बीमारियों को दूर भगाने के गुण मौजूद होते हैं, साथ ही इससे सनबर्न की वजह से होने वाली सूजन और अल्ट्रा वायलट की हानिकारक किरणों के नुकसान से भी छुटकारा मिलता है।

अनार : इस स्वादिष्ट फल के बीज एंटीऑक्सीडेंट्स से भरे होते हैं। इनमें इलाजिक एसिड होता है, जो सूरज की यूवी किरणों से आपकी त्वचा की कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त होने से बचाता है

शिमला मिर्च : हरी, लाल मिर्च और पीली शिमला मिर्च एंटीऑक्सीडेंट और पानी से भरपूर होती है।

नारियल पानी : नारियल पानी में पाए जाने वाले सोडियम और क्लोरिन खून की सफाई करते हैं। ताजे नारियल का पानी ऊर्जावान और फुर्तीला बनाता है, क्योंकि इसमें पोटैशियम और मैग्नीशियम होता है।

नट्स यानी मेवे : सूखे मेवे बड़ी बीमारियों से बचाते हैं और दिल, नर्व्स, त्वचा और दृष्टि को सेहतमंद बनाए रखते हैं

टमाटर : टमाटर एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है। यह यूवी किरणों से होने वाले नुकसान से भी बचाता है।

लक्ष्यराजसिंह को 'भारत गौरव' सम्मान

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को लंदन की ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारत गौरव के अलंकरण से सम्मानित किया है। समारोह में ब्रिटेन के सांसद विजेन्द्र शर्मा व अन्य अतिथियों ने सिंह के अलावा विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन करने वाली कई अन्य प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया।

प्रकाश अध्यक्ष बने

उदयपुर। लश्करी अग्रवाल समाज के चुनाव में प्रकाशचंद्र अग्रवाल को अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष शिवप्रकाश अग्रवाल, सचिव दिनेश कंसल तथा कोषाध्यक्ष जयेश बंसल को चुना गया।

श्री सीमेंट को 'शिक्षा भूषण' सम्मान

जयपुर। श्रीसीमेंट लिमिटेड राज्य को शिक्षा के विकास में उत्कृष्ट कार्य करने पर राज्य सरकार द्वारा 28 जून को बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मान समारोह में लगातार छठी बार भामाशाह सम्मान 2019 से सम्मानित किया गया। 'शिक्षा भूषण' का यह सम्मान कम्पनी के उपाध्यक्ष(कार्मिक एवं प्रशासन) पुष्पेन्द्र भारद्वाज ने ग्रहण किया। समारोह के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत थे। शिक्षामंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने भारद्वाज को यह पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर शिक्षा राज्यमंत्री बी. एस. भाटी, डॉ. सुभाष गर्ग, प्रमुख शासन सचिव डॉ. आर. वेंकटेश्वरन, निदेशक(माध्यमिक शिक्षा) नथमल डिडोर भी मौजूद थे। इस सम्मान पर कम्पनी के एमडी एच. एम. बांगड़, जेएमडी प्रशांत बांगड़, निदेशक पी. एन. छंगाणी, अध्यक्ष(वाणिज्यिक) संजय मेहता ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

अर्थ को सर्वश्रेष्ठता अवार्ड

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स को राज्य स्तर पर द. राजस्थान का सर्वोत्तम डायग्नोस्टिक्स का अवार्ड स्वास्थ्य मंत्री रघु शर्मा ने जयपुर में प्रदान किया। यह अवार्ड हाई क्वालिटी रिपोर्ट द्वारा इलाज, सही और समय से डायग्नोसिस द्वारा मरीजों के धन तथा दवाओं के साइड इफेक्ट से बचाव, डिजिटल रिपोर्ट्स, उच्च क्वालिटी की डायग्नोसिस की मशीनें, 4डी सोनाग्राफी तथा सुपर डिजिटल एक्स-रे जैसी आधुनिकतम तकनीक द्वारा सटीक डायग्नोसिस के लिए दिया गया। स्वास्थ्य मंत्री ने अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डा. अरविन्दर सिंह को बधाई देते हुए कहा कि जब राजस्थान प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है तो उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं जनता को उपलब्ध करना भी आवश्यक है।

ग्रेवाल अध्यक्ष व पाहवा सचिव

उदयपुर। गुरुनानक पब्लिक स्कूल सभा के चुनाव में अध्यक्ष चिरंजीव सिंह ग्रेवाल और सचिव अमरपाल सिंह पाहवा को चुना गया। उपाध्यक्ष चरनजीत सिंह ढिल्लों व सहसचिव सतनाम सिंह को बनाया गया। यह जानकारी चुनाव अधिकारी सी. एम. कच्छावा ने दी।

चिरंजीव सिंह ग्रेवाल

अमरपाल सिंह पाहवा

गीतांजली की अनूठी चिकित्सा सेवा

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल द्वारा नवाचार के रूप में दुर्घटना एवं आपातकाल के दौरान समय पर उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लक्ष्य से फर्स्ट रेस्पोन्डर मोबाईक एम्बुलेन्स का शुभारम्भ गत दिनों संभागीय आयुक्त विकास सीताराम भाले ने किया। इस अवसर पर वाइस चेयरमैन गीतांजली ग्रुप कपिल अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक गीतांजली ग्रुप अंकित अग्रवाल, डीन गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल डॉ. एफ. एस. मेहता, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नरेन्द्र मोगरा, सीईओ गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल प्रतीम तम्बोली एवं समस्त कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्डियक सर्जरी यूनिट का शुभारम्भ

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल में हृदय रोग सर्जरी के लिए गुरु पूर्णिमा पर कार्डियक सर्जरी यूनिट का उद्घाटन किया गया। पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, अमन अग्रवाल, पेसिफिक मेडिकल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. डी. पी. अग्रवाल, रजिस्ट्रार शरद कोठारी, सीनियर कार्डियक सर्जन डॉ. शिरीष एम डोवले, कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. जे. सी. शर्मा और मेडिकल डायरेक्टर डॉ. अपूर्व बोहरा ने उद्घाटन किया।

हुसैन चेयरमैन, नवदीप सचिव

उदयपुर। उदयपुर यूनाईटेड राउंड टेबल की 10वीं वार्षिक आम बैठक में वर्ष 2019-2020 के लिये हुसैन मुस्तफा को अध्यक्ष एवं नवदीपसिंह को सचिव चुना गया। नई कार्यकारिणी में वाइस चेयरमैन परितोष मेहता, कोषाध्यक्ष, सौरभ बापना एवं निवर्तमान चेयरमैन सौरभ जैन को मनोनीत किया गया।

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती

गांधी दर्शन से आदिवासी उत्थान

उदयपुर में सफल त्रिदिवसीय आयोजन

रिपोर्ट : फिरोज अहमद शेख/उमेश शर्मा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वें जयंती वर्ष (1869-2019) पर सारे देश में आयोजन हो रहे हैं। राजस्थान सरकार के कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की ओर से राज्य के सभी 33 जिलों में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के आदेश पर 3 जून से 4 अक्टूबर 2019 तक विशेष आयोजन किए जा रहे हैं, जिनमें गांधी जीवन दर्शन के विभिन्न पक्षों पर स्कूलों में निबंध, भाषण व चित्रकला प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनियां, सर्वधर्म प्रार्थना सभा, गांधी संदेश यात्रा, शहीदों के परिजनों व स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान व संगोष्ठियां शामिल हैं। प्रस्तुत है 25 से 27 जून तक उदयपुर में सम्पन्न कार्यक्रम की रिपोर्ट।

शहर के गुलाब बाग में महात्मा गांधी के प्रतिमा स्थल पर 25 जून को प्रात: 7 बजे सर्वधर्म प्रार्थना सभा के साथ त्रिदिवसीय आयोजन की शुरुआत जिला प्रशासन, महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति एवं राज्य सरकार द्वारा कार्यक्रम के लिए मनोनीत संयोजक पंकज कुमार शर्मा व सहसंयोजक सुधीर जोशी, जिला कलेक्टर आनंदी, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी के सान्निध्य में हुई। कार्यक्रम में पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया, सज्जन कटारा, कार्यक्रम समन्वयक पुनीत शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता अशोक तम्बोली, फिरोज अहमद शेख, गोपाल जाट, पिन्टू शर्मा, उमेश शर्मा हितैषी, जयप्रकाश निमावत, संदीप गर्ग, पिन्टू मेघवाल, मेहबूब शेख, अवतार मीणा आदि मौजूद थे।

तत्पश्चात् राउमावि पुरोहितों की मादड़ी, अम्बामाता, प्रज्ञा चक्षु, सवीना खेड़ा, सेक्टर 4, सेंटपॉल, डीपीएस, सिडलिंग, सेंट मैथ्यूज, सेन्ट मेरिज, सेंट एंथोनी सहित कुल 50 निजी व राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन कर महात्मा गांधी का स्मरण किया गया। मेवाड़ बीएससी नर्सिंग छात्रों ने गांधीजी की सजीव झांकी प्रस्तुत की। इसके पश्चात् महात्मा गांधी के आदर्शों एवं जीवन चरित्र पर आधारित संदेश यात्रा निकाली गई जो शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए टाउन हॉल प्रांगण पहुंची।

मोहन से महात्मा

इसी दिन सूचना केन्द्र कलादीर्घा में 'मोहन से महात्मा तक का सफर' विषयक त्रिदिवसीय चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ स्वतंत्रता सेनानी व शहीदों के परिजनों ने किया। इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी ललित मोहन शर्मा, शहीद अर्चित वर्डिया की माता बीना वर्डिया, कलेक्टर आनंदी, वल्लभनगर विधायक गजेन्द्र सिंह शक्तावत, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, आयोजन समिति के संयोजक पंकज कुमार शर्मा, सह-संयोजक सुधीर जोशी, डॉ. मधुसूदन शर्मा आदि मौजूद थे। प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के जीवन काल, सत्याग्रह, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, शांतिदूत, भारत छोड़ो आन्दोलन, बेरिस्टर गांधी, स्वदेश आगमन सहित महात्मा गांधी से जुड़े विभिन्न पहलुओं का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया।

निबंध, चित्रकला और भाषण प्रतियोगिता

तीन दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन 26 जून को सेंटपॉल स्कूल में जिला स्तरीय निबंध, चित्रकला और भाषण प्रतियोगिताएं हुई जिसके जूनियर एवं सीनियर वर्ग में विद्यार्थियों ने उत्साह से भागीदारी की।

इस दौरान आयोजन समिति सदस्यों सहित मनोज गंधर्व, जिला परिषद् के सीईओ मेघराज मीणा, सीपीओ पुनीत शर्मा व सीडीईओ शिवजी गौड़ सहित शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद थे। प्रतियोगिताओं में कुल 44 विद्यालयोंके 85 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सूचना केन्द्र में मोहन से महात्मा तक का सफर विषयक चित्र प्रदर्शनी का विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों व पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा व पूर्व उप जिला प्रमुख लक्ष्मीनारायण पण्ड्या ने भी अवलोकन किया।

शेष पृष्ठ 29 पर ...

इतिहास गवाह है इनकी बहादुरी व साहस का

– रेणु शर्मा

बात चाहे स्वतंत्रता से पहले की हो या आज की। इतिहास गवाह है कि महिलाओं ने समय-समय पर अपनी बहादुरी और साहस का परिचय दिया है। यहां तक कि उन्होंने देश को अंग्रेजों के चंगुल से स्वतंत्र करवाने के लंबे विद्रोह में भी सक्रिय भूमिका निभाई और देश को आजाद करवाने में अहम योगदान दिया। आप भी जानिए उन्हें जिनके नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं।

रानी लक्ष्मी बाई (नवम्बर 1828-जून 1858)

भारत में जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा जरूर होती है। वे एक आदर्श भी हैं, उन सभी महिलाओं के लिए जो खुद को बहादुर मानती हैं। देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम(1857) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी।

एनी बेसेंट (अक्टूबर 1857-1933)

थियोसिफिकल सोसायटी और भारतीय होम रूल आन्दोलन में अपनी विशिष्ट भागीदारी निभाने वाली ऐनी बेसेंट 1890 में हेलेना ब्लावत्सकी द्वारा स्थापित थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्या बनीं। भारत आने के बाद वे महिला अधिकारों के लिए लड़ती रहीं।

कस्तूरबा गांधी (अप्रेल 1869-1944)

गांधीजी ने 'बा' के बारे में खुद कहा था कि उनकी दृढता और साहस खुद उनसे भी उन्नत थे। वे एक दृढ़ आत्मशक्ति वाली महिला और गांधीजी की प्रेरणा थीं। उन्होंने लोगों को शिक्षा व स्वास्थ्य से जुड़े सबक सिखाए। आजादी की लड़ाई में सराहनीय कार्य किए।

सरोजिनी नायडू (फरवरी 1879-1949)

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि कवयित्री भी थीं। गोपाल कृष्ण गोखले से एक ऐतिहासिक मुलाकात ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। सरोजिनी ने खिलाफत आन्दोलन की बागडोर संभाली और अंग्रेजों को भारत से निकालने में अहम योगदान दिया।

शेष पृष्ठ 30 पर ...

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

वाशिंग पाउडर

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
F-264, F-264A, RIICO Ind. Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
CIN : U15412RJ2005PTC020174

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

पृष्ठ 27 का शेष ...

आदिवासी उत्थान : संगोष्ठी एवं समापन

त्रिदिवसीय आयोजन का समापन 27 जून को नगर निगम रंगमंच पर 'आदिवासी उत्थान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के साथ समारोहपूर्वक हुआ।

मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त भवानी सिंह देथा ने इस सफल आयोजन के लिए जिला प्रशासन, आयोजन समिति एवं विभिन्न विभागों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा व प्रकृति प्रेम जैसे मूल्य हमें प्रदान किए हैं जो हर देशकाल, परिस्थिति में प्रासंगिक रहेंगे। प्रारंभ में जिला कलक्टर आनंदी ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी ललित मोहन शर्मा, शहीद परिजन पुष्पा मीणा, बीना वर्डिया, सुशीला नागौरी व धर्मचन्द नागौरी, चांद कुंवर, सुनीता खटीक, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, नगर निगम महापौर चंद्रसिंह कोठारी, जिला परिषद् सीईओ कमर चौधरी, नगर निगम आयुक्त अंकित कुमार सिंह, महिला एवं बाल विकास उपनिदेशक महावीर खराड़ी, राज्य सरकार द्वारा राज्य स्तर पर मनोनीत कार्यक्रम समन्वयक मनीष शर्मा, संयोजक पंकज कुमार शर्मा, सहसंयोजक सुधीर जोशी आदि बतौर अतिथि मौजूद थे।

समापन समारोह में पूर्व सांसद मीणा ने कहा कि गांधीजी के बताए मार्ग पर चलकर ही विश्व में व्याप्त, हिंसा, असत्य और भ्रष्टाचार से लड़ा जा सकता है। महापौर कोठारी ने कहा कि महापुरूषों का आचरण ही उनका संदेश होता है। वे किसी एक वर्ग, समुदाय, देश के नहीं होकर पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं। संगोष्ठी के प्रथम वक्ता के रूप में प्रादेशिक परिवहन अधिकारी डॉ. मन्नालाल रावत ने जनजाति विकास के ग्राम स्वराज मॉडल पर विचार रखते हुए कहा कि गांधीजी द्वारा बताया गया ग्राम स्वराज का मॉडल जनजातियों के जीवन का अंग है।

एमडीएस यूनिवर्सिटी के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. आर. पी. जोशी ने बताया कि साधन व साध्य की पवित्रता, समावेशी विकास और विकेन्द्रीकृत व्यवस्था गांधीजी के वे आदर्श हैं, जो अनुकरणीय हैं। एमएलएसयू के डॉ. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि गांधी की सबसे अधिक प्रासंगिकता यह है कि हम जीवन में उन्नति के लिए निरंतर प्रयोग करें। गांधी के जीवन में व्यक्तिगत नैतिकता और आचरण की शक्ति हमें संघर्ष की प्रेरणा देती है। डॉ. तिलक बागनी ने बताया कि गांधीजी ने सर्वोदय को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जिसका अर्थ था सभी का उदय और सब तरह से उदय। वरिष्ठ पत्रकार एवं 'प्रत्यूष' के सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि गांधीजी ने आर्थिक चिंतन में सदैव गरीब, आदिवासी, किसान और मजदूर को केन्द्र में रखा। वे इनके उत्थान में ही देश के विकास की परिकल्पना करते थे। मीरा गर्ल्स कॉलेज की ज्योति गौतम ने भी विचार रखे।

स्काउट गाइड की यशिता श्रीवास्तव व उनकी टीम ने गांधी संदेश यात्रा विषयक एवं सेंट एंथोनी विद्यालय के विद्यार्थियों ने 'मैं भी गांधी' नाटक का मंचन किया। संचालन राजेन्द्र सेन ने किया।

स्पर्धाओं में विजेता विद्यार्थी

गांधी जीवन दर्शन चित्रकला प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में सेंट एंथोनीज बलीचा की दिशा व्यास प्रथम, महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल की तुलजा पारीक द्वितीय व दिल्ली पब्लिक स्कूल की सईद्रा खान तृतीय स्थान पर रही। सीनियर वर्ग में सेंट एंथोनीज बलीचा की चारूक्षी जैन प्रथम, सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल की झलक बन्दवाल द्वितीय व रेजीडेंसी विद्यालय की मनीषा रावल तृतीय स्थान पर रही। निबंध लेखन प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में सेंट मेरीज की नेयरिति पालीवाल प्रथम, द स्कॉलर एरिना की सिद्धिका औदिच्य द्वितीय व सिडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल की रीया सैनी तृतीय स्थान पर रही जबकि एमएमपीएस की हिमांशी कोठारी व अनंब नवल, सेंट एंथोनी की पूजा सेन व द स्कॉलर एरिना की देवांगी जैन को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। सीनियर वर्ग में सेंट एंथोनी हिरणमगरी की हिलोरी जैन प्रथम, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सालेरा कला की शिवांशी माहेश्वरी व सिडलिंग मॉडल पब्लिक स्कूल की कुमकुम डागा द्वितीय तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सालेराकला विद्या सुथार तृतीय रही जबकि राबाउमावि आयड़ की भावना चौधरी व अभिनव सी. सै. स्कूल की मनीषा मेघवाल को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

भाषण लेखन प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में सेंट एंथोनी हिरणमगरी की दीक्षा अग्रवाल प्रथम, सेंट पॉल उमावि के ध्रुव द्वितीय व डीपीएस की यशस्वी खांडल तृतीय स्थान पर रही। जबकि सेंट एंथोनीज बलीचा के गगनेश गौड़, सिडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल के कुशाग्र शर्मा, डीपीएस की अवनेशा नन्दी व सेंट पॉल उमावि की आफरीन अनीस पलानावाला को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में द स्कॉलर एरीना की विदुषी जैन प्रथम, जबकि सेंट एंथोनीज बलीचा की भूमि अरोड़ा व सेंट मैरीज तितरड़ी की साराह स्तुति जोसफ तृतीय रही। जबकि सेंट मेरीज तितरड़ी की अंशुल मोगरा, सेंट मेरीज उदयपुर की मैत्रेयी शर्मा व सिडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल के मोहित कोठारी को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर पूर्व उपजिला प्रमुख लक्ष्मीनारायण पंड्या व पूर्व डेयरी चेयरमैन जग्गाराम व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी शिवजी गौड़ भी अतिथि के रूप में मौजूद थे।

पृष्ठ 27 का शेष ...

भीकाजी कामा (सितम्बर 1861-13-1936)

मैडम भीकाजी कामा ने आजादी की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभाई थी। इनका नाम इतिहास के पन्नों पर दर्ज है। स्वतंत्रता की लड़ाई में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वो बाद में लंदन चली गईं और उन्हें भारत आने की अनुमति नहीं मिली।

बेगम हजरत महल (1820-07 अप्रेल 1879)

जंगे आजादी के सभी अहम केन्द्रों में अवध सबसे अधिक समय तक आजाद रहा। इस बीच बेगम हजरत महल ने लखनऊ में नए सिरे से शासन संभाला व बगावत की शुरुआत की। लगभग पूरा अवध उनके साथ रहा। उन्होंने मटियाबुर्ज में जंगे-आजादी के दौरान नजरबंद किए गए वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी।

कमला नेहरू (अगस्त 1899-1936)

कमला पं. जवाहर लाल नेहरू से विवाह के बाद जब इलाहाबाद आई तो एक सामान्य कम उम्र की नई नवेली दुल्हन भर थीं। समय आने पर यही लौह महिला साबित हुई, जो धरने-जुलूस में अंग्रेजों का सामना करतीं। भूख हड़ताल करतीं, जेल जातीं। असहयोग व सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़कर हिस्सा लेतीं।

विजयलक्ष्मी पंडित (अगस्त 1900-1990)

वे प्रथम महिला मंत्री, प्रथम महिला राजदूत और भारत की प्रथम महिला थी जो संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था की अध्यक्षा बनीं। वे भारतीय नारी की स्थिति सामाजिक नीतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए निरंतर काम करती रही। वे 1932, 1941 एवं 1942 में तीन बार जेल भी गई थीं। वे पं. मोतीलाल नेहरू की बेटी व पं. जवाहर लाल नेहरू की बहिन थीं।

अरूणा आसफ अली (जुलाई 1909-1996)

अरूणा आसफ अली को भारत की आजादी के लिए लड़ने वाली एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने महात्मा गांधी के साथ नमक सत्याग्रह में भाग लिया और लोगों को अपने साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' की सक्रिय सदस्य थीं।

उषा मेहता (मार्च 1920-अगस्त 2000)

कांग्रेस रेडियो जिसे 'सीक्रेट कांग्रेस रेडियो' के नाम से भी जाना जाता है, इसको शुरू करने वाली उषा मेहता ही थीं। भारत छोड़ो आन्दोलन(1942) के दौरान कुछ वक्त तक कांग्रेस रेडियो काफी सक्रिय रहा था। इस रेडियो के कारण ही उन्हें पुणे की यरवदा जेल में रहना पड़ा। वे महात्मा गांधी की अनुयायी थीं।

पाठक पीठ

'प्रत्यूष' का जुलाई अंक भी पिछले अंकों की तरह ही कुछ खास आलेखों के साथ खास बन पड़ा। पन्नालाल मेघवाल का 'धातु शिल्प की पारम्परिक मूर्तियां' आलेख अच्छा लगा। इसमें उदयपुर के शिल्पकारों की चर्चा से मेवाड़ के शिल्प और शिल्पकारों का संदेश निश्चित रूप से दूर तक पहुंचेगा।

- सनी नाचानी

'शांत भी हो जाओ अग्निकन्या!' सम्पादक जी का आलेख सामयिक और कड़वी सच्चाई को बयां करने वाला रहा। राजनीति के गिरते हुए मूल्य निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

- महेश जेठा

'प्रत्यूष' पिछले सोलह वर्ष से हमारे परिवार का हिस्सा है। यह एक ऐसी पत्रिका है, जिसे परिवार का हर सदस्य पढ़ता है और उसमें उसे अपनी रूचि के अनुसार सामग्री मिल ही जाती है।

- महेश चन्द्र शर्मा

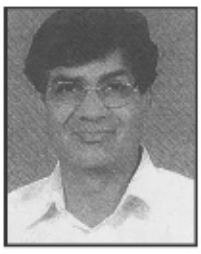

गरुड़िया मगरा(राजसमन्द) के बारे में एक नई जानकारी डॉ. दीपक आचार्य के आलेख के माध्यम से मिली। धन्यवाद

- हीरालाल जैन

सावन में शिवाभिषेक

- पं. शोभालाल शर्मा

सावन मास (17 जुलाई - 15 अगस्त) की शुरुआत में सभी लोक के देवता अपना कार्यभार भगवान भोलेनाथ के हाथों में सौंपकर पाताल लोक में विश्राम कर रहे हैं। इस दौरान भगवान भोलेनाथ, पार्वती के साथ पृथ्वी लोक पर लोगों के दुःख दर्द का हरण करते हैं। इसलिए कहा जाता है कि इस समय पृथ्वीवासियों को पूरी तन्मयता के साथ शुद्ध होकर भगवान का पूजन करना चाहिए। श्रावण माह के इन विशेष दिनों में भगवान शिव का विविध रूपों में शृंगार हो रहा है। श्रद्धालु व्रत-उपवास रख शिव आराधना में लीन हैं। कावड़ यात्रा का दौर भी शुरू हो गया है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार श्रावण माह में ही समुद्र मंथन किया गया। मंथन के दौरान समुद्र से विष निकला। भगवान शंकर ने इस विष को अपने कंठ में उतारकर सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षा की थी। इसलिए इस माह में शिव-उपासना से उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है।

जल चढ़ाने का महत्व

भगवान शिव की मूर्ति व शिवलिंग पर जल चढ़ाने का महत्व भी समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा हुआ है। अग्नि के समान विष पीने के बाद शिव का कंठ एकदम नीला पड़ गया था। विष की ऊष्णता को शांत कर भगवान भोले को शीतलता प्रदान करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने उन्हें जल-अर्पण किया। इसलिए शिव पूजा में जल का विशेष महत्व माना गया है।

शिव स्वयं जल हैं

शिवपुराण में कहा गया है कि भगवान शिव ही स्वयं जल हैं। जो जल समस्त जगत के प्राणियों में जीवन का संचार करता है, वह जल स्वयं उस परमात्मा शिव का रूप है। इसीलिए जल का अपव्यय नहीं वरन उसका महत्व समझकर उसकी पूजा करना चाहिए। याद रखें श्रावण मास में शिव को जल चढ़ाएं लेकिन अनावश्यक जल बहाने से शिव प्रसन्न नहीं हो सकते, क्योंकि शिव स्वयं ही जल हैं।

भोलेनाथ का अभिषेक

सावन मास भगवान शिव का अत्यंत प्रिय महीना है। इस महीने में भगवान शिव का पूजन करने से वे अत्यंत प्रसन्न होते हैं और यदि पूजा में बेलपत्र का प्रयोग किया जाए तो शंकर जी और भी प्रसन्न हो जाते हैं।

- मान्यता है कि बेलपात्र चढ़ाने से शिवजी का मस्तक शीतल रहता है। यदि बेलपत्र में तीन पत्तियां हों तो वो सर्वोत्तम माना जाता है। पत्तियां खराब नहीं होनी चाहिए। बेलपत्र चढ़ाते समय जल की धारा साथ में अर्पित करने से इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।
- सोमवार, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और संक्रांति को बेलपत्र नहीं तोड़ना चाहिए। सावन माह में इन दिनों की पूजा के लिए इन्हें पहले तोड़कर रख लें। बेलपत्र कभी भी खरीदकर लाया गया हो शिवजी पर चढ़ाया जा सकता है। इतना ही नहीं एक बेलपत्र को कई बार धोकर भी चढ़ा सकते हैं।
- कहते हैं जिन घरों में बेलवृक्ष होता हैं वहां शिव-कृपा बरसती है। बेलवृक्ष को घर के उत्तर-पश्चिम में लगाने से यश कीर्ति की प्राप्ति होती है। उत्तर दक्षिण में लगे होने पर सुख शांति और मध्य में होने से घर में धन और खुशियां आती हैं। कुल मिलाकर बेलवृक्ष वैभव प्रदाता है।

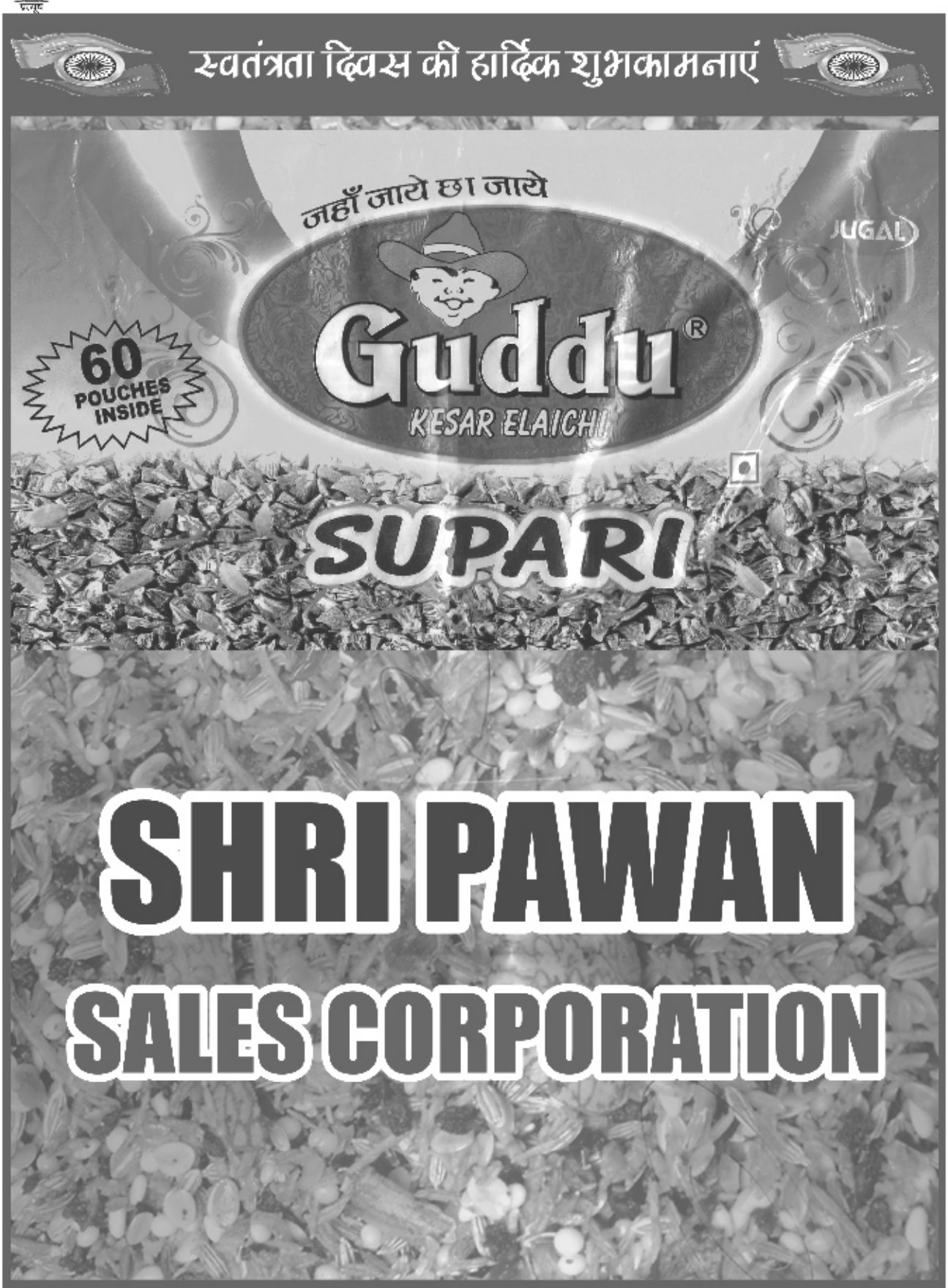

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
जहाँ जाये छा जाये
JUGAL
60 POUCHES INSIDE
Guddu®
KESAR ELAICHI
SUPARI
SHRI PAWAN
SALES CORPORATION
Koliwara, Behind Bapu Bazar, Udaipur (Raj.) 313 001

राजस्थान में प्रतिवर्ष यूं तो कई मेले लगते हैं, जिनमें कुछ खास पशु मेले भी हैं। जिनमें दूरदराज गांवों और राज्यों से पशुपालक और किसान जुटते हैं और उन्नत किस्म के पशुओं की बड़े पैमाने पर खरीद-फरोख्त के साथ-साथ, लोकानुरंजन भी होता है। 15 अगस्त से 14 सितम्बर के बीच लगने वाले ऐसे ही दो मेले का प्रस्तुत आलेख में जिक्र है।

राजस्थान के मशहूर पशु मेले

- भगवती मेनारिया

गौरक्षक देवता के रूप में किसानों और पशुपालकों के पूजनीय लोक देवता वीर तेजाजी की स्मृति में परबतसर(नागौर) में उत्तर भारत का प्रसिद्ध श्री वीर तेजाजी पशु मेला आयोजित किया जाता है, जो प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद अमावस्या (15 से 30 अगस्त) तक लगता है।

तेजाजी का बलिदान राजस्थान के मध्यकाल की एक अविस्मरणीय घटना है। एक प्रचलित लोक कथा के अनुसार नागौर जिले के ग्राम खरनाल में जन्मे वीर तेजाजी अपने ससुराल पनेर (तहसील किशनगढ़) जा रहे थे, उसी समय कुछ डाकू एक ब्राह्मण की गायें छीन कर ले जा रहे थे, चीख पुकार सुनकर तेजाजी गायों को छुड़ाने के लिए डाकुओं के पीछे दौड़ पड़े। इसी दौरान रास्ते में एक सांप ने उनका रास्ता रोक लिया। वह उन्हें काटना चाहता था। इस पर तेजाजी ने उससे विनती की कि पहले वह गायों को डाकुओं से मुक्त करवा लें फिर वे स्वयं सर्पदंश के लिए उपस्थित हो जाएंगे। कहा जाता है कि तेजाजी ने गायों को तो मुक्त करा लिया किन्तु गंभीर रूप से जख्मी भी हो गए। अपने क्षत-विक्षत शरीर को लेकर वे नाग देवता के पास पहुंचे तो उसने उनके रूधिरासिक्त शरीर को काटने से इन्कार कर दिया, इस पर तेजाजी ने अपनी जीभ निकाली जिस पर सांप ने दंतक्षत किया और गौ रक्षक वीर तेजाजी परलोक सिधार गये। पशुपालक-किसान अपने पशुधन की सलामती के लिए तब से लेकर आज तक उनकी पूजा करते आ रहे हैं।

तेजाजी का बलिदान किशनगढ़ के सुरसुरा ग्राम के निकट हुआ था, किन्तु उनका स्मारक स्थल परबतसर खेरिया तालाब के तट पर स्थित है, यही वह स्थान है जहां राजस्थान के पशुपालन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष श्री वीर तेजाजी पशु मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में उन्नत किस्म की गायें-बैल तथा अन्य पशु क्रय-विक्रय के लिए जाते हैं। मेले के दौरान विभिन्न लोक कलाओं का भी कलाकार प्रदर्शन करते हैं। जिससे आम आदमी भी इन मेलों से जुड़कर अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं, मान्यताओं और कलाओं से रूबरू हो सके।

गोगामेड़ी पशु मेला

हिन्दू, मुस्लिम एकता के प्रतीक लोक देवता गोगाजी की स्मृति में प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा (15 अगस्त से 14 सितम्बर) तक श्री गोगामेड़ी(हनुमानगढ़) पशु मेले में वीर गोगाजी की समाधि तथा गोगा वीर व जाहर पीर के जयकारों के साथ गोगाजी तथा गोरखनाथ के प्रति भक्ति की अविरल धारा बहती है। अत्यन्त पावन एवं प्रसिद्ध गोगामेड़ी नामक यह स्थान हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील में पड़ता है, जहाँ भारी तादाद में ऊंटों की खरीद-फरोख्त होती है।

गुरु गोरखनाथ के परम शिष्य गोगा जी का जन्म चुरू जिले के ददेरवा गांव में हुआ था। गोगाजी, गुरुभक्त होने के साथ-साथ वीर योद्धा एवं कुशल राजा भी थे। गोगाजी राजस्थान के पांच पीरों में से एक माने जाते हैं, मुस्लिम इन्हें जाहर पीर या गोगा पीर नाम से मानते हैं। श्री गोगामेड़ी लोक देवता गोगाजी का समाधि स्थल है। सिद्ध पुरुष के रूप में पूजे जाने वाले गोगाजी के देवरे गांव-गांव में मिल जाएंगे लेकिन गोगामेड़ी उनका सबसे बड़ा पवित्र धाम माना जाता है। यहां राजस्थान के अलावा उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली तथा दूसरे प्रान्तों के लाखों श्रद्धालु आते हैं। श्री गोगामेड़ी पशु-मेले की खास बात यह है कि वहाँ सर्वधर्म सद्भाव का सुंदर दृश्य देखने को मिलता है जहाँ सभी धर्मों के लोग अपनी आस्था प्रकट करते हैं। भक्तजन गुरु गोरखनाथ के टीले पर जाकर शीश नवाते हैं, फिर गोगाजी के मंदिर में मत्था टेक मन्नत मांगते हैं। यह मेला पशुओं की खरीद-फरोख्त से व्यापारिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ है। इन दोनों ही मेलों में दूर-दराज से व्यापारी भी आते हैं, जिनके पास घरेलु व कृषि उपयोग के सामान के साथ ही दैनन्दिन उपयोग की वस्तुएं होती हैं।

Happy Independence Day

Bhupendra Jain 9829009791

NEW MANGLAM TENT HOUSE

❁ Iron & Bangali Stage ❁ Tent ❁ Light ❁ Catering ❁ Flower Decoration ❁ New Bister Set

43, Dholi Bawri, Udaipur-313001 (Raj.) Ph. : 0294-2560009 (S)

Res. : Azad Chowk, Bedla, Udaipur - 313001 (Raj.) Ph. : 0294-2440094

टीएमसी का केन्द्र से टकराव राज्य हित में नहीं

खौफजदा ममता बनर्जी ने विपक्षी दलों को भाजपा के खिलाफ उनके साथ आने को कहा

– नंद किशोर

संविधान में केन्द्र राज्य सम्बन्धों को लेकर तमाम जरूरी प्रावधान करते हुए यही अपेक्षा की गई है कि ये दोनों परस्पर समन्वय और समझ के साथ राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनेंगे। पश्चिम बंगाल इस समय लगातार चर्चा में बना हुआ है, मगर चर्चा के कारण नकारात्मक हैं। बीते दिनों डॉक्टरों पर हमले के बाद राज्य सरकार के अड़ियल रूख से उनकी हड़ताल का जो दुखद प्रकरण घटित हुआ, उसका असर पूरे देश में दिखाई दिया। शुरुआत में डॉक्टरों के प्रति अनावश्यक सख़्ती दिखाने के बाद अन्ततोगत्वा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को उनके आगे झुकना पड़ा और मांगे माननी पड़ीं। इसी तरह राज्य में जारी राजनैतिक हिंसा की घटनाओं को भी रोकने में देर की गई तो इसके परिणाम राज्य और टीएमसी के लिए कुछ ठीक नहीं होंगे।

पश्चिम बंगाल में हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। कभी किसी राजनैतिक दल तो कभी किसी दल के कार्यकर्ता पर हमले और उसकी मौत की खबर आ जाती है। खबरें तो यह भी हैं कि यह हिंसा बांग्लादेशी घुसपैठिए और रोहिंग्याई मुसलमानों द्वारा की जा रही हैं। हिंसक घटनाओं, खबरों और अफवाहों के इस दौर में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी मौन हैं और राज्य सरकार पूरी तरह निष्क्रिय है। इस मामले में मुख्यमंत्री से यदि सवाल भी होता है तो वे सिर्फ यह कहकर चुप हो जाती हैं कि यह बाहरी तत्वों की साजिश है। यदि हिंसा का यह माहौल बाहरी तत्वों की साजिश भी है तो क्या कोई कार्रवाई नहीं होनी चाहिए? गृह मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक बीते वर्षों के दौरान राज्य में राजनीतिक हिंसा की घटनाओं में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष 2017 में जहां प. बंगाल में 509 राजनीतिक हिंसा की घटनाएं हुई थीं, वहीं 2018 में यह आंकड़ा 1035 तक जा पहुंचा, जबकि चालू वर्ष के इन सात महीनों में 700 से अधिक हिंसा की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। केन्द्र सरकार के उस दिशा-निर्देश को भी मुख्यमंत्री और उनकी सरकार गंभीरता से नहीं ले रही है, जिसमें हिंसा रोकने और दोषियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया है।

दरअसल इस साल हुए लोकसभा चुनाव में प. बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की जीत एक सीट से बढ़ते हुए 18 तक पहुंचने पर ममता बनर्जी भाजपा की केन्द्र सरकार के साथ टकराव के रास्ते पर आ गई हैं।

हिंसात्मक घटनाएं

अभी बीते लोकसभा चुनाव और उससे पूर्व पंचायत चुनाव में ही बंगाल में जो हिंसात्मक घटनाएं हुईं, वे राज्य की कानून व्यवस्था की कलई खोलने के लिए काफी हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या और उन पर हमले के जो मामले सामने आए हैं वे ममता सरकार के अपराध एवं अपराधियों के आगे बेबस हो चुकी कानून व्यवस्था की ही कहानी कहते हैं। इसके अलावा मालदा, धूलागढ़, रानीगंज, आसनसोल सहित राज्य के अनेक क्षेत्रों में सांप्रदायिक टकराव की घटनाएं भी यही बताती हैं कि अराजकता और अशांति बंगाल की नियति बन गई है।

विरोध की राजनीति

ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली में केन्द्र से टकराव की जो राजनीति केजरीवाल सरकार करती रही है, बंगाल में ममता सरकार उससे भी दो कदम आगे निकल चुकी है। वर्ष 2014 में जब केन्द्र में भाजपा की सरकार आई उसके बाद से ही केन्द्र से उनके संबंध बिगड़ने शुरू हो गए। कोई भी विषय हो वे आंख बंद करके केन्द्र के विरोध में उतर जाती हैं।

जमीन खिसकने का डर

दरअसल बंगाल में भाजपा के बढ़ते जनाधार और राजनीतिक सफलताओं को देखते हुए कहीं न कहीं ममता बनर्जी को यह लगने लगा है कि राज्य में उनकी राजनीतिक जमीन खिसक रही है। शायद इसी कारण उन्होंने अपनी राजनीति को भाजपा विरोधी मोड़ दे दिया है। किसी भी बात पर वह भाजपा और उसके नेतृत्व वाली सरकार का विरोध करने का मौका नहीं छोड़तीं। केन्द्र की योजनाओं को राज्य में लागू कर वे भाजपा को किसी प्रकार का श्रेय नहीं देना चाहती हैं, परन्तु अपनी इस राजनीति के उत्साह में ममता बनर्जी भूल गई हैं कि वे सिर्फ टीएमसी की नेता नहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री भी हैं। केन्द्रीय योजनाओं का लाभ जनता को नहीं देना कतई उचित नहीं है।

राम के नाम से चिढ़ क्यों?

बंगाल में यह भी दिखाई दे रहा है कि वहां की जनता जय श्रीराम का नारा लगाकर ममता बनर्जी को चिढ़ा रही है। सवाल यह है कि जब स्वयं मुख्यमंत्री देश के आराध्य भगवान राम के नाम से चिढ़ रही हैं, तब आम कार्यकर्ता कैसा सोच रखता होगा, यह समझा जा सकता है। भगवान राम पूरे देश की पहचान हैं फिर ममता दी देश की पहचान के साथ क्यों जुड़ना नहीं चाहतीं? महात्मा गांधी तो सरेआम रामराज्य की स्थापना की बात करते थे। रामराज्य का मतलब, भेदभाव रहित समता मूलक समाज की रचना से ही तो है।

यह कैसा प्रस्ताव?

ममता को आगामी विधानसभा चुनावों में सत्ता हाथ से निकलने का डर सता रहा है। विधानसभा चुनाव ज्यादा दूर नहीं हैं। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के साथ गठबंधन से परहेज करने वाली मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुद को भी यह अहसास हो गया है कि वह अधिक दिनों तक अकेली नहीं चल पाएंगी और किसी न किसी दल को बैसाखी बनाना ही पड़ेगा। हार की इस बौखलाहट में साथ आने का उस दल को निमंत्रण दे बैठी जो उसका घोर विरोधी है। जिसको 34 साल की एक छत्र सत्ता को उन्होंने ध्वस्त कर दिया था, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी उनके इस प्रस्ताव को ठुकरा चुकी है, जिसमें उसने भाजपा से मुकाबले के लिए वामदलों एवं कांग्रेस को उनके साथ आने को कहा था। ममता बनर्जी का यह प्रस्ताव वामदलों को चौंकाने वाला था। जो उन्हें हजम नहीं हुआ और ठुकरा दिया। उत्तर प्रदेश का हश्र पूरे देश ने देखा है। दो धुर विरोधी दल सपा बसपा भाजपा के विरूद्ध एक हुए, लेकिन कुछ खास नहीं कर पाए। ऐसे में ममता बनर्जी का यह दांव समझ से परे था। जो फार्मूला उत्तर प्रदेश में पिट गया, वह पश्चिम बंगाल में कैसे सफल हो सकता है? कांग्रेस तो पहले से ही अपने रास्ते पर चल रही थी, अब माकपा नेता सीताराम येचुरी ने भी साफ कर दिया है कि अभी तक वह राज्य में सिर्फ तृणमूल कांग्रेस से लड़ रहे थे। लेकिन अब उसके साथ-साथ भाजपा से भी लड़ेंगे।

भाजपा ने झटके वामदलों के मत : लोकसभा चुनावों में भाजपा ने सबसे ज्यादा वामदलों के मत छीने थे। भाजपा के शानदार प्रदर्शन के बावजूद तृणमूल कांग्रेस न सिर्फ अपने वोट बैंक को बचाने में कामयाब रही है बल्कि उसका मत प्रतिशत करीब साढ़े तीन फीसदी बढ़ा है। जबकि भाजपा का मत प्रतिशत 22 फीसदी बढ़ा है लेकिन उसने वामदलों एवं कांग्रेस के वोट काटे हैं। तृणमूल का मत प्रतिशत अब भाजपा से महज दो फीसदी ही ज्यादा है। इसलिए ममता विधानसभा चुनावों में अपने लिए बड़ी चुनौती पैदा होने के डर से वे तमाम उपाय कर रही हैं, जो उन्हें सत्ता में यथावत रख सकें। उन्होंने माफी अभियान की भी घोषणा की है, जिसमें अपने विधायकों पार्षदों से कहा है कि वे अपनी गलतियों के लिए जनता के बीच जाकर माफी मांगे। उल्लेखनीय है सरकारी योजनाओं के लाभार्थी से टीएमसी विधायकों व कार्यकर्ताओं द्वारा 'कटमनी' लिए जाने से पूरे राज्य में जनता नाराज हैं। इसके लिए माफी की पहल तो मुख्यमंत्री को करनी चाहिए। 'कटमनी' एक तरह से सत्ता की दलाली है। सत्ता में रहने वाली पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं में यह चलन सा हो गया है कि यदि सत्ता से उन्हें सीधे लाभ नहीं मिलता तो वे दलाली के रास्ते पर चल पड़ते हैं, जो अन्ततोगत्वा पार्टी को चुनावों में सत्ता से बाहर करने का माध्यम भी बनता है। बंगाल का तो मिजाज ही कुछ ऐसा है जो हारा व दुबारा सत्ता की चौखट पर नहीं आ सका। 1977 में कांग्रेस हारी, आज तक संभल नहीं पाई। चौंतीस साल तक सत्ता में रहने के बाद 2011 में वामपंथी दल सत्ता से बाहर हुए तो फिर कभी सत्ता की देहरी न चढ़ सके। ऐसी स्थिति में ममता दी को वक्त रहते संभलना चाहिए। जनता के मिजाज का मजाक उड़ाना उन्हें महंगा पड़ सकता है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
M.B.B.S., M.D.
एनेस्थीसीयोलोजिस्ट

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
M.B.B.S., DGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट

संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार के स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

फोन : 0294-2418575, 9829934770, 9829229350, 9571327528

Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com
admin@sanjivanihospitaludaipur.org
Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org

कान्हा का प्रेमराग

कृष्ण वेदना हैं और वेद हैं। संयोग और वियोग हैं, विनियोग व प्रयोग हैं। कृष्ण सम्यक भोग हैं और योग हैं। वे प्रेमी, नेमी, लोक और परलोक हैं..... उन्हें रण जोड़ कहें या रण छोड़ मानें, उनके व्यक्तित्व में जीवन का आनन्द और बोध, दोनों व्याप्त हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर आईये, जानते हैं - ज्ञान व आनंद के स्रोत, प्रेमधाम श्रीकृष्ण के कुछ बिरले प्रसंगों के बारे में।

- सोमदत्त द्विवेदी

संसार में प्रेम की अनेकानेक रूमानी और रोमांचित करने वाली कथाएं हैं, कुछ लोक रंजन हैं, कई काल्पनिक और संचित हैं, लेकिन आह्लादकारी तथ्य ये कि भारतीय भूमि इनसे कभी वंचित नहीं रही। यहां प्रेमासक्ति कथाओं की बेमिसाल परंपरा है। इनमें श्रीकृष्ण से जुड़ी कथाएं अनंत हैं।

एक प्रेमी में जितने भी गुण होने चाहिए, वह सब कृष्ण में हैं। वे आकृष्ट करने के कारण कृष्ण हैं और दूसरे भाव-भूमि में प्रेम की कृषि करने के कारण कान्हा हैं। कृष्ण प्रेम करना सिखाते हैं। कुछ का मानना है कि 'प्रेम में' रस होता है, पर वे और प्रगतिशील हैं, जो समझते हैं कि 'प्रेम ही' रस है! कृष्ण के जीवन में भी प्रेम रस प्रकट रूप से विद्यमान है।

प्रेमी और प्रियतम के मध्य प्रेम तब तक उनको प्रेमी और प्रीतम बनाए रखता है, जब तक उभयतोमुखी धारा नहीं फूट पड़ती, फिर तो कौन प्रेमी, कौन प्रियतम? पहचान ही खो जाती है रह जाता है, एक विशुद्ध, निर्मल, निश्छल प्रेम!

शांत रस में प्रियतम के स्वरूप चिंतन को प्रमुखता दी गई है। कृष्ण ने सिखाया कि दास्य रस स्थाई भाव प्रीति है - जिससे प्रेम होगा, उसके लिए बिना कुछ किए रहा नहीं जा सकता - चाहे गोवर्धन उठाना पड़े, इंद्र-ब्रह्मा से रार ठाननी पड़े, दावानल से गुजरना पड़े, अजगर के मुख में प्रवेश करना पड़े। यही आलंबन सात्विक भावादि में व्यक्त होता है, तब दास्य रस प्रीति में बदल जाता है।

ऐश्वर्य को ताक पर रख कर छकाने का काम किया कृष्ण के सख्य रस रूपी प्रेम ने। खेल में 'के काको गुसैयां?' विल्वमंगल बोले कि 'कनुआ! घोड़ा बनो! तेरी दान है, तेरी पारी है।' कृष्ण अपना ऐश्वर्य भूलकर सखा को कंधे पर ढोते हैं - जैसे कि उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी हो - योगक्षेम वहाम्यहम् - 'तेरी खुशी, तेरी हंसी मैं अपने कांधे पर ढो-ढोकर पहुंचाता रहूंगा, बस तू मुझ पर भरोसा रख!' वह गांव की ग्वारिनों के प्रेम में नाचते हैं - 'ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भर छाछ पै नाच नचावै!'

द्वारिकाधीश कृष्ण सखा के पांवों में गड़े कांटे खुद अपने दांतों से निकालते हैं - वह भूल जाते हैं कि द्वारिकाधीश हैं, प्रेम में बिसर जाता है कि चार मुट्ठी चूड़े के बदले समस्त संपदा देने जा रहे हैं - फिर भी मन में - सखा के लिए क्या और कर दूं? का भाव कचोटता रहता है। कृष्ण अपने सखा अर्जुन के सारथी बन जाते हैं, जैसे कोई चालक, मालिक के निर्देश से गाड़ी चलाए।

'सखा' शब्द के अनेक अर्थों में एक भाव यह भी है, जो मित्रों-सखाओं के साथ खाए, पांचों अंगुलियों के बीच चार तरह का अचार थामे, सखाओं के बीच बैठे बाल कृष्ण को देखिए - वह किसी सखा का कौर-गसिया गप कर लेते हैं, किसी के मुंह में अपना बना-बनाया कौर डालकर खिलखिला पड़ते हैं। प्रबल प्रेम के पाले पड़कर नियम बदलने वाले का नाम है - कृष्ण, संबंधों को संजीदगी, सावधानी, सजगता, सौहार्द प्रदान कर संजोने का नाम है - कृष्ण!

महाभारत युद्ध में भीष्म ने भीषण उग्रता धारण कर ली थी। दुर्योधन की फटकार पर पांडवों में से किसी एक को वीरगति देने की प्रतिज्ञा कर ली। कृष्ण को पता चला। सब सो गए तो उठकर द्रोपदी को जगाया-बोले, 'चलो सखी! कुछ बोलना मत, बस चुपचाप भीष्म दादा को प्रणाम करने चलो!' द्रोपदी चलने लगी तो उसकी पादुकाएं आवाज करने लगीं। नटखट छलिया ने पादुकाएं उतारकर अपने पीताम्बर के आंचल में रख लीं और द्रुपद-पुत्री को सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिलाकर ही लौटे। प्रेमी को एक पुकार पर जो बोल न दे, वह प्रियतम कैसा? गज की सुनी तो ग्राह का ग्रह दूर कर दिया, सभा में वस्त्रावतार बन गए। स्त्री-सम्मान-रक्षा की खातिर रक्षक हुए कृष्ण!

प्रेम का अनुपम रूप प्राकट्य करती एक गोपी कहती है - 'हे कृष्ण!' तुम आ जाओगे तो मेरे हृदय की विरहाग्नि शान्त होगी। तुम्हें देखे बिना मेरे नैन चैन खो चुके हैं, निस-रैन रो चुके हैं, परंतु तुम्हें आने में तनिक भी तकलीफ हो तो मत आना। तुम्हारे न आने से हमें बहुत दुःख होगा पर तुम सुख से हो, यह जानने के बाद वह दुख किसी काम का नहीं? किंचित भी सुख में हो तो वहीं रहना!' सचमुच, अद्भुत हैं प्रेमी कृष्ण और उनके प्रेम में मतवारे सब गोप-गोपियां भी।

प्रेम की माधुर्य मूरत हैं कृष्ण! प्रेम तृप्ति है तो प्यास भी, संयोग है तो वियोग भी! संयोग में वियोग, वियोग में संयोग की दशा प्राप्त कृष्ण अभूतपूर्व हैं। कुंजवन में राधिका-कृष्ण बैठे प्रेम-भरी-चितवन से एक-दूजे को निहार रहे थे।

कृष्ण ने सोचा कि अभी तो वृषभानुलली तनिक देर में बरसाने चली जाएगी। इसके जाने के बाद मैं जीवित रहूंगा? राधाविहीन जीवन से क्या होगा? इसी चिंतन में अचेत हो गए। राधा आकुल-व्याकुल हो पानी का छींटा मार, पल्लू से हवा कर उन्हें चेतना में लाई, पूछा - 'क्या हुआ?' कृष्ण ने सब बता दिया। सुनकर राधा ने सोचा - 'अहा!' यह तो मुझसे इतनी प्रीति करते हैं? मैं निष्ठुर, मर क्यों न गई, लेकिन मरूंगी तो भी इनको तकलीफ होगी!' इसी ऊहापोह में राधिका को वियोग संचार हुआ और श्याम के सामने ही वे अचेत हो गई। श्याम उन्हें होश में लाए तो फिर खुद बेहोश हो गए। जब ऐसा बार-बार हुआ, तब ललिता आदि सखियों ने दोनों को संभाला। सच यही है कि प्रेमी अपने प्रीतम के प्रेम से अपने प्रेम को न्यून मानकर बार-बार विह्वल होता है और इसी तरह जीवन में परम पद प्राप्त कर लेता है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

परतानी नाक कान गला अस्पताल

डॉ. लोकेश परतानी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

डॉ. सीमा परतानी
एम.डी. (एनेस्थिसिया)

डॉ. सुशांत जोशी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

फोन :- 0294-2462150 मोबाइल :-9414162550 (For Appointment and Emergency)

14, नाकोड़ा कॉम्पलेक्स, हंसा पैलेस के पास,
सेक्टर 4, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)
ई-मेल : lpartani@yahoo.com

सुविधाएं

- नाक, कान एवं गले के सभी प्रकार के रोगों की जाँच, इलाज व ऑपरेशन की सुविधा।
- सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा कान व गले के ऑपरेशन की सुविधा।
- मशीन द्वारा कान के सुनने की जाँच (ऑडियोमेट्री एवं इंपिडेंस ऑडियोमेट्री) की सुविधा।
- उच्च तकनीक के डिजिटल श्रवण यंत्र (Digital Hearing Aid)
- नाक, कान एवं गले की एंडोस्कोपी (कम्प्यूटर द्वारा) जाँच की सुविधा।

बिक गई ख़्वाबों की तामीर

पाई-पाई जोड़कर राजकपूर द्वारा निर्मित आर के स्टूडियो की ज़मीन पर 'गोदरेज' लिखेगा नई कहानी

- जगदीश सालवी

हिन्दी फिल्म उद्योग की महत्वपूर्ण धरोहर आर के फिल्म स्टूडियो को देश के एक बड़े उद्योग समूह 'गोदरेज' ने खरीद लिया है। राज कपूर के ख्वाबों की यह तामीर जल्दी ही इतिहास बनकर आवासीय फ्लैट और कारोबारी केन्द्र के रूप में सामने आएगी। पाई-पाई जोड़कर राजकपूर ने इसे 1948 में बॉम्बे (अब मुम्बई) के चेम्बूर इलाके में बनवाया था। इस स्टूडियो में बनी आर के की फिल्म 'बरसात' इतनी चली कि इसकी आमदनी से उन्होंने अपना सारा कर्ज उतार दिया। यह स्टूडियो आर के की तमाम हिट फिल्मों की शूटिंग का गवाह रहा है।

धरोहरों को संभालने के मामले में हमारे देश में प्राय: उदासीनता ही दिखाई देती है। चाहे वे निजी सम्पत्ति हो अथवा सार्वजनिक इमारतें। जब सरकारें खुद अपने अधीन ऐतिहासिक महत्व के भवनों, स्थानों और स्मारकों को ही ठीक से संरक्षित नहीं कर पाती तो क्षेत्र विशेष में इतिहास रचने वाली किसी निजी विरासत को बचाने की एक परिवार से क्या उम्मीद की जाय और क्यों की जाए। हालांकि बॉलीवुड एकजुट होकर कॉपरेटिव बेसिस पर इस धरोहर को बचाने की पहल कर सकता था। किन्तु इस युग में जब सभी अपनी दाढ़ी बुझाने में लगे हों तब उससे भी यह अपेक्षा बेमानी है। मुम्बई आज फिल्म निर्माण का बड़ा केन्द्र है, फिल्मों का कारोबार काफी बढ़ चुका है, फिल्मों में महंगी और अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग होने लगा है। बहुत सारे फिल्म मेकर जगह न मिलने के कारण मुम्बई से बाहर फिल्मांकन के लिए मजबूर हैं, जिसमें खर्च भी ज्यादा बैठता है। अगर आर के स्टूडियो को फिल्म निर्माण के बदलते आयामों के अनुसार विकसित किया जाता तो शायद उसे आज बिकने के लिए बीच बाजार खड़ा न होना पड़ता। पृथ्वी थियेटर के पृथ्वीराज कपूर के पुत्र राजकपूर के ख्वाबों की इस तामीर की उनके पुत्र देखभाल नहीं कर पाए या पारिवारिक परिस्थितियां ही कुछ ऐसी बनी कि चाह कर भी इसे बचाने से नजरें चुराते रहे और अन्तत: इसे बेचने का उन्हें फैसला लेना पड़ा। यह इस परिवार की निजी सम्पत्ति थी और उसके बारे में कोई भी निर्णय लेने का उन्हें पूरा-पूरा अधिकार था। हो सकता है इस सम्पत्ति के स्वामित्व को लेकर परिवार में कुछ पेचीदगियां भी उत्पन्न हुई हों।

बेहतर तो यह होता कि परिवार का कोई सदस्य, फिल्म इण्डस्ट्री अथवा ऐसी कोई कम्पनी इसे लेती जो इसे फिल्म उद्योग की वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप नया रूप देती। यह इसलिए जरूरी था क्योंकि आर के और उनके स्टूडियो में देश के फिल्मोद्योग का दिल धड़कता था। कई ऐसे देश हैं, जहां महत्वपूर्ण निजी विरासतों को संभालने में सरकारें दखल देती हैं, लेकिन दुर्भाय से हमारे यहां ऐसी कोई रीति-नीति नहीं है। यही वजह है कि समय की मार में ऐसी कई धरोहरें बिला गईं। इसलिए ऐसे मामलों में अब कोई व्यवहारिक नीति बननी ही चाहिए।

बेचने की मज़बूरी

गोदरेज समूह ने और न ही कपूर परिवार ने यह खुलासा किया है कि 70 वर्ष पुराने स्टूडियो का सौदा कितने में हुआ ? समूह ने यह संकेत ज़रूर किया कि स्टूडियो की 33000 वर्गफीट(दो एकड़ से ज़्यादा) ज़मीन का इस्तेमाल लग्ज़री फ्लैट और औद्योगिक परिसर बनाने में किया जाएगा।

कपूर खानदान के कुछ लोगों की आंखें इस सौदे के कागज़ात तैयार होते ज़रूर नम हुई होंगी। राजकपूर के बड़े बेटे रणधीर कपूर सौदा होने से पहले तक अपना काफी समय स्टूडियो में ही बिताते हुए वहां के दैनन्दिन कार्यों की देखभाल करते थे। कपूर खानदान की बहू यानि राजकपूर के छोटे भाई शशिकपूर की पत्नी जेनिफर कपूर जब तक जीवित रहीं, स्टूडियो में नाटकों का मंचन कर विरासत को बचाए रखने का प्रयास करती रहीं। इण्डस्ट्री के जानकारों का कहना है कि बॉलीवुड अब मुम्बई के पश्चिमी हिस्से में चला गया है। बहुतों के लिए मुम्बई पूर्व में स्थित आर के स्टूडियो तक सफ़र करना मुमकिन नहीं हो रहा था। स्टूडियो की बुकिंग नाममात्र की होती थी। जबकि स्टूडियो के रखरखाव का खर्च ही एक सफेद हाथी के पालने जैसा था। राजकपूर के दूसरे बेटे ऋषि कपूर जो अमेरिका में उपचाराधीन हैं के अनुसार भाई रणधीर कपूर, छोटे भाई राजीव(राम तेरी गंगा मैली) बहन ऋतु और रीमा के साथ माँ कृष्णाराज ने संयुक्त रूप से इस विरासत को बेचने का फैसला किया। यह वही स्टूडियो है जहां राजकपूर होली पर धमाल किया करते थे और सारा बॉलीवुड इस दिन यहां सिमट आता था। अब न वह स्टूडियो रहेगा और न ही वे नज़ारे। इसके बिकाव की बातें तो उसी दिन से शुरू हो गई थीं, जब 2017 में एक टीवी शो की शूटिंग के दौरान सेट पर लगी आग ने स्टूडियो को भारी नुकसान पहुंचाया था।

आरके के बेनर तले बनी दो यादगार फिल्में 'बरसात' व 'मेरा नाम जोकर'

कालजयी फिल्में दीं इस जगह ने : आर के बैनर तले इस स्टूडियो में 'आग', 'बरसात', 'आवारा', 'श्री 420', 'जिस देश में गंगा बहती है', 'मेरा नाम जोकर', 'बॉबी', 'सत्यम शिवम् सुन्दरम्', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी सुपरहिट फिल्में बनी थी। राज कपूर का 1988 में जब निधन हुआ था, तो उनके बड़े बेटे रणधीर कपूर ने इसका जिम्मा संभाला। इसके बाद उनके भाई राजीव कपूर ने यहीं 'प्रेम ग्रंथ' का निर्देशन किया था। इस स्टूडियो में बनी आखिरी फिल्म थी 'आ अब लौट चलें।'

उसके बाद अभिनेता ऋषि कपूर ने नई तकनीक के साथ इसके पुनर्निर्माण की इच्छा जाहिर की थी। लेकिन उनके बड़े भाई रणधीर कपूर को यह व्यावहारिक नहीं लगा। दरअसल, यहां शूटिंग करने वाले कम होते जा रहे थे। आर के स्टूडियो को बेचने के फैसले पर ऋषि कपूर ने कहा कि, 'हमने अपने दिलों पर पत्थर रखकर और सोच समझकर यह फैसला लिया है। हम सभी भाई एक-दूसरे से काफी जुड़े हैं, लेकिन हमारे बच्चे और पोते क्या ऐसा कर पाएंगे ? हम नहीं चाहते कि हमारे पिता के प्यार की निशानी किसी कोर्ट रूम का ड्रामा बने।'

> चेंबूर में आर के स्टूडियो हमारे परिवार की महत्वपूर्ण धरोहर रही है। अब इस संपत्ति पर नई कहानी गढ़ने के लिए हमने गोदरेज को चुना है।
>
> - रणधीर कपूर

शोमेन राजकपूर अपने व भाइयों के परिवार के साथ

संयम-साधना के प्रतीक : दशलक्षण

डॉ. महावीर प्रसाद जैन

भारत धार्मिक सहिष्णुता वाला देश है। यहाँ अनेक मत के लोग रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की आस्था किसी न किसी मत से जुड़ी है। वे अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्म का अनुसरण करते हैं। उसी में आनन्द की अनुभूति करते हैं। सभी मतों में कुछ विशिष्ट पर्व हैं।

पर्व दो प्रकार के हैं - 1. शाश्वत 2. सामयिक।

इन्हें त्रैकालिक और तात्कालिक भी कह सकते हैं। तात्कालिक पर्व भी दो प्रकार के हैं - 1. व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित 2. घटना विशेष से सम्बन्धित।

दीपावली, महावीर जयन्ती, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि पर्व व्यक्ति विशेष से संबंध रखने वाले पर्व हैं, क्योंकि दीपावली और महावीर जयन्ती क्रमश: महावीर के निर्वाण और जन्म से संबंध रखती है और रामनवमी और जन्माष्टमी राम और कृष्ण के जन्म से संबंधित है।

घटना विशेष से संबंधित पर्वों में रक्षाबंधन, अक्षय तृतीया, होली आदि पर्व आते हैं, क्योंकि ये प्रसिद्ध पौराणिक घटनाओं से संबंद्ध रखने वाले हैं। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस इतिहास से प्रेरित राष्ट्रीय पर्व हैं।

त्रैकालिक अर्थात् शाश्वत पर्व न तो किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित होते हैं और न घटना विशेष से। ये तो आध्यात्मिक भावों से संबंधित होते हैं। दशलक्षण महापर्व एक ऐसा ही त्रैकालिक शाश्वत पर्व है जो आत्मा के क्रोधादि विकारों के अभाव के फलस्वरूप प्रकट होने वाले उत्तमक्षमादि भावों से संबंध रखता है।

दशलक्षण महापर्व सम्प्रदाय विशेष का नहीं, सब का है। भले ही उसे मात्र सम्प्रदाय विशेष के लोग ही क्यों न मनाते हों, पर वह साम्प्रदायिक पर्व नहीं हैं, क्योंकि वह साम्प्रदायिक भावनाओं पर आधारित नहीं है, उसका आधार सार्वजनिक है। विकारी भावों का परित्याग एवं उदात्त भावों का ग्रहण ही उसका आधार है, जो सभी के लिए समान रूप से हितकारी है। अत: यह पर्व मात्र जैन समुदाय का नहीं बल्कि जन-जन का पर्व है।

कालचक्र की दृष्टि से अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में छह-छह काल होते हैं। प्रत्येक अवसर्पिणी काल के अन्त में जब पंचम काल समाप्त और छठा काल आरंभ होता है तब लोग अनार्यवृत्ति धारण कर हिंसक हो जाते हैं। उसके बाद जब उत्सर्पिणी आरंभ होती है और धर्मोत्थान का काल पकता है तब श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से सात सप्ताह (49 दिन) तक विभिन्न प्रकार की बरसात होती है, जिसके माध्यम से सुकाल पकता है और लोगों में पुन: अहिंसक आर्यवृत्ति का उदय होता है। एक प्रकार से धर्म का उदय होता है। और उसी वातावरण में दस दिन उत्तमक्षमादि दश धर्मों की विशेष आराधना की जाती है तथा इसी आधार पर हर उत्सर्पिणी में यह महापर्व चल पड़ता है।

श्रावण कृष्ण एकम से 49 दिन तक 7 प्रकार की 7-7 दिन शुभ वर्षाएं होती हैं। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तक। फिर भाद्रपद शुक्ल पंचमी को अमृत की वर्षा होती है। यही भाद्रपद शुक्ल पंचमी में आगे शुक्ल-चौदस तक दशलक्षण महापर्व मनाया जाता है।

वर्ष में तीन बार यह महापर्व भाद्रपद शुक्ल 5 से 14 तक, माघ शुक्ल 5 से 14 तक और चैत्र शुक्ल 5 से 14 तक। परन्तु सारे देश व विदेश में विशाल रूप से यह बड़े उत्साह के साथ भाद्रपद शुक्ल 5 से 14 तक ही मनाया जाता है।

आत्मा में दस प्रकार के सद्भावों (गुणों) के विकास से संबंधित होने से ही इसे दशलक्षण महापर्व कहा जाता है। इसे दश धर्म भी कहते हैं। ये दश धर्म हैं - 1. उत्तम क्षमा 2. उत्तम मार्दव 3. उत्तम आर्जव 4. उत्तम शौच 5. उत्तम सत्य 6. उत्तम तप 8. उत्तम त्याग 9. उत्तम आकिंचन्य 10. उत्तम ब्रह्मचर्य।

ये दश धर्म नहीं, धर्म के दशलक्षण हैं, जिन्हें संक्षेप में दशधर्म शब्दों से अभिहित कर दिया गया है। जिस आत्मा में आत्मरुचि, आत्मज्ञान और आत्मलीनता रूप में धर्म पर्याय प्रकट होती है। उसमें धर्म के दशलक्षण सहज प्रकट हो जाते हैं। ये आत्मा ..... के फलस्वरूप प्रकट होने वाले धर्म हैं, लक्षण हैं, चिह्न हैं।

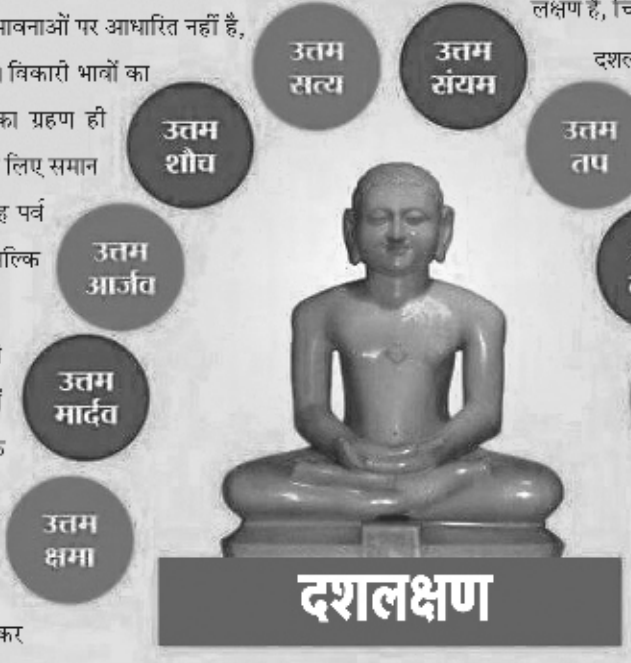

दशलक्षण महापर्व ऐसा पर्व है जो परमोदात्त भावनाओं का प्रेरक, वीतरागता का पोषक तथा संयम व साधना का पर्व है। इन दस दिनों में जैन अनुयायी व्रत-उपासादि, दान, त्याग, स्वाध्याय के द्वारा अपना समय व्यतीत करते हैं। बालक से लेकर वृद्ध तक सभी लोगों के मन में संयम के प्रति आकर्षण होता है, वे इन दिनों में कुछ न कुछ त्याग करते ही हैं। पूरा दिन संयम व साधना में ही व्यतीत करते हैं। इसलिए इस पर्व को संयम व साधना का पर्व कहा गया है।

रक्षा की डोर में स्नेह की मिठास

भारत में रक्षाबंधन का त्योहार अत्यंत उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। यही वजह है कि विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के परिवार भी इसे बड़े ही उल्लास से मनाते हैं। इस दिन हर घर में तरह-तरह के पकवान, मिठाइयां बनती हैं। भाई-बहन के स्नेह व ममता की डोर में बंधे इस पर्व पर बहनें अपने भाई के लिए उपहार स्वरूप विभिन्न प्रकार की मिठाइयां लेकर घर आती हैं। आप भी अपने भाइयों व मेहमानों के लिए बना सकती हैं, कुछ खास मिठाइयां, बहुत ही आसान तरीके से।

-पुष्पा जांगिड़

काजू गुझिया

सामग्री :

खोल के लिए : मैदा-250 ग्राम, वनस्पति घी - 65 ग्राम।

भरावन के लिए : काजू छोटे-छोटे टुकड़े - 200 ग्राम, कुटी मिश्री-50, किशमिश-20 ग्राम, नारियल चूरा-50 ग्राम।

तलने के लिए : वनस्पति घी या रिफाइंड तेल आवश्यकतानुसार

विधि : मैदे में घी मिलाकर मैश करें। आवश्यकतानुसार पानी डालकर कड़ा गूंध लें। गीले कपड़े से ढंककर रख दें। भरावन सामग्री को मिला लें। तैयार मैदे की छोटी-छोटी पेड़ियां बनाकर पतली गोल पूरी बेल लें। प्रत्येक पूरी को गुझिया के सांचे में रखकर भरावन सामग्री भरें। फोल्ड करके सांचा दबा दें। मंदी आंच पर हल्की ब्राउन होने तक गुझिया तलें।

बेसन मोदक

सामग्री : 2 कटोरी बेसन, आधी कटोरी घी, 1 कटोरी पिसी चीनी, 25 काजू, 20 बादाम, 1 टी स्पून इलायची पाउडर।

विधि : सबसे पहले बेसन को छानकर रख लें। काजू-बादाम के टुकड़े कर लें। आंच पर घी को एक कड़ाही में पिघलाएं। बेसन मिलाएं और घी के पककर सुगंध देने तक धीमी आंच पर भूनें, इस भुने हुए बेसन में इलायची पाउडर मिलाएं और काजू-बादाम डालें। अच्छी तरह मिलाकर आंच से उतार लें। इस मिश्रण को कुछ देर ठण्डा होने दें अंत में इसमें पिसी हुई चीनी डालें और अच्छी तरह मिला लें। अब इसके गोल गोल लड्डू बनाकर सुनहरे बरक से सजा दें।

बूंदियों के मोदक

सामग्री : 400 ग्राम शुद्ध बेसन, 400 ग्राम चीनी, 1 कटोरी शुद्ध घी, आधा ग्राम केसर, एक चुटकी बैकिंग पाउडर, 1 टी स्पून इलायची पाउडर, 50 ग्राम किशमिश व काजू टुकड़ी मिक्स।

विधि : बेसन में बेकिंग पाउडर अच्छी तरह मिलाकर, छानकर घी और दूध मिलाकर घोल बनाएं। आंच पर कड़ाही में घी गर्म करें। एक झारी (चलनी) द्वारा बेसन का घोल गर्म-गर्म घी में छानें (एक चम्मच से बेसन का घोल हिलाएं) बूंदियों को सुनहरा तल लें। अच्छी तरह पक जाने पर झारी से निकालकर एक छोटी परात में रख दें। चीनी की तीन तार की चाशनी बनाएं, इसमें केसर व इलायची पाउडर मिलाएं। थोड़ा ठण्डा हो जाने पर छोटे-छोटे गोल मोदक (लड्डू) बनाएं। इन्हें किशमिश व काजू टुकड़ों से सजाकर, चांदी के बरक लगाकर एक थाली में जमा लें।

मावा पेठा रोल्स

सामग्री :

अंगूरी पेठा-आधा किलो, सिका मावा-2 बड़े चम्मच, पिस्ता, बादाम कतरन-2 छोटे चम्मच, इलायची पाउडर, चैरी।

विधि :

पेठे का रस साफ करें। चाकू से इस तरह पतला गोल काटते जाएं कि आयताकार हो जाए। बाकी सारी सामग्री मिला लें और इसे आयताकार पेठा में मिश्रण एक तरफ रखते हुए रोल करें। झटपट मावा पेठा रोल्स तैयार है।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शीशपाल शर्मा

मेष

बौद्धिक क्षमता का विकास होगा, बैंक से जुड़े लेन-देन सतर्कतापूर्वक करने होंगे, धर्म-कर्म में रूचि बढ़ने का लाभ होगा, सन्तान पक्ष से सुखद समाचार, अपने कार्यों से लोगों को प्रभावित करेंगे, आर्थिक पक्ष संतुलित व स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। नौकरी के लिए प्रयत्नशील जातकों को लाभ मिल सकता है।

वृषभ

धार्मिक यात्रा पर जाने का अवसर प्राप्त होगा, कार्य की योजना बेहतर ढंग से बनाएं, किसी अच्छे व्यक्ति से मुलाकात हो सकती है, आर्थिक दृष्टि से यह माह उत्तम है। लोगों से आर्थिक सम्बन्ध मजबूत होंगे। एसिडिटी की समस्या परेशान कर सकती है, व्यवसाय में प्रगति होगी पर उधारी से बचें।

मिथुन

मित्र/सम्बन्धी/निवेशक आप से ज्यादा मांग कर सकते हैं, क्षमता से अधिक का वादा न करें, दूसरों को खुश रखने में आप खुद परेशान हो जाएंगे, कोई नया कार्य फिलहाल टालें, घर में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं, आर्थिक पक्ष कष्टकारक रहेगा, आंखों में परेशानी उभर सकती है। व्यापार में असामान्य स्थिति किन्तु नौकरीपेशा के लिए समय ठीक है।

कर्क

घनिष्ठ लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा, शोध कार्य में लगे जातकों को अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे, सामाजिक दायित्वों की पूर्ति होगी, आर्थिक पक्ष परेशानी भरा हो सकता है, पैरों से सम्बन्धित समस्या परेशान कर सकती है, नौकरी पेशा लोगों की तरक्की संभव, व्यवसाय में जीवन साथी की सलाह से कार्य करें। स्वभाव में उग्रता को नियन्त्रण में रखना ही श्रेष्ठ रहेगा।

सिंह

यह माह उत्तम फलदायी है। ऊर्जा से लबरेज रहेंगे, समस्या समाधान के लिए आतुर रहेंगे, आय पक्ष सुदृढ़ होगा। व्यवसायिक यात्राएँ फायदेमंद रहेंगी, पुराने रोगों से राहत सम्भव है, व्यवसाय में परिवर्तन या उसे आगे बढ़ाने पर विचार, वैवाहिक जीवन सामान्य, सन्तान से संतुष्टता, भाग्य का पूर्ण सहयोग।

कन्या

अपने ही निकटवर्तियों से सम्बन्ध मधुर रखें अन्यथा आर्थिक हानि की संभावनाएं हैं। आलस्य नुकसानदेह हो सकता है, गुप्त शत्रु सक्रिय होंगे। किसी व्यक्ति द्वारा आर्थिक सहयोग का प्रस्ताव प्राप्त हो सकता है, रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे, नौकरी वाले परेशानियों से जूझ सकते हैं, व्यापार यथावत रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा।

तुला

जीवन साथी का अविश्वास परेशान कर सकता है तो रिश्तेदार द्वारा उत्पन्न समस्या व्यथित कर सकती है। नया आर्थिक करार आपको लाभ पहुंचाएगा। संतान पक्ष परेशानी का सबब बन सकता है, स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
1.8.2019	श्रावण कृष्णा 30/1	हरियाली अमावस्या
3.8.2019	श्रावण शुक्ला 3	श्रावणी तीज
5.8.2019	श्रावण शुक्ला 5	नाग पंचमी
7.8.2019	श्रावण शुक्ला 7	गो. तुलसीदास जयंती
12.8.2019	श्रावण शुक्ला 12	ईदुलजुहा
15.8.2019	श्रावण शुक्ला 15	स्वतंत्रता दिवस/ रक्षाबंधन
18.8.2019	भाद्रपद कृष्णा 3	सातुड़ी तीज
24.8.2019	भाद्रपद कृष्णा 8	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
25.8.2019	भाद्रपद कृष्णा 9	नन्दोत्सव
27.8.2019	भाद्रपद कृष्णा 12	वत्स द्वादशी

वृश्चिक

यह माह उत्तम फलदायी है, परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में किया गया प्रयास सफलता दिलाएगा, नये विचार एवं नई सोच के साथ नए कार्यों का सृजन होगा। किसी बुजुर्ग एवं प्रभावी व्यक्ति का मार्गदर्शन लाभ दिलाएगा। व्यापार अथवा नौकरी में सफलता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन सामान्य।

धनु

माह का पूर्वार्द्ध कशमकश भरा रहेगा, उत्तरार्द्ध में हर्षोल्लास, आप अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रहेंगे, प्रबल इच्छाशक्ति में वृद्धि होगी, अपने लोगों के द्वारा सहयोग एवं सान्निध्य मिलेगा, परिश्रम के अनुपात में आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

कार्य क्षेत्र में विवेकपूर्वक आरंभ नये कार्य लाभप्रद सिद्ध होंगे, अपनी ऊर्जा का भरपूर लाभ उठाएं, संवाद बराबर बनाये रखें, व्यवसाय के अनुकूल समय है। वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा, रूका हुआ धन प्राप्त होने से आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, संतान पक्ष से हर्षोल्लास, भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, स्थिर कार्यों पर ध्यान दें।

कुम्भ

मित्रों के सहयोग से प्रसन्नचित रहेंगे, कला के जगत में प्रयासरत जातकों को खुशखबरी मिल सकती है, बैंक से जुड़े लेन-देन सावधानीपूर्वक करें, आय की अपेक्षा खर्च अधिक रहेगा, व्यापार के लिए असहज स्थिति, नौकरीपेशा जातक राहत महसूस करेंगे, वैवाहिक जीवन में मनमुटाव व सन्तान पक्ष से विवाद संभव।

मीन

परिवार में किसी सदस्य से कहासुनी होने से मन बोझिल हो सकता है, धैर्य एवं शान्त मन से काम लेवें। भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, कार्य क्षेत्र में विक्षोभ की सम्भावनाएं, सन्तान की ओर से शुभ समाचार, आय पक्ष सामान्य, वैवाहिक जीवन में खुशी।

उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में राजस्थान

उदयपुर। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् के सदस्य सचिव प्रो. कुमार रत्नम ने कहा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षा में राजस्थान को उचित स्थान देने का निर्णय लिया है। इसके तहत यूजीसी पाठ्यक्रम तैयार कर रहा है। वे गत दिनों राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड विवि और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के साझे में 'महाराणा कुंभा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के संगठन सचिव डॉ. बी एम पांडेय ने कहा कि हमारे जीवन और राष्ट्र को दिशा देने वाली विभूतियों की जीवनियां भारतीय इतिहास से बाहर हो गई हैं। अनुचित विषयों को इतिहास में जोड़ा जा रहा है।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि प्रदेश में जितने दुर्ग हैं वो महाराणा कुंभा ने बनवाए हैं। चित्तौड़ दुर्ग के सारे दरवाजे कुंभा की ही देन है तो कुंभलगढ़ का दुर्ग अपने आप में अद्वितीय है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. अरविन्द जामखेडकर और प्रो. के. एस. गुप्ता ने भी विचार रखे।

ऑस्ट्रेलिया के डॉक्टरों ने जानी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति

उदयपुर। आयुर्वेद विभाग राजस्थान के रेल मॉडल राजकीय आदर्श आयुर्वेद औषधालय में ऑस्ट्रेलिया के नेचुरोपैथी के डॉक्टर्स का दल पिछले दिनों औषधालय की गतिविधियों से रूबरू हुआ। चिकित्साधिकारी वैद्य शोभालाल औदिच्य ने बताया कि दल प्रमुख रेने जेन्स और पूजा पालीवाल के नेतृत्व में आए दल ने तीन दिन तक पंचकर्म यूनिट में इस विधा को बारीकी से समझा। वे औषधालय की गतिविधियों को देख अचंभित हुए। वैद्य संजय माहेश्वरी ने आयुर्वेद का इतिहास, मुख्य पुस्तकें, प्रमुख आचार्य, पंचमहाभूत, त्रिदोष सिद्धांत, धातु, मल, अग्नि, प्रकृति परीक्षण, बेसिक आयुर्वेद आदि के बारे में विस्तार से उन्हें बताया।

महात्मा महासभा ने ली शपथ

उदयपुर। अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन महात्मा महासभा संस्थान का राष्ट्रीय शपथ ग्रहण समारोह गत दिनों शुभ केसर गार्डन में हुआ। मुख्य अतिथि महावीर जैन परिषद् के संयोजक राजकुमार फत्तावत, विशिष्ट अतिथि देहात कांग्रेस के जिलाध्यक्ष लालसिंह झाला, डॉ. के. एस. मोगरा व डॉ. शैलेन्द्र हिरण थे। समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष विष्णुकान्त महात्मा, उपाध्यक्ष महेन्द्र जैन, महामंत्री महेन्द्र जैन, सम्पत कुमार महात्मा, प्रकाश महात्मा, चित्तौड़गढ़ के योगेश महात्मा, रमेश महात्मा, हितैष जैन, कोषाध्यक्ष बहादुरसिंह, मनीष सुराणा, सहमंत्री अरविन्द महात्मा, संगठन मंत्री प्रकाशचन्द्र सुराणा सहित टीम को शपथ दिलाई गई। निवर्तमान उपाध्यक्ष बैंगलोर के अक्षय जैन, विष्णुकान्त महात्मा व वीरेन्द्र महात्मा ने भी विचार व्यक्त किए। महामंत्री महेन्द्र जैन ने आभार जताया। निवर्तमान वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. ओ. पी. महात्मा ने संचालन किया।

शर्मा ने उपनिदेशक का पदभार संभाला

उदयपुर। राजस्थान जनसम्पर्क सेवा के 2005 बैच के अधिकारी कमलेश शर्मा ने पिछले दिनों सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय उदयपुर में उपनिदेशक का पदभार संभाला। बांसवाड़ा से स्थानान्तरित होकर आए शर्मा पूर्व में भी इस कार्यालय में उपनिदेशक पद पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। एक अच्छे लेखक होने के साथ-साथ शर्मा पर्यावरण प्रेमी और पक्षी विशेषज्ञ भी हैं। इस अवसर पर सहायक निदेशक गौरीकान्त शर्मा व स्टाफ के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

'अणबोली टीस' का विमोचन

उदयपुर। तरुण कुमार दाधीच का राजस्थानी भाषा में रचित खंड काव्य 'अणबोली टीस' का लोकार्पण पिछले दिनों यहां शीर्ष साहित्यकारों नारायण सिंह पीथल, बसंत सिंह सोलंकी, आईदान सिंह भाटी, मनोहर सिंह खड़गावत, ओम थानवी, मधु आचार्य, नितिन गोयल, शिवदान सिंह जोलावास की उपस्थिति में हुआ। दाधीच ने बताया कि यह पुस्तक उनकी हिन्दी में लिखे खंडकाव्य 'मौन स्पंदन' का अनुवाद है।

जिंक को भामाशाह पुरस्कार

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की पांच इकाईयों चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर, राजपुरा दरीबा कॉम्पलेक्स, जावर माइंस, रामपुरा आगूचा खान और देबारी स्मेल्टर को वर्ष 2018-19 में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय 25वें भामाशाह सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया गया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उच्च शिक्षा मंत्री भंवर सिंह भाटी व शिक्षा राज्यमंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने सम्मान प्रदान किया। हिन्दुस्तान जिंक के चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर से यह पुरस्कार सीएसआर हेड विशाल अग्रवाल, शिव भगवान, दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्पलेक्स से हेड सीएसआर अभय गौतम, रामपुरा आगुचा खान की ओर से यह पुरस्कार हेड सीएसआर दलपत सिंह चौहान, रूचिका नरेश चावला, जावर माइंस से साइट प्रेसिडेंट बलवंत सिंह राठौड़, सीएसआर हेड अरूणा चीता, नैरूति सिंघवी, शुभम गुप्ता एवं देबारी स्मेल्टर से सीएसआर हेड बुद्धिप्रकाश पुष्करणा ने ग्रहण किया।

'मेस्ट्रो एज 125 की लाँचिंग'

उदयपुर। हीरो मोटो कॉर्प कम्पनी द्वारा हाल ही में निर्मित आधुनिक तकनीकी युक्त मेस्ट्रो एज 125 स्कूटर रॉयल मोटर्स पर एक समारोह में ग्राहकों की मौजूदगी में लॉन्च किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि एडीजे 1 प्रदीप कुमार, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, अताउर्रहमान, हीरो मोटो कॉर्प के क्षेत्रीय प्रबन्धक विपणन सौरभ कुमार, रॉयल मोटर्स के प्रबन्ध निदेशक शेख शब्बीर हुसैन मुस्तफा ने स्कूटर से पर्दा हटाकर इसे लॉन्च किया। सौरभ कुमार ने बताया कि कम्पनी ने देश के पहले मेस्ट्रो एज 125 स्कूटर में फ्यूल इंजेक्शन टेक्नोलॉजी के साथ बाजार में उतारा है। इस स्कूटर में एडवान्स टेक्नोलॉजी, स्टाईल व परफॉरमेन्स का बेहतरीन सम्मिश्रण है। शब्बीर मुस्तफा ने बताया कि इस स्कूटर में कम्पनी ने फ्रंट डिस्क ब्रेक विद आईबीएस है, जो ब्रेकिंग के समय राईडर को स्कूटर को बेहतर कन्ट्रोल देता है। कम्पनी इसमें 5 साल की स्टेण्डर्ड वारंटी व 5 फ्री सर्विसेज दे रही है। समारोह का संचालन रॉयल मोटर्स के महाप्रबन्धक विक्रम ने किया।

राजेन्द्र सेन जिलाध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। सेन समाज, उदयपुर के अध्यक्ष एवं आकाशवाणी के वरिष्ठ उद्घोषक राजेन्द्र सेन को अखिल भारतीय नारायणी धाम प्रबंध एवं विकास महासभा राजस्थान का उदयपुर जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सारना ने यह नियुक्ति की है। महासभा के राष्ट्रीय महासचिव भगवान सहाय व मीडिया प्रभारी शीशराम खास पुरिया ने उनकी नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

जनसंख्या दिवस पर सूक्ष्म पुस्तिका

उदयपुर। सूक्ष्म पुस्तिका के शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने पिछले दिनों विश्व जनसंख्या दिवस पर एक सूक्ष्म पुस्तिका बनाई। 24 पेज की पुस्तिका में जनसंख्या के नियंत्रण के प्रति आम जन में जागरूकता फैलाने व लक्ष्य के बारे में बताया गया है। पुस्तिका की साइज 1.1 इंच की है।

रोटरी हेरिटेज कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। रोटरी क्लब हेरिटेज का पदस्थापना समारोह पिछले दिनों शौर्यगढ़ रिसोर्ट में हुआ। मुख्य अतिथि रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3054 के प्रांतपाल बीना देसाई ने अध्यक्ष जितेन्द्र तलेसरा, सचिव शैलेन्द्र सिंघल, निवर्तमान अध्यक्ष जयेश पारीख, राहुल शाह, हिमांशु चौधरी, अजय सावला, संदीप गुप्ता, आशीष बांठिया, शैलेन्द्र सोमानी, राहुल गुप्ता, डॉ. दीपक शर्मा, दीपक मुखाड़िया, संजीव जोधावत, दीपक गोयल, राहुल भटनागर, प्रतीक नाहर, गजेन्द्र सुथल, डॉ. मनु बंसल, रवीन्द्र पारख को शपथ दिलाई। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रांतपाल आशीष देसाई, यूसीसीआई के अध्यक्ष रमेश सिंघवी, पूर्व प्रांतपाल निर्मल सिंघवी और सहायक प्रांतपाल आशीष बांठिया थे।

पण्ड्या का मनोनयन

जयपुर। राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर के युवा समाजसेवी एवं बाल अधिकार विशेषज्ञ डॉ. शैलेन्द्र पण्ड्या को राजस्थान बाल आयोग में सदस्य मनोनीत किया गया है। विगत 10 वर्षों से बाल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत है वे गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर के निदेशक हैं।

यूसीसीआई में समस्या निवारण शिविर

उदयपुर। उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के अरावली सभागार में 81वें मासिक औद्योगिक एवं व्यावसायिक समस्या निराकरण शिविर का पिछले दिनों आयोजन हुआ। शिविर में जिला उद्योग केन्द्र, रीको, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, यूआईटी, राजस्थान वित्त निगम, फैक्ट्रीज एण्ड बॉयलर्स आदि विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारी उद्यमियों एवं व्यवसायियों की समस्याओं के निराकरण हेतु उपस्थित थे।

प्रारंभ में यूसीसीआई अध्यक्ष रमेश सिंघवी ने स्वागत किया। समस्याओं के प्रस्तुतिकरण में अरावली मिनरल्स के एम. एल. लुणावत, यूनिवर्सल केमिकल्स के कुलवन्त सिंह, रामा फॉस्फेट के के. पी. सुखांताकर, मोना केमिकल्स के महेन्द्र नलवाया, ओकासा केमिकल्स के कौसर अली, प्रतीक हिंगड़, राकेश माहेश्वरी, कोमल कोठारी, रमेश चौधरी, गुडली चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के सचिव ओ. पी. नागदा, होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष भगवान वैष्णव, नरेन्द्र जैन, राकेश चौधरी, के. पी. अग्रवाल, कैलाश जैन, शैलेन्द्र सिंह खमेसरा, अरिहन्त दुग्गड़ आदि प्रमुख थे। शिविर के अंत में उपाध्यक्ष मनीष गलुण्डिया ने अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सेंट मैथ्यूज में हाउस गठन

उदयपुर। सेंट मैथ्यूज विद्यालय में अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने तथा नेतृत्व विकास के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न हाउसेज में विभाजित कर उनके कप्तान–उपकप्तान मनोनीत किए गए। निदेशक श्रीमती ग्लोरीफिलिप तथा प्राचार्य श्री नितिन नाथ ने शुभकामनाएं देते हुए उन्हें उनके दायित्वों से परिचित करवाया।

आईजी व डीसी ने पदभार संभाला

उदयपुर। राज्य सरकार के आदेश पर जुलाई के प्रारम्भिक सप्ताह में उदयपुर में आईपीएस बिनीता ठाकुर ने महानिरीक्षक पुलिस व आईएएस विकास एस. भाले ने संभागीय आयुक्त का पद संभाला। बिनीता ठाकुर ने कहा कि ऑनलाइन ठगी और अपराधों के मामलों की रोकथाम के लिए उपाय करेंगी। महिलाओं और कमजोर वर्ग की सुरक्षा और उन्हें न्याय दिलाना उनकी प्राथमिकताओं में है। संभागीय आयुक्त भाले ने कहा कि उनका विशेष फोकस जनजाति अंचल को शिक्षा और चिकित्सा पर रहेगा।

एनएसयूआई जिला कार्यकारिणी का विस्तार, राव सहित चार उपाध्यक्ष

उदयपुर। नेशनल स्टूडेन्ट यूनियन ऑफ इंडिया(एनएसयूआई) के जिलाध्यक्ष जोगेन्द्र सिंह शक्तावत ने प्रदेश अध्यक्ष अभिमन्यु पूनिया की सहमति से जिला कार्यकारिणी का विस्तार कर राव करणवीर सिंह, आकाश आकाश अस्ताना, हनी जारोली, हेमेन्द्र सिंह राठौड़ को उपाध्यक्ष, पुष्कर प्रजापत, अक्षय उपाध्याय, सुमित चौहान व शिवराज सिंह देवड़ा को महासचिव तथा पीयूष शर्मा, आकाश असावा, हितेष चौहान, नावेद खान व अक्षय तंवर को सचिव मनोनीत किया है। करण सिंह नियुक्ति पर चित्रकूट चौराहे पर कार्यकर्ताओं ने उनका अभिनंदन किया।

आलोक किड्स प्लेनेट की नई शाखा

राजसमन्द। शिक्षा के क्षेत्र में आलोक संस्थान ने एक और कदम आगे बढ़ाया है। तहसील रोड नाथद्वारा में आलोक किड्स प्लेनेट की नवीन शाखा का शुभारम्भ किया गया है। इसका शुभारम्भ संस्थान निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत ने किया। इस अवसर पर अभिभावकों सहित प्रशासक मनोज कुमावत, प्राचार्य ललित गोस्वामी एकेडमिक काउंसलर ध्रुव कुमावत व किड्स प्लेनेट प्रभारी गुंजन माली भी उपस्थित थे।

सीपीएस में अध्याक्षरम अनुष्ठान

उदयपुर। न्यू भूपालपुरा स्थित सेन्ट्रल पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल में पिछले दिनों अध्याक्षरम अनुष्ठान का आयोजन हुआ। नर्सरी में दाखिला लेने वाले नौनिहालों को शुद्ध वातावरण में प्रथम अक्षर लिखाया गया। अलका शर्मा, निदेशक प्रशासन अनिल शर्मा, प्राचार्या पूनम राठौड़, उपाचार्य धीरा सामर, प्रशासक सुनील बाबेल मौजूद थे।

रोटरी उदयपुर का पदस्थापना समारोह

उदयपुर। रोटरी क्लब उदयपुर का वर्ष 2019-20 का पदस्थापना समारोह आलोक स्कूल के व्यास सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि गुणवंत सिंह कोठारी, विशिष्ट अतिथि प्रो. एस. एम. सारंगदेवोत, सहायक प्रांतपाल मनिक नाहर थे। पदस्थापना अधिकारी निर्मल सिंघवी ने अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमावत, सचिव संजय भटनागर, निवर्तमान अध्यक्ष ओ. पी. सहलोत, सुभाष सिंघवी, महेन्द्र डाया, लक्ष्मीकांत वैष्णव, राकेश माहेश्वरी, गजेन्द्र जोधावत, सज्जन सेठ, बी एन बापना, यू एस चौहान, डॉ. एन. के. धींग, विवेक व्यास, हेमंत मेहता, अजय अग्रवाल को पद की शपथ दिलाई। कुमावत ने वार्षिक योजना प्रस्तुत की। सुशील बांठिया ने अतिथियों से क्लब बुलेटिन एवं कॉफी टेबल बुक का विमोचन कराया।

देवपुरा को 'शताब्दी सम्मान'

नाथद्वारा। साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्यामप्रकाश देवपुरा को पिछले दिनों पटना में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित समारोह में 'साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान' प्रदान किया गया। साहित्य मंडल के पीयूष देवपुरा ने बताया कि उन्हें यह सम्मान हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य व बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष अनिल सुलभ ने प्रदान किया। त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक नंदकिशोर पाण्डेय थे।

एनएसएस में शाखा डाकघर

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान, बड़ी में पिछले दिनों शाखा डाकघर का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि राजस्थान परिमंडल जयपुर के चीफ पोस्टमास्टर जनरल रामभरोसा, विशिष्ट अतिथि प्रवर अधीक्षक उदयपुर मंडल जेएस गुर्जर, संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव व अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने उद्घाटन किया। शाखा डाकघर से देशभर से आने वाले दिव्यांगों को सुविधा मिलेगी। संचालन महिम जैन ने व धन्यवाद ज्ञापन दीपक बेनारिया ने किया।

डॉ. गुप्ता ने दिए तनाव से बचने के टिप्स

उदयपुर। अरावली फाउंडेशन और अरावली हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता ने महिला समृद्धि बैंक और लायंस क्लब उदयपुर की महिलाओं को तनाव से दूर रहने के टिप्स दिए। संयुक्त और एकल परिवार के बच्चों में हो रहे सामाजिक परिवर्तन से बढ़ते तनाव और उससे बचने की जानकारी दी। दिनचर्या में हो रहे आधुनिक परिवर्तन के नुकसानों के बारे में बताया। दिनचर्या में परिवर्तन के तरीके बताए। डॉ. किरण जैन ने विचार रखे।

शोक समाचार

शीला दीक्षित का निधन

उदयपुर। नई दिल्ली कांग्रेस की दिग्गज नेता और दिल्ली की तीन बार की मुख्यमंत्री रही श्रीमती शीला दीक्षित का 20 जुलाई को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 81 वर्ष की थीं। शीला जी को आधुनिक दिल्ली की शिल्पकार के रूप में हमेशा याद किया जाएगा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, स्पीकर ओम बिरला, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। शीला दीक्षित के राजनैतिक गुरु उनके ससुर उमाशंकर दीक्षित थे। जो कांग्रेस के दिग्गज नेता एवं नेहरू गांधी परिवार के बहुत नजदीक थे।

उदयपुर। जे. के. सीमेन्ट लि. के प्रेसीडेंट श्री एम. पी. रावल का 6 जुलाई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे कर्मठ, दूरदर्शी एवं मृदु व्यवहार के लिए जाने जाते थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमति नलिनी रावल, पुत्र धवल, पुत्री हेतल आचार्य तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर जे. के. सीमेंट के श्रमिकों, कर्मचारियों व अधिकारियों ने गहरा दुःख प्रकट किया है।

उदयपुर। विद्या भवन सोसयटी के पूर्व संगठन सचिव श्री देवकृष्ण जी जोशी का 8 जुलाई को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दर बाई, पुत्र डॉ. चन्द्रप्रकाश व दिनेशचन्द्र, पुत्रियां शकुन्तला देवी व अलकनन्दा बागोरा तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती कमला देवी चपलोत धर्मपत्नी श्री जीतमल चपलोत का 14 जुलाई को असामयिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र निशीत, पुत्रियां हेमलता मेहता, शशि नाहर व निशा शाह तथा पौत्र, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

Happy Independence Day

K. N. Khaitan

Sanjay Khaitan

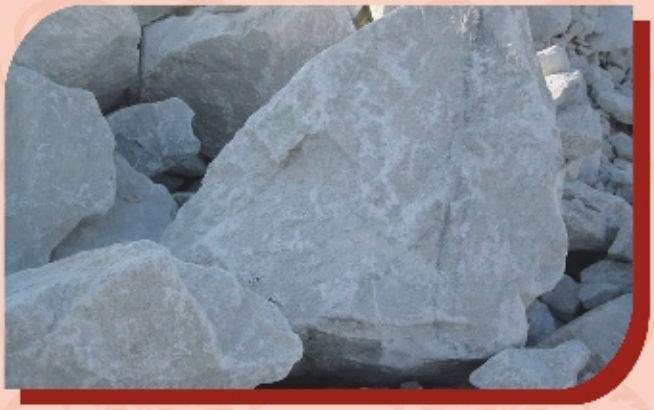

KHAITAN INDUSTRIES

Mine Owner, Processor & Supplier of Soapstone (Talc) & Dolomite Powder

Head Office : 5, Shivaji Nagar, Udaipur (Raj.)
Phone : 0294-2484669, 9414159067

Mines & Factory: Post Kherwara, Dist. Udaipur (Raj.)
Marketing Office : 6 Vishal Estate, Highway, Amraiwadi, Ahmedabad (Guj.)

दी उदयपुर अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.
THE UDAIPUR URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

Head Office: 9C-A Madhuban, 1st Floor, Udaipur, Rajasthan – 313 004 ☎ 0294-2560783

A Leading Urban Co-operative Bank of Rajasthan

Financial Position as on 31st March 2019

Deposits – ₹ 66020.56 Lacs Loans & Advances – ₹31416.53 Lacs Profit before Tax-₹1281.93 Lacs

Core Banking System (CBS) & Lockers available in all branches

Facilities Available at all Branches

- **RTGS-NEFT**
- NACH Facility
- **RuPay Debit Card**
- **ATMs**
- **SMS Facility**
- **Aadhar Based Payment Facility**
- PM Jeevan Jyoti Beema Yojna
- **PM Jeevan Suraksha Beema Yojna**
- **Mobile Banking**
- IMPS

Attractive Loan Schemes

- **UUCB Trade**
- UUCB Business Development
- **UUCB Housing Loan**
- UUCB Mortgage Loan
- **UUCB Vehicle Loan**
- UUCB Vidhya-Education Loan

Cash Deposit & Passbook Printing Kiosk Facility at selected branches

Our Branches

Pannadhay Marg	☎0294-2421237	Krishi Upaj Mandi	☎ 0294-2481490
Dhanmandi	☎0294-2422276	Sukher Ind. Area	☎ 0294-2442708
Bada Bazar	☎0294-2420429	Ambamata Scheme	☎ 0294-2430053
Fatehpura	☎0294-2452780	Pratapnagar	☎ 0294-2490127
Hiranmagri	☎0294-2460893	Fatehnagar	☎ 02955-220316
Madhuban	☎0294-2423542	Salumber	☎ 02906-233250
		Rajsamand	☎02952-224022

website: www.uucbudaipur.com

Banking, You can bank upon.

Qutbuddin Shaikh
Chief Executive Officer

Fida Hussain Safy
Chairman

RSWM Ltd. (Fabric Division), an LNJ Bhilwara Group Company, LNJ Nagar, Mordi, District - Banswara - 327001 Rajasthan,INDIA
Tel. No. +91 - 2961- 231230, 231630, 231316 Fax. No. +91 - 2961 - 231250, Website: www.mayurfabrics.in

Rajasthan State Mines and Minerals Limited

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505
GSTIN 08AAACR7857H1Z0

Mining Prosperity from Beneath the Surface

OUR PRODUCTS

Rock Phosphate

- + 30% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.5% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.54% P_2O_5 Beneficiated Concentrate (200 mesh size)
- + 18% P_2O_5 Powder (RAJPHOS) An Organic Direct Application Fertilizer

Lignite

- Lignite with calorific value of 2800-3200 Kcal/Kg.
- GOI has allotted Lignite blocks having reserve of more than 400 million tons

Gypsum

- Run Of Mine (ROM) Gypsum-used in Cement industries and land reclamation
- Run of Mine (ROM) Selenite- used for manufacture of Plaster of Paris & Ceramics

Limestone

- +95% $CaCO_3$ Low Silica<1.5%, Steel Melting Shop (SMS) grade Limestone

Power

- 106.3 MW capacity Wind Energy Project in operation, with generating capacity of 1650 Lac KWH (units) grid quality clean power per year.
- Projects registered under CDM, UNFCCC (Kyoto Protocol) for CERs earnings.
- 5 MW Solar project also in operation at Gajner, Bikaner

OUR STRENGTHS

- Consolidating leadership in Fertilizer, Steel, Cement, and Power Sector.
- One of the Biggest Revenue Contributing PSU to state exchequer.
- Only Producer of SMS grade Limestone & largest producer of natural Gypsum & High Grade Rock Phosphate in the country.
- Achieved unprecedented growth in Productivity, Turnover, Revenue and Commanding Share in Industrial Mineral Sector of India.
- Established rare distinction of being the first PSU in India to earn foreign exchange by successfully trading Carbon Credit in International Market.
- Taking care for society under CSR. Contribution for Health & Medical, Education, Water Supply, Infrastructure and Community Development, Environment Protection and Plantation in Project Districts.

OUR PROJECTS

Petroleum & Natural Gas

- Wholly owned subsidiary company formed in the name of Rajasthan State Petroleum Corporation Limited for carrying out activities in Petroleum & Natural Gas Sector in Rajasthan.
- A joint venture Company in the name of Rajasthan State Gas Limited with joint venture partner GAIL Gas Ltd has been incorporated for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

Venture to mine out Lignite & Sand

- A joint venture company M/s Barmer Lignite Mining Company Limited has been incorporated with joint venture partner Rajwest Power Limited wherein RSMML hold 51% equity.
- A newly formed strategic business unit has been established to explore business opportunities in sand.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com